

आर.एन.आई. पंजीयन क्र.
CHHHIN/2017/72506

रायपुर से प्रकाशित
हिंदी मासिक पत्रिका

किलोल

वर्ष 6 अंक 2, फरवरी 2022

<http://www.kilol.co.in>



म.नं. 580/1, गली न. 17 बी,
दुर्गा चौक, आदर्श नगर, मोवा, रायपुर
ईमेल: wings2flysociety@gmail.com

मूल्य
खुदरा - 80/-
वार्षिक - 720/-
आजीवन - 10000/-

संपादक- डॉ. आलोक शुक्ला

सह-संपादक

डॉ. एम सुधीश, डॉ. सुधीर श्रीवास्तव, प्रीति सिंह, ताराचंद जायसवाल, बलदाऊ राम साहू, नीलेश वर्मा,
धारा यादव, डॉ. शिप्रा बेग, रीता मंडल, पुर्णेश डडसेना, राज्यश्री साहू

ई-पत्रिका, ले आउट, आवरण पृष्ठ

पुनीत मंगल, कुन्दन लाल साहू

प्यारे बच्चो एवं मेरे प्रिय शिक्षको,

नए वर्ष का दूसरा माह आ गया और हमारे बहुत से स्कूलों में लॉकडाउन लग गया. पढ़ाई रफ्तार में आ ही रही थी कि फिर ब्रेक लग गया. लेकिन इन सबसे घबराने की आवश्यकता नहीं है. हमें रुकना नहीं है. हम सबको कोरोना प्रोटोकॉल का कड़ाई से पालन करना होगा. पूरी सावधानी बरतनी होगी. बच्चो, तुम पढ़ाई से बिलकुल भी विमुख नहीं होना. मेरे शिक्षक साथियो, आप भी बच्चों का सीखना जारी रखने हेतु कुछ न कुछ प्रयास करते रहें. एक बार आदत छूट जाए तो वापस पटरी पर आने में समय लगता है. लंबा गैप होने पर सीखने का भी बहुत अधिक नुकसान होता है.

माह फरवरी में दिनांक 21 को अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस है. आप सभी से अनुरोध है कि छोटे बच्चों को उनकी कक्षाओं में उनकी अपनी भाषा में सिखाने का प्रयास करें. बच्चों को उनकी अपनी भाषा में सिखाने से उसका एक अलग प्रभाव पड़ता है. इसे कक्षा में बच्चों के साथ प्रयोग करके स्वयं अवश्य महसूस करें. कक्षा में बच्चों की भाषा का उपयोग करने से वे आपके और करीब आ सकेंगे.

आपका
आलोक शुक्ला

प्रकाशक विंग्स टू फ्लाई सोसाइटी, मुद्रक सलूजा ग्राफिक्स द्वारा म. न. 580/1, गली न. 17बी, आदर्श नगर,
मोवा, रायपुर से प्रकाशित व सलूजा ग्राफिक्स, दुबे कॉलोनी मोवा, रायपुर में मुद्रित.

संपादक
डॉ. आलोक शुक्ला

अनुक्रमणिका

दादा जी.....	7
सिंघाड़ा	8
गुलाब.....	9
पंचतंत्र की कथाएँ.....	10
संत शिरोमणि.....	12
अधूरी कहानी पूरी करो	13
संतोष कुमार कौशिक द्वारा पूरी की गई कहानी	14
योगेश्वरी तंबोली द्वारा पूरी की गई कहानी	14
मनोज कुमार पाटनवार द्वारा पूरी की गई कहानी	15
खुशी नैनवानी द्वारा पूरी की गई कहानी	15
अगले अंक के लिए अधूरी कहानी	16
नए वर्ष में	17
विश्वविख्यात साहित्यकार विलियम शेक्सपियर.....	18
संयम	20
प्रभु.....	21
जीवन का प्रवेश द्वार	22
तिरंगा.....	25
सफर	26
देखो ठंडी आयी	27
हमारे प्रेरणा स्रोत	28
आओ हम पेड़ लगाएं	30
भीमराव आम्बेडकर.....	31
पंख	33
सुबह हुई.....	34
रंग.....	39

जादुई पेंसिल	40
चिड़िया	41
गणतंत्र दिवस	42
वर्णमाला	43
अंक	45
गिनती	46
आ जाओ न दादा	48
मोबाइल	49
अपना परिवार	50
गाजर	51
लाल-लाल निकला गोला	52
नव वर्ष तुम्हारा अभिनंदन	53
बाल पहेलियाँ	55
लोरी	56
संयुक्त परिवार	57
नया वर्ष	59
बाल हाइकु	60
छुक छुक करती रेल	62
देश हमारा	63
मीठी की नासमझी	64
नये साल में	65
रोबोट	66
मौसम के रंग	67
बेटी की पढ़ाई का महत्व	68
मेरा गाँव	69
हँसते रहे	71
जल संचय ही जीवन संचय	72

बाल पहेलियाँ.....	73
मोर छत्तीसगढ़ महतारी	74
जीवन की सीख	76
रंग तिरंगा	78
देश हमारा	79
वंदेमातरम	80
सामुदायिक सेवा.....	81
ठंडी मौसम	83
मैं पेड़ होता.....	84
ठंड.....	85
नन्हीं चींटी	86
तीसरी लहर	87
मैं फूल हूँ.....	88
आओ मिलकर संकल्प करें	89
मन के हारे हार और मन के जीते जीत	90
फिर बच्चे बन जाएँ.....	91
स्वस्थ तन-स्वस्थ मन	93
सहारा	94
डोकरी दाई के जोरन	96
मेरा स्कूल मेरा भविष्य	98
आम फलों का राजा है	99
मेला.....	100
शरारतें बचपन की.....	101
आलू भालू.....	102
वक्त की गाड़ी.....	103
जीने की कला	104
बिजली दीदी.....	105

राह आसां बनाता चलूँ	106
आसमां छूने का मन करता है	107
हाँ शरद ऋतु आई है	108
कोरोना भाग जायेगा	110
पिंक ब्रश	111
जल	112
सपने	113
माँ-बेटी का रिश्ता प्यारा	114
मनमोहक प्यारी बगिया	116
मूर्तिकार	117
कोरोना के पीरा	118
तो क्या हुआ?	120
प्रेरणा गीत	121
शरद ऋतु	122
आलसी कऊंआ	Error! Bookmark not defined.
हिन्दी	124
शीत ऋतु और बरसात	125
मेरी बगिया	126
विश्व पुस्तक दिवस	127
नीम का फूल	129
चलो चांद पर मम्मी	130
चूहों का प्रण	132
डाक्टर गधा लाल	133
जीवन की सीख	135
युवाओं के प्रेरणास्रोत	137
बागों में बहार है	139
बिल्ली की सूझबूझ	141

बेसुध राहगीर	143
यात्रा	144
जागो देश के युवाओं	145
वसंत	147
हमारे बाबा.....	148
भारतीय नववर्ष	150
चलो मातृ पितृ पूजन दिवस मनाएं	152
कोरोना की तीसरी लहर	154
मकर संक्रांति और मेला	155
जल	156
माँ मुझको पंख लगा दे.....	157
अच्छा लगता खेल	158
कोरोना	159
उसने सीख लिया	161
फूलों सा मुस्काना	163
चित्र देख कर कहानी लिखो	164
मनोज कुमार पाटनवार द्वारा भेजी गई कहानी	164
योगेश्वरी तम्बोली द्वारा भेजी गई कहानी	165
संतोष कुमार कौशिक द्वारा भेजी गई कहानी	165
अगले अंक की कहानी हेतु चित्र	167
भाखा जनऊला.....	168

दादा जी

रचनाकार- बलदाऊ राम साहू

बार-बार बस समझाते हैं दादा जी
गीत पुराने ही गाते हैं दादा जी.

गीता पढ़ते और बाँचते रामायण
कथा-कहानी बतलाते हैं दादा जी.

दादी जी से करते हैं हँसी-ठिठोली
हम सबका मन बहलाते हैं दादा जी.

लेकर खजाना अनुभवों का चलते हैं
जीवन की राह सुझाते हैं दादा जी.

उनसे अपना बड़े नेह का रिश्ता है
हँसते हैं और हँसाते हैं दादा जी.

कड़वे बोल कभी न बोलते हैं भाई
राम नाम पर इतराते हैं दादा जी.

बरस बात तुम उलटी-सुलटी मत कहना
बातों में ही तन जाते हैं दादा जी.



सिंघाड़ा

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र

ठण्डक लेकर आया जाड़ा,
मचा रहा है धूम सिंघाड़ा.

छोटा, गोल, तिकोना सा है,
कोई लाल है, कोई हरा.



ताजा है, तालाब से आया,
हल्का मीठा स्वाद है लाया.

कोमल छिलका स्वयं उतारो,
देखो! व्यर्थ न पढ़ो पहाड़ा.

पानी में उगने वाला फल,
तीन माह भर खालो तुम.

कच्चा होता अधिक मुलायम,
पका कठोर, न छिल पायेगा.

भूनो या उबाल कर खाओ,
सर्दी का ले जीत अखाड़ा.

सुखा सिंघाड़ा, पीस कर,
बन जाता है पोषक आटा.

कच्चे का अचार माँ बनाती,
हम सबने अँगुली से चाटा.

तन के लिए स्वास्थ्यवर्द्धक,
सब रोगों को खूब पछाड़ा.
मचा रहा है धूम सिंघाड़ा.

गुलाब

रचनाकार- डॉ. माधवी बोरसे



गुलाब का फूल, अति सुंदर और सुगंधित,
करते हैं हम, परमेश्वर के चरणों में अर्पित.
चलो महका दे जहां, गुलाब के फूल के जैसे,
सुंदरता और कोमलता मैं प्रसिद्ध हो ऐसे.

कभी बने शरबत, औषधि और कभी गुलकंद,
स्वयं की रक्षा करने को, हममें कांटे भी हो चंद.
सजावट हो या भोजन, इसके उपयोग है कहीं,
देखो इसकी आकृति, कुछ हमसे है कह रही.

इसे देखते ही, हमारे चेहरे पर आए मुस्कान,
इससे बढ़कर क्या हो, किसी का सम्मान.
हमें देख कर भी, कई चेहरे मुस्कुराए,
चलो सभी को, नम्र हृदय से अपनाएं.

छोटा सा पौधा, हम सब अपने घर में लगाए,
क्योंकि हर बगीचे की, रौनक ये कहलाए.
कितना लाभदायक और उपयोगी है यह,
हमें जीने का, सलीका सिखलाए.

पंचतंत्र की कथाएँ

रंगा सियार



वर्षा ऋतु का समय था. ऐसे में एक वन में एक सियार भीगने से बचने के लिए एक वृक्ष के नीचे दुबका बैठा था. वर्षा के साथ-साथ आंधी भी चल रही थी. एकाएक वह वृक्ष उखड़कर भूमि पर गिर पड़ा. सियार ने भागने का प्रयत्न किया किंतु वह वृक्ष की एक शाखा के नीचे आ ही गया. बड़ी कठिनाई से उसने अपने शरीर को किसी प्रकार बाहर निकाला और धीरे-धीरे घिसटते हुए अपनी मांद तक पहुँचा.

कई दिनों तक वह भूखा प्यासा अपनी मांद में ही पड़ रहा. किंतु जब उससे रहा नहीं गया तो वह भोजन की आशा से बाहर निकला. थोड़ी ही दूर पर एक खरगोश उसे दिखाई पड़ा. वह धीरे-धीरे उसकी ओर बढ़ा. खरगोश चौकन्ना था. उसने सियार को देख लिया और तेजी से भाग खड़ा हुआ. सियार ने उसका पीछा करना चाहा किंतु उसके शरीर में इतना बल नहीं था कि वह खरगोश की गति से दौड़ पाता.

दिन भर प्रयत्न करने पर भी उसे भोजन के रूप में कुछ भी प्राप्त न हो सका. शाम हो गई. सियार ने सोचा, वन के बाहर निकल कर पास की बस्ती में चला जाए. किसी घर से कोई मुर्गी या छोटी बकरी हाथ लग जाए तो प्राण बच जाएँ. ऐसा सोचते हुए वह बलहीन सियार किसी प्रकार पास की बस्ती तक पहुँच ही गया.

वह अपना भोजन ढूँढ पाता उसके पहले ही बस्ती के कुत्तों ने उसे देख लिया. भौंकते हुए उसके पीछे दौड़ पड़े. मरता क्या न करता. अपने प्राण हथेली पर लिए वह अभाग्य सियार इधर-उधर दौड़ता रहा. इसी प्रयत्न में वह एक दीवार लांघ कर एक धोबी के घर के आँगन में आ गया. आँगन में ढोल के आकार के बड़े-बड़े बर्तन रखे हुए थे. वह अपने प्राण बचाने के लिए एक ऐसे ही बर्तन में कूद पड़ा. पर यह क्या इसमें तो पानी भरा हुआ था. सियार अपनी साँस रोके किसी तरह पानी में डूबा रहा. कुत्ते उसे ढूँढते हुए दूर चले गए. वह धीरे से उस बर्तन से बाहर निकला और वापस वन की ओर भाग गया. किसी प्रकार अपने मांद तक पहुँचा और भूखा ही सो गया.

सुबह हुई. वह मांद से बाहर निकल कर धूप में आया. एकाएक उसकी दृष्टि अपने शरीर पर पड़ी. वह चकित हो गया. उसका शरीर गहरे नीले रंग का हो गया था. उसे रात्रि की घटना का स्मरण हो आया. उसे समझ में आ गया कि बड़े बर्तन में धोबी के कपड़े रंगने के लिए रंग घोल रखा था. अब क्या किया जाए ? उसने सोचा किसी सरोवर में जाकर अपने शरीर को धो लिया जाए. यह विचार कर वह सरोवर की ओर चल पड़ा.

उसने मार्ग में देखा कि जो भी जंतु उसे देखता वह भयभीत होकर दूर भाग जाता. सभी प्राणी उसे देखकर चकित थे. ऐसे रंग के जीव को वन में आज तक किसी ने न देखा था. यह समाचार वन में शीघ्र ही फैल गया कि एक नया जीव इस वन में आ गया है. धीरे-धीरे वहाँ अनेक छोटे-बड़े पशु पक्षी एकत्र हो गए. सभी के मन में जिज्ञासा थी और सभी भयभीत भी थे.

सियार के मन में एक दुष्टतापूर्ण विचार ने जन्म लिया. उसने कहा, "ए वन के वासियो! सुनो, मुझे देखकर इस प्रकार भयभीत न हो. तुम प्राणियों का कोई राजा नहीं है. कोई तुम्हारी देखभाल नहीं करता. कोई तुम्हारा न्याय नहीं करता. इसीलिए स्वयं ईश्वर ने मुझे तुम्हारा राजा नियुक्त कर धरती पर भेजा है."

यह सुनकर सबसे शक्तिशाली और अनुभवी हाथी ने विनम्रता पूर्वक पूछा, "हे महाराज! हमें क्या आज्ञा है?"

"तुम सब मेरी सेवा करो, मेरे निवास और भोजन का उत्तम प्रबंध करो. इसके लिए मैं आपदाओं में तुम सब की रक्षा करूंगा. " सियार ने कहा.

तब से सारे प्राणी उसकी सेवा-सत्कार में लग गए. धीरे-धीरे वह रंगा सियार खूब स्वस्थ और मोटा ताजा हो गया. ऐसे ही आनंदपूर्वक उसके दिन बीतने लगे.

किंतु नीति कहती है कि छल-छद्म या बनावट की बातें अधिक समय तक छुपाई नहीं जा सकतीं. एक रात आकाश पर पूर्णिमा का चंद्रमा अपनी आभा बिखेर रहा था. वायु धीमे-धीमे चल रही थी. बहुत ही सुखमय वातावरण था. कहीं दूर सियारों का एक झुंड मस्ती में हुआ, हुआ गा रहा था.

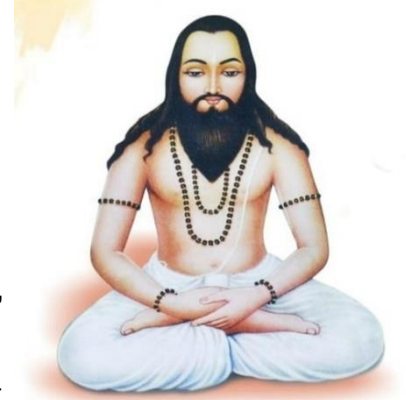
यह ध्वनि सुन सियार आनंद में डूब गया. उसकी आँखें बंद हो गईं और उसे पता ही नहीं चला कि कब उसने भी गाना आरंभ कर दिया.

अब क्या था, वन में सभी जीवों ने उसकी वास्तविकता जान ली और उसकी ऐसी दुर्गति की कि बस पूछो मत.

संत शिरोमणि

रचनाकार- अशोक कुमार यादव

छत्तीसगढ़ के निर्गुण गुरु, बाबा संत शिरोमणि,
सतनाम पंथ के प्रवर्तक, जन चेतना के अग्रणी.
गिरौदपुरी के महाराजा, दक्षिण कोसल के स्वामी,
सत्यता की परचम लहराए, सत्य साधक सतनामी.



सांसारिक जीवन देखकर, अंतःकरण में हुई विरक्ति,
औंरा-धौंरा तरु तर तप किए, अगुण ब्रह्म की भक्ति.
मानव में था अति जातिवाद, छुआछूत और भेदभाव,
मानव को मानव ना माने, जन-जन में था अलगाव.

हिंसा और पाप का तांडव, मर्त्य-ही-मर्त्य की दुश्मन,
सदाशयता ही ज्ञान अमृत, असत्य की किया शमन.
घासीदास की वाणी सुनों, मूर्तियों की पूजा है वर्जित,
पशुओं से भी प्रेम करो, तू मरा नहीं अभी है जीवित.

जन जागृत किए उपदेश से, सत्य की राह है अविचल,
भवसागर से जीव होगा पार, जप, ध्यान कर निश्छल.
नैतिकता को कर धारण, मानव-मानव है एक समान,
ऊंच-नीच की बात कह कर, प्रभु की कर रहा अपमान.

सारा जग है परमपिता की, हंसा एक दिन उड़ जाएगा,
मिट्टी की काया और माया, मिट्टी में ही मिल जाएगा.
मैं हूँ सदा इस पावन धरा में, सत्य प्रतीक है जैत स्तंभ,
श्वेत ध्वजा लहराता रहेगा, दूर करेगा अज्ञान और दंभ.

अधूरी कहानी पूरी करो

पिछले अंक में हमने आपको यह अधूरी कहानी पूरी करने के लिये दी थी—

रोहन का टॉमी



आखिर वही हुआ जिसका रोहन को डर था. बात यह थी कि रोहन की बहुत दिनों से कुत्ते का एक पिल्ला पालने की इच्छा थी, पर उसके पापा इसके लिए तैयार नहीं थे.

पापा को किसी भी तरह का जानवर पालने से चिढ़ थी. रोहन अपने खाली समय में साथ खेलने के लिए एक पिल्ला पालना चाहता था. हुआ यह कि एक दिन स्कूल से घर आते समय रास्ते में रोहन को एक छोटा सा पिल्ला मिल गया. प्यारा छोटा सा पिल्ला देखकर रोहन उसके साथ खेलने लगा और फिर वह पिल्ला रोहन के साथ-साथ घर तक आ गया.

रोहन ने पापा की नजरों से बचाने के लिए पिल्ले को छिपाकर रख लिया, उसने पिल्ले का नाम टॉमी रख दिया था. पर मम्मी से वह टॉमी को छिपा नहीं पाया.

मम्मी ने रोहन की इच्छा जानकर उसे कुछ नहीं कहा और टॉमी को घर में रखने की बात मान ली. पर अब दोनों की चिन्ता यह थी कि पापा को टॉमी के बारे में कैसे बताएँ और उन्हें कैसे मनाएँ.

एक सप्ताह का समय बीत गया. पापा को टॉमी के बारे में पता नहीं चला. पर रविवार को पापा के ऑफिस की भी छुट्टी थी और वे घर पर ही थे. पापा ने रोहन को टॉमी के साथ खेलते देख लिया और उनका मूड बिगड़ गया.

सोमवार को सुबह ऑफिस जाने के पहले पापा, मम्मी से कुछ बात कर रहे थे. रोहन को लगा कि पापा शायद टॉमी को घर से निकालने की बात कह रहे होंगे. रोहन ने छिपकर सुनने की कोशिश की लेकिन वह पूरी बात समझ नहीं सका. पर उसे लगा कि पापा नाराज हो रहे थे और मम्मी उन्हें समझाने की कोशिश कर रही थीं.

इस कहानी को पूरी कर हमें जो कहानियाँ प्राप्त हुई उन्हें हम प्रदर्शित कर रहे हैं.

संतोष कुमार कौशिक द्वारा पूरी की गई कहानी

रोहन के पापा ऑफिस चले गए. मम्मी ने रोहन को बुलाकर समझाया कि बेटा, तुम्हारे पापा टॉमी की वजह से नाराज हैं, वह नहीं चाहते कि टॉमी हमारे घर में रहे. रोहन ने कहा- ठीक है मम्मी, टॉमी को रखने के लिए पापा तैयार नहीं हैं तो मैं उसे जहाँ से लाया हूँ कल वहीं छोड़ दूंगा. पर मैं आज के लिए टॉमी को रखना चाहता हूँ और उसके साथ खेलना चाहता हूँ.

मम्मी बोलीं कि ठीक है बेटा, तुम्हारे पापा को मैं समझा दूंगी. लेकिन कल तुम्हें टॉमी को छोड़ना ही होगा.

पापा शाम को घर आए तो रोहन को टॉमी के साथ खेलता देखकर नाराज हो गए. रोहन की मम्मी ने उन्हें समझा दिया कि आज रोहन को खेलने दीजिए. कल वह उसे जहाँ से लाया है वहीं छोड़ देगा.

रात्रि का भोजन करने के पश्चात सभी सोने चले गए. मध्यरात्रि को अचानक टॉमी जोर-जोर से भौंकने लगा. उसकी आवाज सुनकर सभी की नींद खुल गई.

जाकर देखा तो कोई व्यक्ति रोहन को उठाकर घर से बाहर की ओर जा रहा था. दौड़कर उसका पीछा किया तो रोहन को छोड़कर वह व्यक्ति भाग गया.

घर वाले समझ गए कि यह एक बच्चा चोर है जो रोहन को ले जा रहा था. पापा ने रोहन को गले लगा लिया और बोले -बेटा टॉमी के वजह से आज तुम सुरक्षित बच गए. आज टॉमी नहीं होता तो न जाने क्या हो जाता? अब हम टॉमी को घर में ही रखेंगे. बाहर छोड़ने की जरूरत नहीं है. उसने हमारे रोहन की रक्षा की है इसलिए वह हमारे परिवार के सदस्य की तरह घर में ही रहेगा. पापा की बात सुनकर रोहन खुश हो गया. टॉमी के पास जाकर उसे गले लगाते हुए थैंक्यू टॉमी कहा. टॉमी के प्रति रोहन का प्यार देख कर सब खुश हो गए.

योगेश्वरी तंबोली द्वारा पूरी की गई कहानी

रोहन को लगा कि पापा टॉमी को घर पर रखने के लिए तैयार नहीं हैं. यह सोचकर रोहन स्कूल जाते समय टॉमी को साथ लेकर चला गया और जहाँ से उसे लेकर लाया था उसे वहीं छोड़ दिया.

जब वह स्कूल से वापस आया तो उसका मुँह लटका हुआ था और वह बहुत उदास था.

माँ ने पूछा क्या हुआ रोहन, तुम्हारा टॉमी कहाँ है?

रोहन माँ से लिपटकर रोने लगा और कहा- मैंने उसे सड़क पर छोड़ दिया है तब माँ ने बताया देखो मैंने एवं तुम्हारे पापा ने मिलकर तुम्हारे टॉमी के लिए यह डॉग हाउस बनवाया है जहाँ कई छोटे-छोटे पिल्लों को रख सकते हैं. रोहन को यह सुनकर भी विश्वास नहीं हुआ, लेकिन जब माँ रोहन को डॉग हाउस के पास ले गई तो रोहन का टॉमी उस डॉग हाउस में उछल कूद कर रहा था. यह देखकर रोहन बहुत खुश हो गया और खुशी खुशी टॉमी के साथ खेलने लगा तभी वहाँ पापा भी आ गए और वे रोहन को समझाने लगे कि सभी का एक घर होता है जहाँ पर वह अपने आप को सुरक्षित महसूस करते हैं इसलिए मैंने तुम्हारे टॉमी के लिए यह डॉग हाउस बनवाया है. यहाँ आकर तुम इसके साथ खेल सकते हो यह सुनकर रोहन ने अपने मम्मी पापा को बहुत-बहुत धन्यवाद दिया.

मनोज कुमार पाटनवार द्वारा पूरी की गई कहानी

मम्मी के समझाने से पापा नहीं माने और अपनी योजना के मुताबिक रात में रोहन के सोने का इंतजार करने लगे. जैसे ही रात 9:00 बजे रोहन नींद में चूर होकर सोने लगा, तभी पापा टॉमी को लेकर चौराहे पर छोड़ आये तथा दरवाजा बंद कर दिया. किंतु टॉमी फिर भी रात में आकर दरवाजे के बाहर कोने में बैठा रहा. उसी रात दो चोर, चोरी करने के मकसद से रोहन के घर की खिड़की तोड़ रहे थे, तभी टॉमी जोर-जोर से भौंकने लगा और लगातार भौंकते रहा, जिससे रोहन के पापा-मम्मी दोनों भौंकने की आवाज़ सुनकर उठ गए और चोर पकड़े गए.

रोहन के पापा, टॉमी से बहुत खुश हुए. उसके भौंकने की वजह से ही घर में चोरी होने से बच गया और पापा टॉमी को घर के अंदर ले आए. रोहन को कुछ पता ही नहीं चला. सुबह टॉमी को रोहन के साथ पापा भी खूब प्यार करने लगे.

इस तरह सभी खुशी-खुशी रहने लगे.

खुशी नैनवानी द्वारा पूरी की गई कहानी

रोहन को लगा कि पापा टॉमी को घर में देखकर नाराज हो रहे हैं और मम्मी उन्हें समझा रही है. लेकिन बात कुछ अलग ही थी. पापा ने जब रोहन को टॉमी के साथ खेलते देखा तो उन्हें जानवरों के प्रति सहानुभूति, लगाव का भाव रोहन में नजर आया जो कि इस उम्र में होना रोहन के व्यक्तित्व को आगे जाकर निखारेगा एवं रोहन में प्रत्येक व्यक्ति, जानवरों के लिए सहानुभूति एवं सौहाद्रता का गुण उत्पन्न करेगा. रोहन के पापा ने मम्मी को समझाया कि टॉमी के साफ-सफाई का ध्यान रखा जाए. एक सही जगह पर उसे रखा जाए एवं वेटेनरी डॉक्टर से उसका टीकाकरण कराया जाए. ताकि रोहन एवं परिवार के अन्य सदस्य भी सुरक्षित रहे.

यह बातें सुनकर मम्मी भी बहुत खुश हुई और जब रोहन को बताया, तो रोहन भी बहुत खुश हुआ और उन्होंने तुरंत वेटेनरी डॉक्टर से जाकर उसका टीकाकरण कराया एवं उसके साफ-सफाई का ध्यान रखने का वादा किया. अब रोहन बहुत खुश था कि उसे टॉमी मिल गया था.

अगले अंक के लिए अधूरी कहानी

घायल बछड़ा



आज चित्रा जब सुबह-सुबह घर के दरवाजे पर आई तो वहाँ घायल पड़े बछड़े को देखकर बहुत दुखी हुई.

चित्रा एक आठ वर्षीय लड़की है. प्रतिदिन यह छोटा बछड़ा अपनी माँ के साथ चित्रा के घर आया करता था. चित्रा की माँ गाय को रोटी देतीं और चित्रा के हाथों से बछड़े को रोटी दिलवाती थीं. चित्रा पहले तो बछड़े के पास आने से डरा करती, पर धीरे-धीरे उसका डर समाप्त हो गया. अब वह उस बछड़े से बहुत हिलमिल गई थी और उसके साथ खेला करती थी.

लेकिन आज सुबह जब चित्रा ने बाहर आकर देखा तो दरवाजे के पास ही बछड़ा अकेला घायल पड़ा था, उसके पैरों में चोट लगी थी और उसके चेहरे से ही लग रहा था कि वह बहुत दर्द का अनुभव कर रहा था.

बछड़े का कष्ट देखकर चित्रा बहुत दुखी हुई, उसकी आँखों में आँसू आ गए और वहीं से पुकारकर उसने अपनी माँ को बुला लिया. चित्रा माँ से कहने लगी कि घायल बछड़े को जल्दी से डाक्टर के पास ले चलो, उसे बहुत दर्द हो रहा है.

इसके आगे क्या हुआ होगा? आप अपनी कल्पना से इस कहानी को पूरा कीजिए और इस माह की पंद्रह तारीख तक हमें kilolmagazine@gmail.com पर भेज दीजिए.

चुनी गई कहानी हम किलोल के अगले अंक में प्रकाशित करेंगे.

नए वर्ष में

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र



चहुँ सुख बरसे
नए वर्ष में
धरती विहँसे
नए वर्ष में.

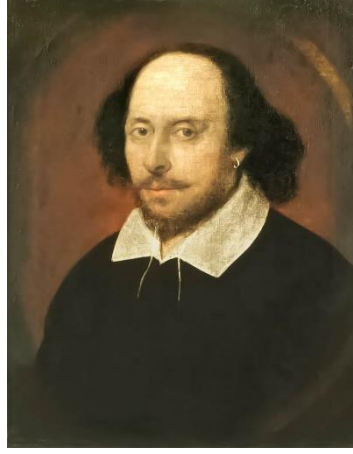
डाल-डाल पर, चिड़ियाँ चहकें
तितली झूमे, कलियाँ महकें
भौरे गाएँ
विपुल हर्ष में.

अधर से फूटें, गीत सुरीले
मन को मोहें, चित्र सजीले
अंकुर फूटें
नव विमर्श में.

पूर्ण सभी हों, नव आशाएँ
अनुरंजित हों, दशों दिशाएँ
करुणा जागे
संस्पर्श में.

विश्वविख्यात साहित्यकार विलियम शेक्सपियर

रचनाकार- डॉ. माधवी बोरसे



विलियम शेक्सपियर विश्व प्रसिद्ध लेखकों में से एक है। उन्होंने 38 नाटक, दो कथा, कई अन्य कविताएं और 154 सोनट्स लिखी हैं। उनकी सबसे प्रसिद्ध कविताएं कुछ हैमलेट और रोमियो और जूलियट हैं!

विश्वविख्यात साहित्यकार विलियम शेक्सपियर का जन्म 23 अप्रैल 1564 में हुआ था, और इतिहासकारों का मानना है कि इनकी मृत्यु भी इसी दिन हुई थी।

विलियम शेक्सपियर बहुत ही विशिष्ट व्यक्ति थे, वह बहुत ही मेहनती, खुले विचारों वाले, आशावादी, दृढ़ संकल्प वाले और रचनात्मक व्यक्ति थे।

वे हर बात, कहानी, कविताएं, सोनेट और नोवेल्स को बहुत ही विस्तार और अद्भुत ढंग से लिखते और बताते थे। शेक्सपियर को व्यापक रूप से दुनिया का सबसे महान नाटककार माना जाता है।

इनकी बहुत से अच्छी बातें हैं जो दिल को छू ले उनमें से एक बात है कि

“यदि आप अपने आप के साथ सत्य बोलते हैं, या स्वयं के साथ सच्चे हैं, तो आप किसी के लिए गलत नहीं हो सकते हैं।”

इंसान होने के नाते हमें यह पता ही है कि क्या सही है और क्या गलत है। फिर भी हम अपनी दिनचर्या में स्वयं से कभी न कभी झूठ बोल देते हैं।

सुबह से ही ले लीजिए हमें पता है कि हमें सबसे ज्यादा सुबह ही अच्छा महसूस होता है, शुद्ध हवा, शुद्ध वातावरण, हमें उत्साह और प्रसन्नता से भर देती है। फिर भी हम स्वयं को झूठी तसल्ली देते हैं कि सुबह उठना इतना जरूरी नहीं। ऐसे ही बहुत से ऐसे कार्य हैं जिसको करने कि हमारी आत्मा गवाही नहीं देती फिर भी हम उसे करते हैं तो

हम स्वयं को और साथ ही दूसरों को भी हानि पहुंचा रहे होते हैं. कहने का तात्पर्य यह है कि स्वयं से सत्य कहे, यहां तक की हम कभी-कभी खुद के स्वार्थ में दूसरों को बहुत हानि पहुंचाते हैं. भ्रष्टाचार करना, निर्दयता दिखाना, अपमान करना, अत्याचार सहना, इन सभी की हमारी आत्मा गवाही नहीं देती है, फिर भी हम स्वयं से सच नहीं कहते हैं.

तो चलिए आज विलियम शेक्सपियर के सम्मान में हम प्रतिज्ञा लेते हैं कि स्वयं से कभी झूठ ना बोले, स्वयं से हमेशा सच बोलेंगे और यही असली आत्म सम्मान होगा.

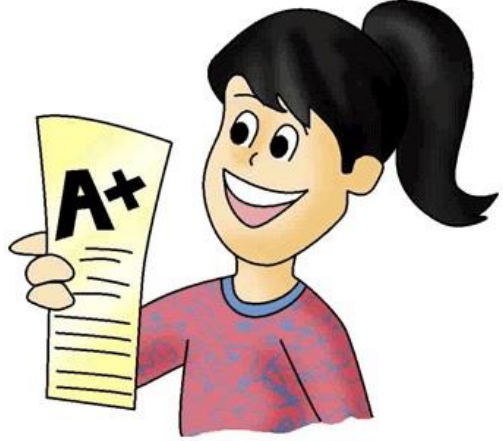
यहाँ मैं शेक्सपियर जी कि बातें कुछ पंक्तियों में बताना चाहूंगी-

प्रेम सबसे करें
विश्वास कुछ पर करें.
किसी को नुकसान ना पहुंचाएं.
बहादुरी के साथ जिंदगी को बिताएं.
अपने आचरण का परिणाम धैर्य रखकर सहें.
दूसरों से उम्मीद ना रखें.
सोचें, समझें फिर हर बात को कहें.

संयम

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू"

वर्षा बचपन से बहुत होशियार लड़की थी. वह 10वीं कक्षा की छात्रा थी. उसका मन हमेशा पढ़ाई की तरफ ही रहता था. खेलने-कूदने में भी अच्छी थी. अचानक उसकी तबियत खराब हो जाने के कारण वह 1-2 महीने स्कूल नहीं गयी और उसके क्लास के सभी बच्चे उससे आगे हो गए. वर्षा चाहकर भी बिस्तर से उठ नहीं पाती थी. बुखार के कारण वह कमजोर हो चुकी थी. वर्षा को इस बात का डर था कि कहीं वह बोर्ड क्लास में फेल न हो जाए. वह धीरे-धीरे ठीक होने लगी और स्कूल भी जाने लगी. वर्षा के सारे सहपाठी कहने लगे कि वर्षा तुम तो बहुत पीछे हो गयी हो. तुम इस साल कैसे पास हो पाओगी. उसके सारे सहपाठियों ने यह बात बार-बार कह कर उसके दिमाग में यही भर दिया कि वर्षा अनुत्तीर्ण हो जाएगी. वर्षा घर जा कर जोर-जोर से रोने लगी.



वर्षा ने सोचा कि दूसरे दिन स्कूल जा कर सब को जवाब दूँगी. दूसरे दिन जब वर्षा स्कूल गयी तो फिर एक-दो लोग सुनाने लगे. जैसे ही वर्षा कुछ बोलने वाली थी कि उसके मन में एक आवाज आई जवाब देने से बात और बिगड़ जाएगी. क्या पता, अगर मैं सब को जवाब दूँगी और कहीं मेरा अंक कम हो जाये तो सारे सहपाठी मेरा बहुत मजाक उड़ायेंगे.

रिजल्ट आने के बाद ही पता चलेगा.

वर्षा चुपचाप वहाँ से चली गयी.

वर्षा ने बहुत ही संयम से काम लिया और घर में खूब मेहनत करने लगी. परीक्षा में वर्षा को क्लास में प्रथम स्थान प्राप्त हुआ. उसे किसी को जवाब नहीं देना पड़ा. सब को उसका जवाब मिल चुका था.

सबसे संक्षिप्त उत्तर होता है कर के दिखाना.

प्रभु

रचनाकार- अजय कुमार यादव



किसने है यह संसार बनाया,
प्रभु आपका नाम हैं आया
हमको दिया उजालों का संसार,
हमको दिया जीवन का उपहार.

पेड़ पौधों, जीव जंतु में समाया,
हर पल हमको एहसास कराया.
आप है सबको जीवन देने वाले,
प्रभु आप है हम सबके रखवाले.

प्रभु अपना आशीर्वाद हमें दीजिए,
हम सबका जीवन सफल कीजिए,
प्रार्थना बस इतनी पूरी कर दीजिए
सबके दुःखों को दूर कर दीजिए.

जीवन का प्रवेश द्वार

रचनाकार- एड. किशन भावनानी



आज के बच्चे हमारे कल के सुनहरे भारत की नींव और भविष्य हैं। साथियो, बच्चा जब इस अनमोल सृष्टि में जन्म लेता है चाहे वह लड़का हो या लड़की दोनों की एक जैसी शारीरिक, भावनात्मक, मानसिक और सामाजिक जरूरतें होती हैं। सीखने की क्षमता दोनों में बराबर होती है। दुलार, ध्यान और बढ़ावे की जरूरत दोनों को होती है। उस दिन से, माता-पिता के साथ ही परिवार के दूसरे सदस्यों को भी बच्चों की देखभाल में शामिल किये जाने की जरूरत है।

पिता की भूमिका खास तौर पर महत्वपूर्ण होती है। पिता प्यार, लगाव और उत्तेजना पाने की बच्चे की जरूरतें पूरी करने के प्रयास को सुनिश्चित कर सकता है कि बच्चे को अच्छी शिक्षा, अच्छा पोषण मिले और उसकी सेहत की सही देखभाल हो। पिता सुरक्षित और हिंसा से मुक्त वातावरण को भी सुनिश्चित कर सकता है। पिता घरेलू काम में भी हाथ बंटा सकता है, खास कर तब जब मां बच्चे की देख-भाल रही हो। साथियो, बात अगर हम बच्चों के शिक्षा की करें तो शिक्षा एक अलग जीवन का प्रवेश द्वार है।

बच्चों के जीवन की शुरुआती वर्षों की गुणवत्तापूर्ण शिक्षा आगे चलकर बच्चों की क्षमता को कई तरह से प्रभावित करती है। वैसे सभी बच्चों के शुरुआती बचपन की गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुँच एक मौलिक अधिकार भी है। बात अगर हम एक छोटे के गाँव, शहर और मेट्रोसिटी के प्राथमिक स्कूलों की करें तो इन तीनों कैटेगरी में हमें अलग-अलग फर्क महसूस होगा जहां गाँव में बच्चा एक अपूर्ण बुनियादी ढांचे में अपनी पढ़ाई करते हैं, वहीं शहरों और मेट्रोसिटी में प्री प्ले क्लास से लेकर आगे की कक्षाओं में निजी संचालित स्कूलों में बेहद आधुनिक बुनियादी ढांचे में शिक्षा ग्रहण करते हैं।

यही कारण है कि बच्चा जब आगे की क्लास के लिए गाँव से शहर, मेट्रोसिटी में आते हैं तो पहले से शिक्षा में पिछड़े और पिछड़े हो जाते हैं क्योंकि कारण यह है कि उन बच्चों को शुरुआती बचपन की गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुँच नहीं हो पाई, जो आगे चल कर बच्चों की क्षमता को कई तरह से प्रभावित करती है, इसलिए हम देखते हैं

कि उच्च शिक्षा डॉक्टर, वकील, इंजीनियर, आईएस आईपीएस परीक्षाओं के लिए तो मेट्रोसिटी में विद्यार्थी आते ही हैं परंतु आज प्राथमिक शिक्षा भी शहरों और मेट्रोसिटी में दिलाने की माता-पिता की कोशिश रहती है। जिससे गरीब परिवार पूर्ण नहीं कर पाते। इसलिए अब समय आ गया है कि गांवों और छोटे शहरों में भी बच्चों की शुरुआती शिक्षा को गुणवत्तापूर्ण देने का मौलिक अधिकार प्रदान किया जाना चाहिए जिसके लिए शिक्षा की आधुनिक सुविधाओं को गाँव तक पहुंचाने मजबूत रणनीतिक रोडमैप बनाने की ज़रूरत है।

साथियों दिनांक 16 दिसंबर 2021 को पीएमकी आर्थिक सलाहकार परिषद (ईएसीपीएम) भारत में बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मकता की स्थिति पर अपनी रिपोर्ट जारी की जिसमें एक बच्चे के समग्र विकास में शिक्षा के शुरुआती वर्षों के महत्व को रेखांकित किया गया है। रिपोर्ट में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और निपुण भारत के दिशा निर्देशों की भूमिका को भी रेखांकित किया गया है।

बात अगर हम पीएम आर्थिक सलाहकार परिषद द्वारा दिनांक 16 दिसंबर 2021 को इस संबंध में जारी रिपोर्ट की करें तो पीआईबी के अनुसार, शुरुआती बचपन की गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुँच सभी बच्चों का एक मौलिक अधिकार है। एक बच्चे के जीवन के शुरुआती वर्षों को उनके सामने आने वाली सामाजिक आर्थिक, मनोवैज्ञानिक और तकनीकी बाधाओं की पृष्ठभूमि में समझने की ज़रूरत है, जो आगे चलकर बच्चे की क्षमता को कई तरह से प्रभावित करते हैं। इस अवसर पर आयोजित पैनल चर्चा के दौरान ईएसी-पीएम के ने कहा, शिक्षा सकारात्मक बहिर्भावों की ओर ले जाती है और विशेष रूप से शुरुआती वर्षों के दौरान दी जाने वाली शिक्षा की गुणवत्ता महत्वपूर्ण है। उपचारात्मक कार्रवाई के लिए साक्षरता और संख्यात्मकता में मौजूदा योग्यताओं और राज्यों के बीच विविधताओं पर ध्यान केंद्रित किया जाना चाहिए। बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मकता सूचकांक इस दिशा में पहला कदम है जो भारतीय राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों में 10 साल से कम उम्र के बच्चों में बुनियादी शिक्षा की समग्र स्थिति की समझ पैदा करता है। इस सूचकांक में 41 संकेतकों वाले पांच आधार शामिल हैं।

ये पांच आधार हैं - शैक्षणिक बुनियादी ढांचा, शिक्षा तक पहुँच, बुनियादी स्वास्थ्य, सीखने के परिणाम और शासन। वहीं, भारत सतत विकास लक्ष्यों- 2030 को प्राप्त करने के लिए प्रतिबद्ध है। शून्य भूख, अच्छा स्वास्थ्य व कल्याण और शिक्षा तक पहुँच विशिष्ट लक्ष्य हैं, जिनका मापन बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मकता सूचकांक के साथ किया गया है। एक बच्चे की मजबूत बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मकता (एफएलएन) कौशल विकसित करने की ज़रूरत है।

एफएलएन बुनियादी पढ़ने, लिखने और गणित कौशल के बारे में है। शुरुआती शिक्षा के वर्षों में पिछड़ना, जिसमें प्री-स्कूल और प्राथमिक शिक्षा शामिल है, बच्चों को अधिक कमजोर बनाते हैं, क्योंकि यह उनके सीखने के परिणामों को नकारात्मक रूप से प्रभावित करते हैं। सीखने के बुनियादी वर्षों से संबंधित मौजूदा मुद्दों के अतिरिक्त कोविड-19 महामारी ने भी बच्चे की समग्र शिक्षा में प्रौद्योगिकी के महत्व को रेखांकित किया है। इसे देखते हुए भारत में पूर्व-प्राथमिक और प्राथमिक कक्षाओं में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक सभी बच्चों की सार्वभौमिक पहुँच सुनिश्चित करने के लिए बुनियादी शिक्षा पर ध्यान देना इस समय की ज़रूरत है।

पूरे भारत में राज्यों के विकास के विभिन्न स्तरों और उनके बच्चों की अलग-अलग जनसंख्या आकार को देखते हुए, बेहतर विश्लेषण प्राप्त करने में सहायता के लिए राज्यों को विभिन्न स्तरों में वर्गीकृत किया गया। पूरे देश में विभिन्न राज्यों को उनकी बाल जनसंख्या यानी दस वर्ष और उससे कम आयु के बच्चे के आधार पर वर्गीकृत किया गया है। कुछ राज्य खास पहलुओं में दूसरों के लिए रोलमॉडल के रूप में काम कर सकते हैं, लेकिन उन्हें भी अपनी चुनौतियों का समाधान करते हुए अन्य राज्यों से सीखने की जरूरत है। यह बात न केवल अच्छा प्रदर्शन करने वालों के लिए बल्कि खराब प्रदर्शन करने वाले राज्यों पर भी लागू होता है। उदाहरण के लिए, छोटे राज्य में केरल का सबसे अच्छा प्रदर्शन है, लेकिन यह कुछ कम अंक वाले राज्यों से भी सीख सकता है, जैसे कि आंध्र प्रदेश (38.50), जिसका शिक्षा तक पहुँच के मामले में केरल (36.55) से बेहतर प्रदर्शन है। शिक्षा तक पहुँच एक ऐसा मुद्दा है, जो राज्यों की ओर से त्वरित कार्रवाई की मांग करता है।

बड़े राज्यों जैसे कि राजस्थान (25.67), गुजरात (22.28) और बिहार (18.23) का प्रदर्शन औसत से काफी नीचे है। वहीं, पूर्वोत्तर राज्यों को उनके बेहतर प्रदर्शन के चलते उच्चतम अंक प्राप्त हुए हैं। अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर उसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि शिक्षा एक अलग जीवन का प्रवेश द्वार है।

बच्चों के जीवन के शुरुआती वर्षों की गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का आगे चलकर बच्चों की क्षमता को कई तरह से प्रभावित करती है तथा सभी बच्चों के शुरुआती बचपन की गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुँच एक मौलिक अधिकार है।

तिरंगा

रचनाकार- अंकुर सिंह

तिरंगा है हमारी जान,
कहलाता देश की शान.
तीन रंगों से बना तिरंगा,
बढ़ता हम सबका मान.

केसरिया रंग साहस देता,
श्वेत रंग शांति दिखलाता.
हरा रंग विकास को बता,
तिरंगा बहुत कुछ है सिखाता.



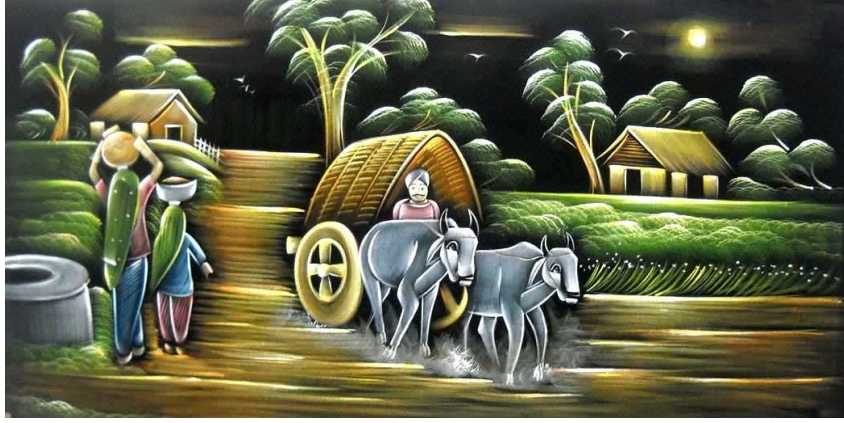
तिरंगे के मध्य में अशोक चक्र ,
निरंतर हमें बढ़ने को कहता.
राजपथ और लाल किले पर,
तिरंगा देश की शान बढ़ाता.

तिरंगा है देश की पहचान,
रखेंगे हम सब इसका मान.
तिरंगे की रक्षा के खातिर,
कर देंगे अपने प्राण कुर्बान.

आओ आज हमसब मिलकर,
जन गण मन का गान करे .
जाति-धर्म का भेद मिटाकर ,
अपने देश का हम मान बढ़ाएं.

सफर

रचनाकार- डॉ. माधवी बोरसे



बहुत समय से बैठे हैं, घर के अंदर,
चलो करें, शुरू एक नया सफर.
घूमे गाँव और अलग-अलग शहर,
महसूस करें, पर्वत और समुंदर की लहर.

करें यात्रा रेलगाड़ी, विमान और जहाज पर,
लगाए एक बार, इस प्यारी सी दुनिया का चक्कर,
चलो होकर आए, अपनों के घर.
हां जी, आज और अभी हि है, सही अवसर.

छोड़ आए कई स्थानों पर अपना असर,
कुछ समय के लिए, ऊपर वाले पर हो जाए निर्भर.
कभी समेटे स्वयं को, कभी जाए हवा में बिखर,
छू ले यात्रा मैं हर एक, उच्च शिखर.

आए अत्यंत सुंदर जगहों को घूमकर,
अपने दर्द और तनाव को पूर्ण रूप से भूलकर.
सब से कुछ नया, कुछ अलग सीख कर,
हर यात्रा में बनते चले, एक इंसान बेहतर.

देखो ठंडी आयी

रचनाकार- अजय कुमार यादव



ठंड ना लग जाए कहीं देखो भाई,
रात को सोते समय ओढो तुम रजाई.
मौसम का राजा देखो, देखो आया भाई,
कितना प्यारा मौसम देखो, आया भाई.

रखना अपना तुम ख्याल ठंड से बचना भाई,
जिसको लग गई ठंड उसको नानी याद आयी.
बगिया में देखो सुंदर सुंदर फूल खिले,
भौरें भी देखो फूलों से मिलने लगे हैं.

सूरज की तपन हमारे मन कितना को भाएं,
मिलजुलकर रहना ये हम सबको सिखलाएं.
किस्सा ना हो देखों हिस्सा का तुम कभी,
जो ज़िन्दगी मिली है उसकी तुम तारीफ करो.

रंग लाएगी तुम्हारी मेहनत भी एक दिन,
बस सच्चे मन से तुम अपना काम करो.

हमारे प्रेरणा स्रोत

दुती चंद



पसीने की स्याही से जो लिखते हैं इरादों को
उनके मुकद्दर के सफेद पन्ने कभी कोरे नहीं होते

यह पंक्तियाँ भारत की धावक दुती चंद की जिंदगी पर बिल्कुल सटीक बैठती हैं. उड़ीसा के एक छोटे से गाँव में एक बहुत गरीब परिवार में दुती चंद का जन्म हुआ. पिता कपड़ा बुनने का काम करते थे, आमदनी इतनी कम थी कि परिवार को रोज खाने के लिए भी संघर्ष करना पड़ता था. रोज के खाने में उन्हें दाल भी बड़ी मुश्किल से मिल पाती थी. गाँव में ही, एक छोटे से सरकारी स्कूल में उन्होंने पढ़ाई की. इसके बाद ग्रेजुएशन की पढ़ाई के लिए भुवनेश्वर की यूनिवर्सिटी में प्रवेश लिया. कॉलेज के दौरान ही उन्होंने राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर कई प्रतियोगिताएँ जीतीं.

बचपन से ही दुती को दौड़ने का बड़ा शौक था. वह प्रतिदिन सुबह 4:00 बजे उठकर दौड़ने जाती. ठंड के दिनों में उनका पूरा शरीर ठंडा हो जाता क्योंकि उनके पास पहनने के लिए जूते तक नहीं थे. उस वक्त गाँव में लड़कियों का निकलना अच्छा नहीं माना जाता था. गाँव वाले उन्हें दौड़ते देखकर कमेंट करते, वे बोलते कि भागने से तुझे क्या मिलेगा. ऐसे में दुती चंद की बहन उनकी प्रेरणा बनी. मात्र सोलह वर्ष की उम्र में दुती चंद ने अंडर-19 राष्ट्रीय चैंपियनशिप में 100 मीटर की रेस को 11.8 सेकंड में पूरा कर लिया. इसके बाद हर जुबान पर उन्हीं का नाम था. इसके बाद दुती ने एशियन एथलेटिक्स चैंपियनशिप में 23.8 सेकंड में 200 मीटर की रेस को पूरा कर कांस्य पदक जीता.

अब वह राष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध हो चुकी थीं. उन्होंने एक इंटरव्यू के दौरान यह बात कही कि जब वह राज्य स्तर पर खेली और उन्हें पहली बार जूते पहनने मिले तो वह उन जूतों को पहनकर गाँव की सड़कों पर नहीं जाती थीं बल्कि उन जूतों को अलमारी में रख कर नंगे पैर ही दौड़ती थी. जब वह मैच जीत कर मेडल लाती तो गाँव वाले भी उनकी तारीफ करने लगे.

2014 को ग्लासगो में एशियन गेम्स होने वाले थे. उन्हें पूरी उम्मीद थी कि गेम्स में उनका नाम जरूर शामिल किया जाएगा. लेकिन अंतिम क्षणों में उन्हें टीम से बाहर कर दिया गया वह उन दिनों की याद कर बताती हैं कि डोपिंग टेस्ट के लिए कभी उनसे यूरीन सैंपल मांगा जाता तो कभी खून मांगा जाता. उन्होंने डोपिंग टेस्ट के लिए कमेटी को पूरा सहयोग किया. रिपोर्ट में हाइपरएंड्रोजेनिज्म टेस्ट में वह फेल हो गई. नियमों के मुताबिक इस टेस्ट में फेल होने का मतलब है कि वह महिलाओं के वर्ग में नहीं खेल सकती. स्वास्थ्य जांच में यह पता चला कि उनके शरीर में निर्धारित स्तर से कहीं अधिक मात्रा में पुरुषों में पाए जाने वाले हार्मोन है. तब उन्होंने भारतीय

एथलेटिक्स संघ की हाइपरएंड्रोजेनिज्म नीति को सी ए एस में चुनौती दी. बाद में ए एफ आई की मदद से कानूनी लड़ाई भी लड़ी. अंत में दो साल के कठिन संघर्ष के बाद वह एथलेटिक ट्रैक पर वापस लौटीं.

2018 में दुती चंद को एशियन गेम्स में भाग लेने का मौका मिला. यहाँ उन्हें खुद को साबित करने का मौका मिला. जब फाइनल रेस शुरू हुई तो दुती शुरूआत में तीसरे स्थान पर थीं, लेकिन अंतिम 50 मीटर में उन्होंने दो और खिलाड़ियों को पीछे छोड़ते हुए फाइनल में जगह बनाई. दुती का यह पहला एशियाई खेल पदक था, बत्तीस वर्षों बाद इस श्रेणी में भारत का पहला रजत पदक था. उनसे पहले यह पदक पीटी उषा ने 1996 में जीता था.

इटली के नेपल्स में समर यूनिवर्सिटी गेम्स में 100 मीटर स्पर्धा में दुती चंद ने स्वर्ण पदक जीता यह रेस उन्होंने 11.25 सेकंड में पूरी की. एक इंटरव्यू के दौरान उन्होंने कहा था कि वह अपना स्वयं का रिकॉर्ड 10 बार तोड़ चुकी हैं.

भारतीय स्प्रिंटर दुती चंद मौजूदा समय में उड़ीसा के माइनिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड में एग्जीक्यूटिव ऑफिसर के पद पर कार्यरत हैं.

बच्चों यह थी कहानी धाविका दुती चंद की. जिंदगी में इतने संघर्ष के बाद भी खेल के मैदान पर जिस रफ्तार और खूबसूरती से वह आगे बढ़ीं. इसीलिए आज वे हमारी प्रेरणा स्रोत हैं.

आओ हम पेड़ लगाएं

रचनाकार- अजय कुमार यादव

आओ हम पेड़ लगाएं.
आस पास को हरा भरा बनाएं
कितने सुंदर कितने प्यारे
रंग बिरंगे रहते चुपचाप खड़े
एक दूसरे से गले मिले.
आओ हम पेड़ लगाएं.



चिड़ियों का संगीत सुनो
अपने मन को धीर धरो
पेड़ों से तुम भी प्रीत करो
पेड़ों से आती बरसात निराली
फूलों की सुगंध मन को बहकाये
आओ हम पेड़ लगाएं.

जल जीवन है धरा पर उपवन,
पेड़ ही तो धरती का तन मन.
काम की बात सबको बताओ
पेड़ ना काटो मान भी जाओ
जीव जंतु सदियों से रहते आये,
आओ हम मिलकर पेड़ लगाएं.

पेड़ों की है बात निराली
करनी है इनकी रखवाली
हम मनाएंगे ईद और दीवाली
ऋषियों ने पेड़ों के गुण बताए
आओ हम वन महोत्सव मनाए
आओ हम पेड़ लगाएं.

भीमराव आम्बेडकर

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र



भीमराव आम्बेडकर बाबा
शत-शत तुम्हें प्रणाम.
भारत की पावन गाथा में
अमर तुम्हारा नाम.

माता श्रीमती भीमा बाई
पिता राम मालो सतपाल
चौदह अप्रैल को आया था
उनके घर धरती का लाल.

महू छावनी में जन्मस्थल
अम्बाबाड़े ग्राम.

अँग्रेजों की दासता से थी
भारत को मुक्ति दिलायी
छुआछूत प्रति मुखरित वाणी
जागरूकता लायी.

जाति- पाति से किया बराबर
जीवनभर संग्राम.

तुम इतिहास पुरुष, भारत के
संविधान निर्माता
गणतांत्रिक व्यवस्था पोषित
जन-जन भाग्य विधाता.

सभी बराबर हैं समाज में
प्रिय संदेश ललाम.

भगवान बुद्ध से हुए प्रभावित
बौद्ध धर्म की ली दीक्षा
आपस में हो भाईचारा
मिले सर्वजन को शिक्षा.

छह दिसंबर पुण्य दिवस है
भीम गए सुरधाम.
शत-शत तुम्हें प्रणाम.

पंख

रचनाकार- दीपेश पुरोहित "बिहारी"



पंख फैला उड़ा चिड़ी, चिड़िया भी उड़ी साथ,
नभ दोनों साथ चले, बतियाते रे बात.

डाल डाल पात पात, बच्चे माने नहीं बात,
करे मनमानी भारी, खाते रहे दिन रात.

चोंच खोल चिक चिक, घोंसलें में झिक झिक,
तुनक तुनक सभी, हल्ला ही मचाते रहे रात.

बिहारी' पंख आएं, बच्चे चहचहाएँ,
हिलमिल संग साथी, उड़ उड़ जाते साथ.

सुबह हुई

रचनाकार- दीपेश पुरोहित "बिहारी"



सुबह हुई, पूर्व की लालिमा नये उत्साह और उमंग लेकर आती है. पर रितिका के जीवन में ऐसा कुछ नहीं था. जीवन के ऐसे मोड़ पर खड़ी थी कि लग रहा था मानो सब खत्म हो गया. पलकों पर आँसुओं की लड़ियाँ थमने का नाम नहीं ले रहीं थीं. पिता की बातों को याद करने लगी.

बचपन का समय था, वह 7 या 8 साल की रही होगी. उसके पिता रामनारायण त्रिपाठी, विद्यालय में चपरासी थे. प्रतिदिन 8 बजे से उनका सफर शुरू होता. 9 बजे स्कूल पहुँचकर उसकी साफ सफाई करना, बच्चों को खयाल रखना, स्कूल में छोटे से बगीचे में पौधे लगाना, उनकी आम दिनचर्या में शामिल था. रितिका को भी इसी दिनचर्या में शामिल होना था, क्योंकि उसका दाखिला उसी स्कूल में हुआ था. शाम को 5 बजे दोनों बाप बेटी स्कूल के बारे में बातें करते सायकल से लौटते थे. उनकी छोटी सी आमदनी में रितिका के लिए कुछ भी नहीं था, मां बीमार थी, उनकी दवाई और घर के खर्च के अलावा एक छोटी सी बचत थी. कभी-कभी बचत वाले डिब्बे से उसे चिढ़ होती थी, उसकी शौक के बदले पैसे उसमें डाल दिये जाते थे.

पिता के प्रेम और अनुशासन ने उसे धीरे-धीरे उसमें अपने न्यूनतम आवश्यकता को आदत बना दिया. इतनी कर्तव्यनिष्ठा से काम करने के बावजूद, उसके पिता को न तो विद्यालय से कोई पुरस्कार मिला न ही यथोचित सम्मान. एक बार कलेक्टर साहब का दौरा हुआ. स्कूल की साफ सफाई, समस्त व्यवस्था और बागवानी को देखकर वे बहुत प्रसन्न हुए. प्रार्थना सभा में सभी बच्चों के सामने उन्होंने हेडमास्टर साहब की प्रशंसा की. हेडमास्टर ने सबके सामने पुरस्कार भी ग्रहण किया, लेकिन श्रेय का एक कतरा भी रामनारायण त्रिपाठी जी के लिए देना उचित नहीं समझा. वह कहना चाहती थी, कलेक्टर साहब यह सारा नजारा उनके पिता के कार्यों का नतीजा है, हेडमास्टर साहब आराम से 11 बजे आते हैं और कभी कभी 4 बजने से पहले ही निकल जाते हैं. शाम को सायकल के आगे सीट में वह मौन बैठी, तब पिता ने पूछ लिया "बेटा आज चुप कैसे हो. बताओगे नहीं कलेक्टर साहब को देखकर कैसा लगा?"

रितिका थोड़ा गुस्सा करते बोली "कल से आप भी 11 बजे आएँ और 4 बजे लौट जाएंगे. इतना काम करने का कोई मतलब नहीं. काम आपने किया और इनाम तो हेडमास्टर साहब ले गए. बताइये गलत है कि नहीं."

"ओह! इस वजह से गुस्से में है बिटिया रानी!"

"हाँ! क्या कलेक्टर साहब को इनाम आपको नहीं देना था." उसने प्रश्नात्मक निगाह से पलटा.

"ये उनका निर्णय है वे किसे इनाम का अधिकारी समझते हैं. विद्यालय की सफाई के लिए उसका हेडमास्टर ही जिम्मेदार होता है. इसलिए उनको इनाम मिला."

"और आपको? क्या मिला ये सब करके ? यहाँ तक कि हेडमास्टर साहब ने इतना भी नहीं कहा कि आप दिन-रात मेहनत करते हैं तब ये स्कूल और ये बाग बगीचे हैं."

"ठीक है. नहीं कहा तो अच्छा हुआ."

"कैसे?"

"बेटा . पहली बात हमें कोई काम इसलिये नहीं करना चाहिए कि हमारी प्रशंसा हो. अगर ऐसा हुआ तब वह कार्य उतने दिन तक हो पाएगा जब तक प्रशंसा होती रहे. प्रशंसा समाप्त फिर कार्य नहीं होगा."

"लेकिन पापा"

उसकी बात बीच में काटते हुए बोल उठे "मैं यह सब करता हूँ कि मुझे खुशी होती है साफ सुथरा स्कूल देखकर, यहाँ के बच्चों को सफाई पसंद और बाग बगीचे की रखवाली करता देखकर. भले ही शुरुआत मैंने की लेकिन आज देखो सब बच्चे एक-एक पौधे लगाकर उसकी देखभाल करते हैं न क्या इसके बदले मुझे इनाम चाहिए." स्वयं के आनन्द और खुशी के लिए काम, कितना अद्भुत विचार था. जिसके लिए रितिका निरुत्तर होकर चिंतन करने लगी. इसी दिन उसने निश्चित किया वह हेडमास्टर बनेगी, जो अपने मातहत कर्मचारियों को पूरा श्रेय और सम्मान देगी.

"मैम जी दूध के लिए आज बर्तन नहीं रखा आपने." दूधवाले की चिरपरिचित आवाज ने उसकी तंद्रा भंग की. अनमने भाव से उसने दूध का बर्तन उठाया. दूधवाले ने उसका चेहरा देखकर पूछ ही लिया. आपका तबियत तो ठीक है न मैम जी.

रितिका ने आँसू बड़ी मुश्किल से रोके और सिर हिलाया. दूध लेकर वापस लौट आयी.

पिता के संस्कारों और माँ की बीमारी में भी दृढ़इच्छा शक्ति ने उसके भीतर धैर्य और हिम्मत कूटकूटकर भर दिया था.

शिक्षा पूर्ण होने के उपरांत उसकी मेहनत रंग लाई. वह हेडमास्टर के पद पर दूरस्थ ग्रामीण अंचल में एक छोटे से विद्यालय में नियुक्त हुई.

महज 20 बच्चों से शुरू होने वाले स्कूल को रितिका ने अपने कार्यों और सीखने सिखाने के नए तरीकों से बदल डाला. स्कूल से 25 किमी दूर रहते हुए भी वह प्रतिदिन 9 बजे स्कूल पहुँच जाती, शाम को 5 बजे स्कूल से वापस निकलती.

बाग-बगीचे लगाना, साफ सफाई उसे विरासत में मिली थी.

उसने दिन रात मेहनत की, छुट्टियों के दिनों में स्कूल जाती, खेतों में पालकों से बैठकर बातें करती, बड़ी लड़कियों को भी स्कूल आने के लिए प्रोत्साहित करती.

परिणाम यह हुआ की गाँव की लड़की बुधवारा जो 13 साल की थी, उसने विद्यालय आना शुरू कर दिया. अब तो धीरे-धीरे चारों ओर स्कूल का प्रचार-प्रसार होने लगा. गाँव में बैठक आयोजित कर पालक समिति बनाई गई

. उनके सहयोग से स्कूल बिल्डिंग बनाने का काम शुरू हुआ. लेकिन बच्चों की बढ़ती संख्या से हर साल भवन छोटा पड़ जाता.

रितिका के विद्यालय आने की दसवीं वर्षगांठ थी, उसने कुछ मिठाई बच्चों में बाँटे और कुछ बच्चों के लिए जूते और कपड़े दिए. प्रतिवर्ष बहुत सारे बच्चों के एडमिशन इसी दिन किए जाते थे. अब संख्या बढ़ने लगी और संसाधन अपर्याप्त थे. धीरे धीरे बच्चों की छंटनी होने लगी. आवेदन में से कुछ स्थानीय बच्चों के लिए निर्धारित थे, उससे इतर बच्चों को उनके ज्ञान, सीखने की दक्षता आदि का टेस्ट दिलाना होता और उनकी भर्ती हो पाती. ऐसे ही कई वर्षों तक क्रम चलता रहा.

इस वर्ष अन्य क्षेत्रों के बच्चों को स्थान देने के उद्देश्य से 100 सीट के बालकों एवं 50 सीट की बालिकाओं के हॉस्टल की सुविधा शुरू की गई.

विद्यालय को 4000 से अधिक आवेदन मिले. रितिका अपने सभी स्टाफ के साथ दिन रात एक कर उनमें से पात्र बच्चों की सूची बनाने जुट गई थी. उसके मन में कोई दुविधा नहीं थी, जो पात्र हैं उन्हें स्थान मिलेगा.

तभी मोबाइल बजी.

रितिका ने कहा "हैलो."

"मैडम मेरी एक दरखास्त थी. मेरे बच्चे का एडमिशन आपके विद्यालय में करवाना है." आवाज रौबदार और वजनी था.

रितिका ने उसी सहजता से जवाब दिया "कल आवेदन की आखिरी तारीख है . आप आवेदन करें हम पात्र होने पर जरूर एडमिशन देंगे."

"वैसे नहीं मैडम मुझे डायरेक्ट एडमिशन चाहिए. मैनेजमेंट कोटा या स्पेशल सीट कुछ तो होगा, आपके विद्यालय में." उस रौब में अब झल्लाहट जुड़ गई.

"सॉरी सर. यह शासकीय विद्यालय है जहाँ सभी का समान अधिकार है. ऐसी कोई सुविधा नहीं है. थैंक यू. " रितिका ने फोन काट दिया.

बाद में कई बार उसने फोन करने की कोशिश की लेकिन रितिका ने फोन रिसीव नहीं किया.

एडमिशन की प्रक्रिया आगे बढ़ गई. रितिका अपने काम में व्यस्त हो गई. 2 दिन पहले ही उसके साथी शिक्षक ने उसे फोन कर बताया.

"मैम आज तो गजब हो गया. मैम, हमारे स्कूल के बारे में अखबार में बहुत ही गलत तरीके से छापा गया है. सभी शिक्षकों को भ्रष्टाचार से लिप्त बताया गया है और भ्रामक तथ्यों के साथ धनाढ्य वर्ग के एडमिशन किए जा रहे हैं. ऐसी बातें छापी गई हैं."

रितिका ने अखबार ढूँढा, वह बेहद संजीदगी से आर्टिकल पढ़ने लगी. उसके आंखों से आंसू बह रहे थे. जिस विद्यालय को खड़ा करने में उसने अपने जीवन के 10 साल खर्च कर दिए. उसके मेहनत और काम के प्रशंसा के स्थान पर इतना निम्न स्तर के आरोप मढ़े गए थे कि उसका धैर्य भी जवाब दे गया. वह ऐसे तैसे तैयार होकर स्कूल पहुँची ही थी कि खण्ड शिक्षा अधिकारी महोदय का फोन आ गया.

पेपर में दिए खबर के कारण जिले से जांच दल आ रही थी. इसी खबर ने उसे और हैरान कर दिया.

वह अपने कमरे में सारे स्टाफ के साथ मौन बैठी थी. सब के भीतर तूफान उमड़ रहा था लेकिन बाहर से सभी शांत दिखने का प्रयत्न कर रहे थे.

कुछ ही देर में खण्ड शिक्षा अधिकारी, जिले के अधिकारियों के साथ विद्यालय पहुंचे. सबने उनका स्वागत किया. अधिकारियों ने चारों ओर घुम-घामकर देखा, बच्चों से मुखातिब भी हुए, एडमिशन प्रोसेस को देखा. सब सही था. कहीं कोई समस्या नहीं थी. फिर भी महोदय रितिका से पूछ बैठे- सब तो ठीक लग रहा है फिर ऐसी शिकायत क्यों आई?

साहब का लहजा थोड़ा सख्त था.

रितिका ने अपना इस्तीफा टेबल पर रख दिया. जिस विद्यालय को मैंने 10 साल दिए, उन कार्यों का कोई मोल नहीं और किसी ऐसे व्यक्ति जिसने उस आर्टिकल को केवल दुष्प्रचार के उद्देश्य से लिखा हो उसकी बातों पर मेरे विभाग को भरोसा हो गया तो मेरा इस विद्यालय में आखिरी दिन ही होना चाहिए.

यह देखकर सब हैरान थे. सभी ने एक स्वर में कहा यदि रितिका यहाँ नहीं आएंगी तो हम सब अपना इस्तीफा सौंप देंगे.

अधिकारी महोदय नरम पड़ चुके थे. "आप बिलकुल सही हैं रितिका. इस विद्यालय और इस समाज को आपकी जरूरत है."

थोड़ा रुककर आगे बोले -

"हमारी सबसे बड़ी समस्या यही है, हम अच्छे काम करने वालों की कद्र नहीं करते. उन्हें श्रेय नहीं मिलता, बल्कि विरोध मिलता है. हर पालक चाहता है कि उसके बच्चे का एडमिशन इसी विद्यालय में हो. इससे अच्छा यह हो सकता था कि हम हर विद्यालय को इस विद्यालय जैसा बना पाते."

खण्ड शिक्षा अधिकारी महोदय ने भी सहृदयता से कहा "रितिका और उसका विद्यालय हमारे खण्ड की शान है. तुम चिंता न करो इस शिकायत का कोई अर्थ नहीं है. तुम निश्चिन्त होकर आगे बढ़ो."

सभी की बातों से अभी भी रितिका सहज नहीं हो पाई. उसने खण्ड शिक्षा अधिकारी महोदय से पूछ लिया - कल की छुट्टी मिलेगी सर?

"छुट्टी लेकर क्या करोगी. देखो ऐसे मन को खराब न करो. सब ठीक ही होगा. "खण्ड अधिकारी समझाने लगे. दिन बहुत थकावट भरा था. रितिका शाम होते होते घर पहुँची. ऐसा लग रहा था कोई बोझ उस पर रख दिया गया हो.

चारों ओर संकट के बादल ही नजर आ रहे थे. अनिर्णय की स्थिति थी, क्या उसके कार्यों का यह अपमान नहीं था. सब सोचते सोचते रात बीत गयी थी.

अभी भी सोफे पर लेटी हुई थी. स्कूल जाने का मन नहीं था. 8 बज चुके थे, आज तो नहाने का भी मन नहीं था. मोबाइल की घण्टी बजी.

रितिका ने रुंधे गले से कहा " हैलो पापा."

त्रिपाठी जी रिटायर हो चुके थे. आज सुबह उन्हें अखबार की बात का पता चला था.

"बेटा. तू दुखी हो रही है."

"हाँ पापा."

"लोग अच्छाई की कद्र नहीं करते यहाँ तक तो ठीक है. लेकिन अच्छे को अच्छा नहीं रहने देते. हर किसी को अपने मतलब की पड़ी है. अपने काम को पूरा करने के लिए इस हद तक चले जाते हैं. क्या मिला होगा मुझे बदनाम करके?"

"किसने कहा कोई तुम्हे बदनाम कर पायेगा. बेटा किसी एक व्यक्ति ने कुछ दुष्प्रचार कर दिया तो क्या होगा? लोग जानने का प्रयास करेंगे ये रितिका कौन है ?ज्यादा से ज्यादा 2 चार लोग बात भी कर लें. 20पचास तेरे बारे में एक राय बना लें. लेकिन तू सोच जो 400 बच्चे हैं उनके लिये तुम ही आधार हो उनका जीवन तुमसे बनेगा. तुमको मैंने कहा था, ये हमारे आनंद का विषय है."

"पर पापा. मुझे भी दुख लगता है."

"आनन्द में दुख का कोई स्थान नहीं है पगली. सुख का विपर्याय दुख है. आनन्द का विपर्याय है ही नहीं. उन सैकड़ों बच्चों से वो पत्रकार मूल्यवान हो गया जिसे तुम जानती भी नहीं. बताओ?"

"नहीं पापा!"

"तो उसके आरोप इतने महत्वपूर्ण हैं जिसके लिए तुम अपना कार्य त्याग दो."

"नहीं पापा."

"तो तुम स्कूल के लिए लेट नहीं हो जाओगी आज. बस 9 बजने ही वाले हैं बेटा!"

रितिका ने आंसू पोंछ लिए, तुरंत नहाकर तैयार हो गई.टिफिन नहीं बन पाया आज तो?

उसने सोचा स्कूल में मध्यान्ह भोजन में से कुछ ले लुंगी.

प्रार्थना सभा में उसे खड़ी देखकर सभी का उत्साह दुगुना हो गया.

रंग

रचनाकार- हर्षलता मिश्रा



लाल गुलाबी नीले रंग,
भा गए मुझको पीले रंग.

काली-काली बादल छाई,
बारिश लेकर मौसम आई.

हरे- भरे सब बाग बगीचे,
लगते कितने प्यारे- प्यारे.

सब बच्चे हैं चित्र बनाते,
लगते कितने न्यारे-न्यारे.

जादुई पेंसिल

रचनाकार- हर्षलता मिश्रा



मेरी पेंसिल बड़ी कमाल,
जादू करती बड़ी धमाल.

पेंसिल से हो जाते काम,
वह अंधेरे को करे उजाल.

पेंसिल मेरी बड़ी अनोखी,
झटपट करती मालामाल.

पेंसिल पाकर राजू खुश,
राजू की पेंसिल बेमिसाल.

चिड़िया

रचनाकार- हर्षलता मिश्रा



चीं-चीं करती आती चिड़िया,
सबका मन हर्षाती चिड़िया.

फुदक-फुदक उड़ती चिड़िया,
कभी पकड़ ना आती चिड़िया.

मीठा गीत सुनाती चिड़िया,
सबका मन बहलाती चिड़िया.

रंग-बिरंगी न्यारी चिड़िया,
सुंदर-सुंदर प्यारी चिड़िया.

गणतंत्र दिवस

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र



छब्बीस जनवरी आयी है.
गणतंत्र दिवस शुभ लायी है.

जनगणमन के स्वर से गुंजित,
भारत माँ की अँगनाई है.

सम्मानित अपना संविधान,
जनता ने सत्ता पायी है.

सक्षम सशक्त गणतंत्र हुआ,
जन-जन प्रिय भाई-भाई है.

सीमा पर सैनिक डटे हुए,
नित राष्ट्र वंदना गायी है.

नभ में वंदेमातरम गूँजे,
धरती सहर्ष मुसकायी है.

गर्व से तिरंगा फहराता,
बह रहा पवन सुखदायी है.

वर्णमाला

रचनाकार- श्वेता तिवारी



अ से अदरक सबको भाता,
चाय का स्वाद बढ़ाता.

आ से आम फलों का राजा,
मीठा-मीठा ताजा-ताजा.

इ से इमली खट्टी न्यारी ,
खट्टी होकर लगती प्यारी.

ई से ईख मीठी मीठी,
चखकर देखो है ये अनूठी.

उ से उल्लू रात में जगता,
दिन निकलते हैं सोता.

ऊ से उन मां लेकर आई ,
नानी ने मफलर बनाई.

ऋ से ऋषि लगाते ध्यान,
इससे रहता मन शांत.

ए से एड़ी कदम मिलाओ,
घर से स्कूल दौड़ के जाओ.

ऐ से ऐनक है शैतान,
चढ़े नाक पर पकड़े कान.

ओ से ओखली घर की शान,
इससे कुटे हम सब धान.

औ से औरत मां है हमारी,
लगती है सबसे प्यारी.

अं से अंगूर बड़े रसीले,
होते हैं यह काले पीले.

अः स्वर है खाली,
आओ सब बजाएं ताली.

अंक

रचनाकार- श्वेता तिवारी

एक लाल तितली गई फूल पर सो,
एक और आ गई हो गई दो.

दो लाल तितली बजा रही थी बीन,
एक और आ गई हो गई तीन.

तीन लाल तितली पहन रही थी हार,
एक और आ गई हो गई चार.

चार लाल तितली कर रहीं थीं नाच,
एक और आ गई हो गई पांच.

पाँच लाल तितली कर रहीं थीं जय,
एक और आ गई हो गई छः.

छः लाल तितली कर रहीं थीं बात,
एक और आ गई हो गई सात.

सात लाल तितली पढ़ रही थी पाठ,
एक और आ गई हो गई आठ.

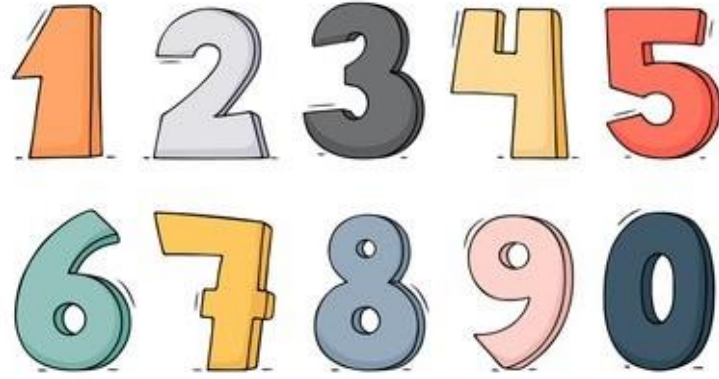
आठ लाल तितली बो रही थी जौं,
एक और आ गई हो गई नौ.

नौ लाल तितली चला रहीं थीं बस,
एक और आ गई हो गई दस.



गिनती

रचनाकार- श्वेता तिवारी



मैं अपनी गुड़िया को गिनती सिखाऊंगी,
बोल गुड़िया 1
तुझे मिलेगा केक
थोड़ी सी तुम भी खाओगे थोड़ी सी हम भी खाएंगे.

मैं अपनी गुड़िया को गिनती सीखाऊंगी,
बोल गुड़िया 2
तुझे मिलेगा भोग
थोड़ी सी तुम भी खाओगे थोड़ी सी हम भी खाएंगे.

मैं अपनी गुड़िया को गिनती सीखाऊंगी,
बोल गुड़िया 3
तुझे मिलेगा बीन
थोड़ी सी तुम भी बजाओ गी थोड़ी सी हम भी बजाएंगे.

मैं अपनी गुड़िया को गिनती सिखाऊंगी,
बोल गुड़िया 4
आओ चले बाज़ार
थोड़ी सी तुम भी चलोगे थोड़ी सी हम भी चलेंगे.

मैं अपनी गुड़िया को गिनती सीखाऊंगी,
बोल गुड़िया 5
आओ नाचे साथ
थोड़ा सा तुम भी नाचोगी थोड़ा सा हम भी नाचेंगे.

मैं अपनी गुड़िया को गिनती सिखाऊंगी,
बोल गुड़िया 6
भारत माता की जय
थोड़ा तुम भी बुलाओगी थोड़ा हम भी बुलाएंगे.

मैं अपनी गुड़िया को गिनती सिखाऊंगी,
बोल गुड़ियास 7
मिलकर रहे साथ.

मैं अपनी गुड़िया को गिनती सीखाऊंगी,
बोल गुड़िया 8
मिलकर पड़े पाठ
थोड़ी सी तुम भी पढ़ोगे थोड़ी सी हम भी पढ़ेंगे.

मैं अपनी गुड़िया को गिनती सीखाऊंगी,
बोल गुड़िया 9
हमारी माता गौ.

मैं अपनी गुड़िया को गिनती सिखाऊंगी,
बोल गुड़िया 10
अब गिनती हो गई पूरी बस.

आ जाओ न दादा

रचनाकार- उत्कर्ष चन्द्राकर "कान्हा"



जल्दी से आ जाओ न दादा,
दूर हुए दिन हो गया ज्यादा.

सूना दिन सूनी रात हुई है,
दिनों से न मुलाकात हुई है.

अब न तुमको तंग करेंगे,
फिर न कभी हुड़दंग करेंगे.

सुनेंगे अब हम तेरी ही बानी,
नित सुनाना हमें नई कहानी.

पढ़ाई लिखाई लगातार करेंगे,
सपना तेरा हम साकार करेंगे.

आज हम करते हैं तुमसे वादा,
जल्दी से आ जाओ न दादा.

मोबाइल

रचनाकार- इंद्रजीत कौशिक



मोबाइल जब घर में आया,
कौतूहल सा मन में छाया.
सब बच्चों ने मिलकर देखो,
उसको अपना मित्र बनाया.

घर में बच्चे नहीं दिखे तो,
बिल्लू जी का मन चकराया.
फिर चुपके से पीछे जाकर,
मोबाइल का लुत्फ उठाया.

मोबाइल है बड़े काम का,
इसको अपनी लत न बनाओ.
नई-नई बातें सीख कर,
बस तुम अपना ज्ञान बढ़ाओ.

अपना परिवार

रचनाकार- इंद्रजीत कौशिक



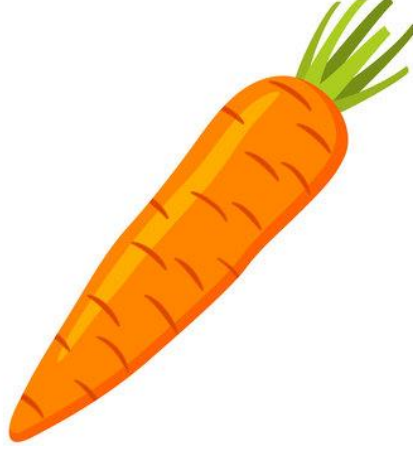
पूरे जग में मुझको प्यारा
है अपना परिवार,
जिसके साथ बिताता हूँ मैं
दिन जिंदगी के चार.

सुख-दुख सारे मिलकर सहते
मानें कभी न हार,
जो मिल जाता खा लेते हैं
हंसी खुशी के साथ.

परिवार का साथ मिले तो
हर मुश्किल आसान,
हर विपदा में हंसते-हंसते
करते बेड़ा पार.

गाजर

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू"



छन्न पकैया छन्न पकैया, गाजर हवला खाबो,
मीठा-मीठा सुग्घर संगी, अबड़ मजा हम पाबो.

छन्न पकैया छन्न पकैया, भरे विटामिन रहिथे,
खाये ले ताकत हर आथे, अइसन दाई कहिथे.

छन्न पकैया छन्न पकैया, अबड़ फायदा होथे,
जाड़ा महिना खेती बाड़ी, संगवारी मन बोथे.

छन्न पकैया छन्न पकैया, चलो बिसा के लाबो,
ताजा-ताजा गाजर ला हम, काट-काट के खाबो.

छन्न पकैया छन्न पकैया, गुरतुर-गुरतुर लागे,
खाये गाजर जेहर भैया, ओकर सुस्ती भागे.

लाल-लाल निकला गोला

रचनाकार- वेद उत्कर्ष चन्द्राकर



दिशा ने अपना पट खोला,
लाल-लाल फिर निकला गोला.
रौनक हो गए बाग बगीचे,
और कलियाँ मोहक मुस्काये.

सर-सर, सर-सर चली हवाएं
फूलों की खुशबू ले आये.
रोशन हो गए नीड़ पेड़ के,
स्वागत में चिड़ियां गीत गाये.

लोग निकल आये गलियों में,
गुन-गुन धूप सबके मन भाए.
रोचक हो गई गालियां सारी,
बच्चे खेले उत्पात मचाये.

खुशियों का भर लाया झोला,
दिशा ने अपना पट खोला.

नव वर्ष तुम्हारा अभिनंदन

रचनाकार- डॉ. कमलेंद्र कुमार श्रीवास्तव



नई उमंगें साथ लिए,
नव वर्ष अब आया है.
बहुत कठिन था साल पुराना,
छायी थी अंधियारी.
दुर्भाग्य ने सबको घेर लिया
आई थी लाचारी.
डर, चिंता आतंक ने
सबको बहुत सताया है.
नई उमंगें साथ लिए,
नव वर्ष अब आया है.

आतंक रूपी कोरोना से,
सबको आफत आयी.
जाने कितने चले गए,
सब देने लगे दुहाई.
कोरोना रूपी दानव ने
आतंक बहुत मचाया है.
नई उमंगें साथ लिए,
नव वर्ष अब आया है.

सब मिलजुल कर एक हुए,
नीति नयी अपनाई.
सबने मुँह में मास्क पहन,
नई दिशा दिखलाई.
वैक्सीन और होशियारी से
कोरोना को दूर भगाया है.
नई उमंगें साथ लिए,
नव वर्ष अब आया है.

साथ रहेंगे हम सब मिलकर
गीत खुशी का गाएंगें.
नया जोश साथ में लेकर,
नव विकास हम लायेंगे.
आगे बढ़ते जायेंगे हम,
कोई रोक न पाया है.
नई उमंगें साथ लिए,
नव वर्ष अब आया है.

बाल पहेलियाँ

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र

1. सोने की चिड़िया कहलाया,
छह ऋतुओं का है परिवेश.
आदर से माता कहते हम
ऐसा भला कौन-सा देश?
2. एक दिवस जनवरी में आता,
लोकतंत्र का पर्व मनाते.
बतलाओ वह दिवस कौन-सा?
हम सब जन-गण-मन हैं गाते.
3. रवींद्रनाथ टैगोर की रचना,
विजयी भारत की संरचना.
गर्व से राष्ट्रीय पर्व मनाओ,
सावधान हो करके गाओ.
4. भारत की मैं शान हूँ,
राष्ट्रभक्ति पहचान हूँ.
केसरिया, सफेद, हरा,
रंगों की मुस्कान हूँ.
5. सिखलाता एकता-अखण्डता
भारत का हूँ अनुपम ग्रंथ.
कर्तव्य और अधिकार बताता,
जहाँ समान धर्म और पंथ.



उत्तर - 1. भारत, 2. 26 जनवरी, 3. राष्ट्रगान (जनगणमन), 4. तिरंगा झंडा, 5. भारतीय संविधान

लोरी

रचनाकार- अनिता चन्द्राकर

सो जा बिटिया रानी सो जा,
मीठे मीठे सपनों में खो जा.
चाँद तारों की शीतल छाया.
हवाओं ने भी गीत सुनाया.
गोद में मेरी सो जा बिटिया.



तू है मेरी नन्ही सी चिड़िया.
हँसती रहे सदा जीवन में.
तुझसे महके मेरी बगिया.
सो जा बिटिया रानी सो जा,
मीठे मीठे सपनों में खो जा.

काँटा चुभे न कभी पाँव में,
बाजे पायल छमछम छमछम.
चहकती रहे तू घर आँगन में.
बोली गूँजे जैसे सरगम.
मेरी लाडली परी है बिटिया.
आँखें कभी भी हो ना नम.
सो जा बिटिया रानी सो जा,
मीठे मीठे सपनों में खो जा.

संयुक्त परिवार

रचनाकार- एड. किशन भावनानी



वैश्विक रूप से भारत अनेक क्षेत्रों में अनेक उपलब्धियों का एक गढ़ रहा है, जिसके मूल्यों का कद्र वैश्विक रूप से बहुत अधिक है. अनेक देशों के सैलानी भारत सिर्फ यह अनमोल क्षण महसूस करने और देखने आते हैं. इन खूबसूरत उपलब्धियों में से एक भारत में सदियों पुरानी संयुक्त परिवार व्यवस्था और प्रथा को देखकर बड़े-बड़े देश हैरान रह जाते हैं.

साथियों संयुक्त परिवार तथा भारत में सदियों से है. पहले हर परिवार इसी व्यवस्था में ऐसे ही चलता था, परंतु समय का चक्र चलता गया और स्वस्थ, हरे भरे परिवार टूटते चले गए और आज पाश्चात्य संस्कृति के जकड़न ने युवाओं को अपने रंग में रंगने का बीड़ा उठा रखा है. परंतु उसके बावजूद आज भी भारत में लाखों परिवार हैं जो सदियों पुरानी इस प्रथा और व्यवस्था को बनाए रखने में कामयाब हुए हैं.

अनेक परिवार तो आज 50 से 100 सदस्यों के रूप में एक साथ एक छत के नीचे आपसी तालमेल बनाकर रहते हैं और व्यवस्थाओं की चाबी आज भी उनके बड़े बुजुर्गों के पास है. वाह क्या बात है. साथियों जीवन जीने का सही लुत्फ उठाना है तो संयुक्त परिवार में मिलजुल कर प्रेम मोहब्बत से रहो. फिर देखो जिंदगी जीने का मजा. साथियों बात अगर हम वर्तमान एक दशक की करें तो परिवार टूटने की संख्या अधिक हुई है. आज अधिकतम युवाओं की अभिलाषाएं बढ़ गई है. अधिकतम युवा बाहर रहकर अपने अवसरों को खोजना, अपनी जिंदगी अकेले जीना अधिक पसंद कर रहे है. हालांकि आज की व्यवस्था में जॉब भी बड़ी-बड़ी सिटीयों में ही मिलता है, इसलिए भी आज का माहौल संयुक्त परिवार व्यवस्था बनाए रखने में ढीला होते जा रहा है. परंतु साथियों यह हमारी सदियों पुरानी धरोहर है इसे बनाए रखना आज के डिजिटल इंडिया युग में युवाओं की ज़वाबदारी बढ़ गई है. आज 68 प्रतिशत देश की जनसंख्या युवा है.

अब समय आ गया है कि युवाओं को संयुक्त परिवार व्यवस्था को संभालना होगा. उन्हें संयुक्त परिवार प्रथा की मिठास, गुणों, फायदों को अपने जीवन में उतारना होगा और आने वाली पीढ़ी के लिए एक अच्छा उदाहरण पेश

करना होगा. साथियों संयुक्त परिवार प्रथा में माता-पिता बड़े बुजुर्गों की सेवा करने का जो अवसर प्राप्त होता है. वह किसी अन्य व्यवस्था में नहीं. साथियों मेरा मानना है कि जितने पुण्य हमें अपने माता-पिता बड़े बुजुर्गों की सेवा करने से प्राप्त होते हैं उतने शायद सव, हजार तीरथ धाम की यात्राएं करने पर भी प्राप्त नहीं होंगे. क्योंकि मेरी नज़र में माता-पिता बड़े बुजुर्गों के तुल्य आध्यात्मिक व्यक्ति कोई नहीं. इतना बड़ा स्थान और शक्ति रखते हैं माता-पिता बड़े बुजुर्ग और उनके साथ रहने का सौभाग्य हमें संयुक्त परिवार प्रथा में ही मिलता है. साथियों आज हम अगर संयुक्त परिवार में रहकर माता-पिता बड़े बुजुर्गों का ध्यान करेंगे तो हमारी अगली पीढ़ी भी इसी लाइन पर चलकर हमारा सम्मान करेगी. इसलिए ज़रूरी है कि आज के युवाओं को इस दिशा में अधिक ध्यान देना होगा और इन व्यवस्थाओं को टूटने से बचाना होगा तथा समायोजन की भावना, सामूहिक लोकाचार, अपनापन, प्रेमभाव बढ़ा कर रिश्तों में मज़बूती लानी होगी, आपस में सदाचार का समायोजन कर परिवार रूपी बाग का माली बनना होगा. हर सदस्य को व्यवस्थित कर इस बाग की रक्षा करना आज युवाओं का परम धर्म हो गया है. आज युवाओं को अपने भीतर भरपूर सहिष्णुता, विनम्रता, संवेदनशीलता, कल्पनाशीलता, सहनशीलता जैसे गुणों की अति तात्कालिक ज़रूरत है क्योंकि यह संयुक्त परिवार प्रथा के मूल मंत्र हैं. साथियों बात अगर हम दिनांक 28 दिसंबर 2021 को एक कार्यक्रम में माननीय पीएम के संबोधन की करें तो पीआईबी के अनुसार, व्यक्तिगत तौर पर पीएम ने छात्रों को अपने भीतर संवेदनशीलता, जिज्ञासा, कल्पनाशीलता और रचनात्मकता को जिंदा बचाए रखने की सलाह दी और उन्हें जीवन के गैर -तकनीकी पहलुओं के प्रति संवेदनशील होने के लिए कहा. उन्होंने कहा, जब खुशी और दयालुता साझा करने की बात आए, तो कोई पासवर्ड न रखें और खुले दिल से जीवन का आनंद लें. साथियों बात अगर हम संयुक्त परिवार में भावी पीढ़ी के विकास की करें तो, संयुक्त परिवार में बच्चों के लिए सर्वाधिक सुरक्षित और उचित शारीरिक एवं चारित्रिक विकास का अवसर प्राप्त होता है. बच्चे की इच्छाओं और आवश्यकताओं का अधिक ध्यान रखा जा सकता है, उसे अन्य बच्चों के साथ खेलने का मौका मिलता है, माता पिता के साथ साथ अन्य परिजनों विशेष तौर पर दादा-दादी का प्यार भी मिलता है, जबकि एकाकी परिवार में कभी कभी तो माता पिता का प्यार भी कम ही मिल पता है. यदि दोनों ही कामकाजी हैं. दादा, दादी से प्यार के साथ ज्ञान, अनुभव भरपूर मिलता है, उनके साथ खेलने, समय बिताने से मनोरंजन भी होता है उन्हें संस्कारवान बनाना, चरित्रवान बनाना, एवं हष्ट पुष्ट बनाने में अनेक परिजनों का सहयोग प्राप्त होता है.

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर उसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि विश्व प्रसिद्ध सदियों पुरानी भारतीय संयुक्त परिवार व्यवस्था के मूल्यों को बनाए रखने की ज़वाबदारी युवाओं द्वारा उठाना ज़रूरी है तथा संयुक्त परिवार एक खुशियों से महकता हुआ बाग है. युवाओं को इस बाग का माली बनने की तात्कालिक ज़रूरत है.

नया वर्ष

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू"



नये वर्ष की शुभ बेला पर, सब का साथ निभायेंगे.
हुए गिले शिकवे हैं जो भी, उनको दूर भगायेंगे.

सब इंसान एक बराबर, फिर क्यों पीछे जाते हो.
जाति धर्म का भेद बताकर, छोटी सोच बनाते हो.

पढ़ी लिखी यह सारी पीढ़ी, इक पहचान बनायेंगे.
नये वर्ष की शुभ बेला पर, सब का साथ निभायेंगे.

बैठे रहते सड़क किनारे, वो भी तो भूखे होते.
वर्ष नया उनका भी आता, लेकिन क्यों वह है रोते.

आओ साथी सारे मिलकर, हम भी आज हँसायेंगे.
नये वर्ष की शुभ बेला पर, सब का साथ निभायेंगे.

देखो मानव की आजादी, पार्टी भी सभी मनाते.
पी कर दारू खा कर मुर्गा, यहाँ गंदगी फैलाते.

आज नया हम प्रण लेते हैं, मिलकर इसे मिटायेंगे.
नये वर्ष की शुभ बेला पर, सब का साथ निभायेंगे.

बाल हाइकु

रचनाकार- प्रदीप कुमार दाश "दीपक"



सूर्य सरल
दीपक सा जलता
वो अविरल.

अकेला सूर्य
आलोकित करता
संपूर्ण जग.

प्रेम के पंख
उड़ गई चिड़िया
मिला जीवन.

कटा पीपल
फुर्र हो गई मैना
दुखी मुनिया.

चाक में चढ़ा
गीली मिट्टी का लौंदा
पाया आकार.

अकड़ खूब
बहे बाढ़ में पेड़
बचती दूब.

बालक नूर
मुरझा रहे हैं क्यों
हँसी के फूल.

रखना ख्याल
बरगद सुनाता
गाँव का हाल.

बचाएँ जल
वरना तरसेंगे
बूँद को कल.

प्यारी गुड़िया
अपनत्व में पली
नन्ही चिड़िया.

छुक छुक करती रेल

रचनाकार- टीकेश्वर सिन्हा



चलो खेलें भैया खेल,
छुक-छुक करती रेल.

है हमारी रेल निराली,
मुम्बई दिल्ली झाँसी वाली.

मनु भैया रानी बहना,
दुर्ग-भिलाई राँची पटना.

यह कैसा पेलम पेल,
छुक-छुक करती रेल.

देश हमारा

रचनाकार- टीकेश्वर सिन्हा



स्वर्ग से न्यारा
देश हमारा.

प्राणों से प्यारा
देश हमारा.

आँखों का तारा
देश हमारा.

एक अविरल धारा
देश हमारा.

मीठी की नासमझी

रचनाकार- वंदिता शर्मा

मीठी बहुत समझदार और बुद्धिमान लड़की थी। लेकिन उसमें एक बुराई थी वो ये कि उसे कोई भी काम जल्दबाजी में करने की आदत थी। उसकी माँ हमेशा उसे समझाती थी "मीठी हर काम आपको बिना जल्दबाजी किए आराम से करना चाहिए ताकि वह सही तरीके और आसानी से हो और किसी को नुकसान न पहुंचे." लेकिन मीठी माँ व पापा की बात कभी नहीं सुनती थी।



एक दिन सुबह मीठी स्कूल जाने के लिए तैयार हो रही थी। वह बहुत उत्साहित थी क्योंकि उसकी कक्षा में आज ड्राइंग प्रतियोगिता होने वाली थी। उसने जल्दी से अपना नाश्ता किया, बैग पैक किया और हाथ में जूते लिए बाहर कुर्सी पर बैठ गयी। तभी उसकी माँ ने कहा, "पहले जूते साफ करो और फिर पहनो."

लेकिन मीठी कभी किसी के सुझाव को सुनने वाली नहीं थी। उसने कहा, "इससे क्या फर्क पड़ेगा माँ. कल ही मैंने इसे पहनी थी." मीठी ने लापरवाही से कहते हुए एक जूता पहन लिया। जैसे ही उसने दूसरा पैर अपने जूते में डाला, उसके पैर में कुछ चुभा। उसने जल्दी से अपना पैर बाहर निकाल दिया।

उसके जूतों में छोटा सा चूहा था। वह जोर से चिल्लाया, "मम्मी-मम्मी काट लिया." जब तक उसकी माँ आयी मीठी का पैर चूहे ने काट लिया था।

अब मीठी का एक पैर बुरी तरह जखमी हो गया था .वह रोए जा रही थी. माँ मीठी को अस्पताल ले गई.

अस्पताल पहुंचने के बाद डॉक्टर ने कुछ क्रीम लगा दी और टिटनेस का टीका लगाकर उसे दो दिन आराम करने की सलाह दी. यह सुनकर मीठी बहुत नाराज हुई और अपने कमरे में चली गयी. वह सारा दिन घर पर रहकर ड्राइंग प्रतियोगिता के बारे में सोचकर रोने लगी.

दो दिनों के बाद अब उनका पैर ठीक हो गया था. वह स्कूल जाने के लिए तैयारी कर रही थी तभी वह सोचने लगा की अगर माँ की बात मान ली होती तो दर्द न सहना पड़ता. उसे उसकी जल्दबाजी की सजा मिली थी. आज उसने आराम से जूते साफ़ किये और फिर पहने. वह मन ही मन मुस्कुरा रही थी उसे समझ आ गया था कि बड़ों का कहना मानना चाहिए व बिना सोचे समझे कोई काम जल्दबाजी में नहीं करनी चाहिए.

नये साल में

रचनाकार- नरेन्द्र सिंह नीहार



नये साल की भोर में,
नये नवेले दौर में,
जल्दी उठ व्यायाम करेंगे,
नित नियम से काम करेंगे.

आलस से रखेंगे दूरी,
साध दिलों की होगी पूरी.
मात - पिता का माने कहना,
सच बोलेंगे भाई - बहना.

रखें नहीं किसी से बैर,
शाम पार्क में होगी सैर.
हँसी - खुशी से होगा मेल,
मिलकर सब खेलेंगे खेल.

हम भूलेंगे बात पुरानी,
नये साल की नयी कहानी.

रोबोट

रचनाकार- परवीन बेबी दिवाकर "रवि"

आया जमाना रोबोट का,
चलते -फिरते रोबोट का.

पल में करे हजारों काम,
थकने का ना लेता नाम.

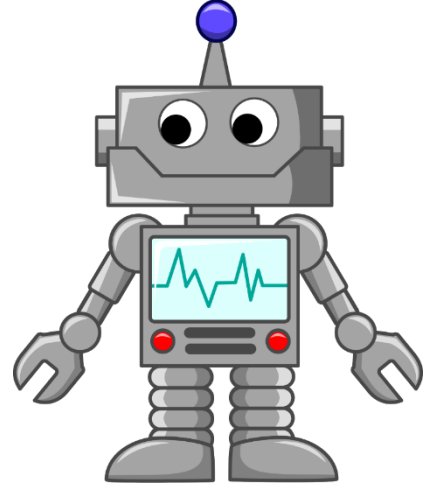
रोबोट होता जटिल मशीन,
खेल -खेल में विज्ञान सीख.

रोबोट का है काम अनूठा,
इससे नहीं अब कोई रुठा.

मानव जैसा चलना,
बोलना आता है,

बच्चे, बड़े सभी के मन को भाता है.
ज्ञान -विज्ञान सिखाता है,

सब काम आसान बनाता है.



मौसम के रंग

रचनाकार- परवीन बेबी दिवाकर "रवि"



मौसम के हैं रंग कई,
हमें लगे सब नई-नई.
काले मेघा नभ पर छा जाती,
बारिश आती हमें भिगाती,
धरती को हरा-भरा बनाती.
काले मेघा देख मयूरा,
हमें सुन्दर नाच दिखाती.

बरसात ज्यों जाती,
ठण्ड है आती,
गरम रजाई हमको भाती,
धूप होती है खिली-खिली,
सेहत संवरती है धीमी-धीमी.

गर्मी का मौसम है आया,
गरम हवाएँ साथ ले आया.
गर्मी में मन बेचैन,
ठंडी हवा में ही पाये चैन.

बेटी की पढ़ाई का महत्व

रचनाकार- संध्या वर्मा

यह कहानी छत्तीसगढ़ राज्य के अन्तर्गत गरियाबंद जिले के एक गाँव गुजरा की है। जहाँ सुदूर जंगलों के अन्दर रहने वाले लोगों के लिए सरकार ने शिक्षा की व्यवस्था की, वहाँ प्राथमिक, माध्यमिक शाला तथा हाई स्कूल खोले गए।

यहाँ राजकुमारी नाम की लड़की रहती थी जिसका पूरा परिवार कई पीढ़ियों से अशिक्षित था। वे जंगली जीवन व्यतीत कर रहे थे। राजकुमारी ने कक्षा 5 वीं तक पढ़ाई की थी। वह आगे भी पढ़ना चाहती थी किंतु गाँव में स्कूल नहीं होने के कारण पढ़ नहीं पा रही थी और उसके माता पिता उसे पढ़ाना नहीं चाहते थे। लड़की बहुत होनहार थी। अपने माता पिता से स्कूल जाने की जिद किया करती थी। माता पिता उससे घर के कार्य कराते थे। उनका यह मानना था कि लड़कियाँ ससुराल चली जाती हैं अतः उन्हें पढ़ाना आवश्यक नहीं है। किंतु लड़के घर पर रह कर माता पिता का पालन पोषण कर सकते हैं। अतः लड़कों को पढ़ायेंगे, लड़कियों को कृषि कार्य एवं खाना बनाना सीखना चाहिए। परन्तु राजकुमारी का मन पढ़ने के लिए आतुर था और वह पढ़ लिख कर कुछ बनना चाहती थी। किंतु माता पिता के न मानने के कारण उसे अपनी पढ़ाई बीच में ही छोड़नी पड़ी।



एक दिन अचानक उसके पिता का स्वास्थ्य बहुत खराब हो गया और उन्हें अस्पताल ले जाना पड़ा। डॉक्टर ने कुछ दवाईयाँ दी जिसे उन्हें समय पर लेना था। माँ अनपढ़ थीं अतः उनसे दवाई देने में गलती हो गई। राजकुमारी ने देखा की माँ ने गलत दवाई दी है तो उसने अपनी माता को रोका तभी गाँव की शिक्षिका राजकुमारी के स्कूल न आने का कारण जानने वहाँ पहुँचीं। उन्होंने राजकुमारी के माता पिता को पढ़ाई का महत्व बताया और समझाया कि लड़कियाँ का कार्य केवल रसोई में खाना बनाना ही नहीं होता बल्कि आज लड़कियाँ हवाई जहाज भी चला रही हैं और संसद भवन में देश चलाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। हमारे देश की प्रधानमंत्री रहीं श्रीमती इंदिरा गांधी, मदर टेरेसा, अन्तरिक्ष यात्री कल्पना चावला, ओलम्पिक विजेता मीराबाई चानू, वित्त मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमण और हमारे राज्य की राज्यपाल सुश्री अनुसुइया ऊइके जी को ही देख लो ये सभी महिलाएँ हैं। हर क्षेत्र में चाहे वह शिक्षा हो, स्वास्थ्य या आवागमन के साधन हो, लड़कियाँ लगातार आगे आ रही हैं। आप मुझे ही देख लीजिये मैं भी एक लड़की हूँ और स्कूल की शिक्षिका हूँ। इसलिए आप अपनी बेटी की पढ़ाई और उसके भविष्य निर्माण में उसकी सहायता करें। ताकि आज दवा देने में जो गलती आपने की है, वैसी गलती दुबारा न हो।

मेरा गाँव

रचनाकार- वसुंधरा कुर्रे



छोटा सा प्यारा सा मेरा गाँव,
छोटा सा प्यारा सा मेरा गाँव.

कच्ची पगडंडी रास्ता वाला मेरा गाँव.
सुबह-सुबह मुर्गा की कुकड़ू कु,
गाय बछड़ों का रंभाना, कोयल की कूक.
गाँव की मिट्टी की सुगंध,
उन चहचहाते पक्षी की चहक.
सुंदर वनों की महक,
ओ तरिया के पार, ओ खेत और खार.
दोस्तों के साथ मस्ती का भरमार.

आम इमली बेर के बोछार,
शाम होते झींगुर की गुंजन.
रात का वह चौपाल,
छोटा सा प्यारा सा मेरा गाँव,
छोटा सा प्यारा सा मेरा गाँव.

आज कहाँ शहर की चकाचौंध में,
भूल गया मैं अपना गाँव,
भूल गया मैं अपना गाँव.
ना सुनने व देखने को मिलता यह सब
छोटा सा प्यारा सा मेरा गाँव,
छोटा सा प्यारा सा मेरा गाँव.

हँसते रहे

रचनाकार- टीकेश्वर सिन्हा



घोड़ा दौड़े सरपट,
जा पहुँचा दिल्ली.

मिल गयी उसे,
एक कबरी बिल्ली.

दोनों हुए खुश,
मन खिल-खिला.

चले गये फिर,
घूमने लाल किला.

घूमघाम कर फिर,
जा पहुँचे कुतुबमीनार.

खूब मजा आया उन्हें,
हँसते रहे बारम्बार.

जल संचय ही जीवन संचय

रचनाकार- गीता खुंटे



जल का संचय ही जीवन संचय है,
जल संचय करना है यही निश्चय है.

जल बिन सब बागान सूखे हो जाएंगें.
जल बिन हम सब कहाँ जी पाएंगें.

जल के बिना जीवन की कल्पना अधूरी है,
जल से ही तो हमारी जिंदगी पूरी है.

जल के बिना माँ की रोटी भी न बन पाती है,
जल बिना पकवान से सजी थाली भी अधूरी रह जाती है.

जल की रक्षा करने हेतु हमको अब प्रण लेना होगा,
जल स्तर को ऊँचा करने वृक्षारोपण करना होगा.

व्यर्थ पानी कहीं न बहाएंगे अब यह प्रण हमारा है.
पूरे विश्व को जल संकट से बचाएंगे यह संकल्प हमारा है.

बाल पहेलियाँ

रचनाकार- डॉ. कमलेंद्र कुमार श्रीवास्तव

1. फ्राँस देश के एक अन्वेषक,
पढ़ने-लिखने की युक्ति बनाई.
अंधों का वो बना मसीहा,
पूरे विश्व में धूम मचाई.

2. एक अभिनेत्री ऐसी है,
जिसने अपना पैर गवांया.
फिर भी नाच कर शोहरत पाई,
पूरे विश्व में नाम कमाया.

3. गीत लिखे संगीत के मुखिया,
और वो गाते गान.
आंख से वो देख ना पाते,
फ़िल्म जगत की शान.

4. एक हाथ से तैरे बच्चों,
दुनियाँ में नाम खूब कमाया.
हाथ एक उनका खराब है,
सम्मान बहुत उन्होंने पाया.



उत्तर- 1. लुई ब्रेल, 2. सुधा चंद्रन, 3. रविन्द्र जैन, 4. शरत गायकवाड़.

मोर छत्तीसगढ़ महतारी

रचनाकार- मनोज कुमार पाटनवार



तोर कोरा मा बाढ़े लइका सियान हे
लईका पढ़ लिख के बनत विद्वान हे
तोर माटी म जनमे सपूत महान हे
आजादी बर गंवाईच अपन जान हे
सुन्दर, हनुमान सिंह, वीरनारायण सुजान हे
धरती के बढ़ाइस गजब उन मन मान हे

चारों कोति नदियाँ के धार बोहात हे
महानदी, अरपा, हसदो, शिवनाथ कहात हे
इहाँ के माटी डोरसा, मटासी, कन्हार हे
धान कोदो राहेर अउ कुसियार हे.

सबो फसल के उत्पादन ल बढ़ावत हे
तभे छत्तीसगढ़ धान के कटोरा कहावत हे.

तोर कोरा मा जंगल, पहाड़, घाट हे
प्राकृतिक सुंदरता चैतुरगढ़, सतरंगा, मैनपाट हे
तोर कोरा मा डोंगरगढ़ बम्लेश्वरी दाई हे
चंदरपुर चन्द्रहासिनी, रतनपुर महामाई हे
तोर कोरा मा लोहा कोयला के खान हे
इही पाय के छत्तीसगढ़ बर अभिमान है.

करमा, ददरिया, रिलो करमा के पहचान हे
सुवा, पंडवानी, पंथी गीत महान हे
दाऊ राम चंद्र जइसे कला परखी सियान हे.
ममता, कविता, अनुराग के कंठ में तान .
संत कबीर, गुरु घासीदास के प्रभाव हे
इहाँ के मनखे मन के सुग्घर सुभाव हे.

जीवन की सीख

रचनाकार- मनोज कुमार पाटनवार



जीवन एक संघर्ष है यह जान लो,
जो लड़ा वही बढ़ा यह मान लो.

बैठे रहने से कुछ नहीं मिलता यह जान लो,
मेहनत करने वाले आगे बढ़ते हैं यह मान लो.

सोना निखरता है आग में तप कर यह जान लो,
सफलता के लिए परीक्षा देनी होती है यह मान लो.

मेहनत करने से घबराना नहीं तुम ठान लो,
मेहनत का फल मीठा होता है यह मान लो.

दीन-दुखियों की मदद करना तुम जान लो,
सेवा करने से सुकून मिलता है यह मान लो.

सीखने की ललक होनी चाहिए यह जान लो
सीखने वाले ही विद्वान बनते हैं यह मान लो.

जीवन की चुनौतियों को स्वीकारना जान लो,
हर परिस्थिति में मुस्कुराना है यह मान लो.

चिंता को पास आने ना देना यह जान लो,
चिंता बढ़ने से चिता सज जाती है यह मान लो.

माता-पिता की सदैव सेवा करना यह जान लो
माता-पिता ही साक्षात भगवान हैं यह मान लो.

रंग तिरंगा

रचनाकार- कन्हैया साहू 'अमित'

देश हमारा है सतरंगा,
शान हमारी, यही तिरंगा.

नील गगन से बातें करता,
इसे देख दुश्मन है डरता.
रक्षक इसके वीर भुजंगा,
शान हमारी, यही तिरंगा.



केसरिया है सबसे ऊपर,
शौर्य वीरता भरता तत्पर.
बोझिल को कर देता चंगा,
शान हमारी, यही तिरंगा.

श्वेत शांति ही चाहे हरदम,
साथ धैर्य के रखना दमखम.
पहले से ना करना पंगा.
शान हमारी, यही तिरंगा.

हरा रंग कहता खुशहाली,
सबको भाये ये हरियाली.
जीवनदात्री जैसे गंगा,
शान हमारी, यही तिरंगा.

देश हमारा है सतरंगा,
शान हमारी, यही तिरंगा.

देश हमारा

रचनाकार- कन्हैया साहू 'अमित'

अपना भारत देश, हमें प्राणों से प्यारा.
अखिल विश्व से प्रेम, परम प्रिय हिंद हमारा.

दिया शून्य उपहार, ज्ञान की पावन धरती.
सोना उगले खेत, भूमि न यहाँ की परती.
कुछ ना कुछ हर क्षेत्र, भरा अतुलित भंडारा.
अपना भारत देश, हमें प्राणों से प्यारा.



मुकुट सजा है शीर्ष, हिमालय जिसे पुकारे.
तीन ओर जलधाम, नित्य ही पैर पखारे.
हरा-भरा चहुँ ओर, दिखे सब सुखद नजारा.
अपना भारत देश, हमें प्राणों से प्यारा.

सैनिक वीर जवान, हमारे हैं बलशाली.
धरती जल आकाश, सदा करते रखवाली.
भारत की जयकार, गूँजता जग में न्यारा.
अपना भारत देश, हमें प्राणों से प्यारा.

अखिल विश्व से प्रेम, परम प्रिय हिंद हमारा.
अपना भारत देश, हमें प्राणों से प्यारा.

वंदेमातरम

रचनाकार- कन्हैया साहू 'अमित'



वंदेमातरम मैं भी गाऊँ,
मान सिपाही-सा मैं पाऊँ.

मेरी सेवा सीमा पर हो,
ताकि सुरक्षित सबका घर हो.

नभ में मैं झंडा लहराऊँ,
वंदेमातरम मैं भी गाऊँ.

जाति-धर्म के झगड़े छोड़ो,
मानवता से नाता जोड़ो.

करें देश की रक्षा पहले,
हृदय शत्रु का हम से दहले.,

लड़ते-लड़ते अमर कहाऊँ,
वंदेमातरम मैं भी गाऊँ.

सामुदायिक सेवा

रचनाकार- एड. किशन भावनानी

भारत की मिट्टी में जन्म लेने वाले हर व्यक्ति, उसकी पीढ़ियों, पूर्वजों में भारतीय संस्कृति, प्रथा और सेवा भाव की बुनियादी विरासत की अमिट छाप देखने को ज़रूर मिलेगी.

भारतीय चाहे वह भारत में रहता हो या विश्व के किसी भी अन्य देश में रहता हो यदि उसकी किसी पीढ़ी या पूर्वजों का संबंध भारतीय मिट्टी से रहा हो तो उसमें नम्रता और सेवा भाव का गुण ज़रूर दिखेगा.



साथियों बात अगर हम सेवा भाव की करें तो वर्तमान बदलते परिवेश और पाश्चात्य संस्कृति के हमले को देखते हुए हमें अत्यंत सतर्क होकर अपने भारतीय संस्कृति, विरासत, सेवा भाव, सामूहिक सेवा को बरकरार रखना है.

साथियों बात अगर हम इसे संरक्षित रखने की करें तो इसके लिए घर के बड़े बुजुर्गों, अभिभावकों शिक्षकों, शिक्षा संस्थाओं, शिक्षा मंत्रालय सभी को सहभागी होकर आपस में तालमेल से सामुदायिक सेवा रूपी यज्ञ में अपनी आहुति देनी होगी ताकि हम अपनी अगली पीढ़ी में यह सेवा भाव बरकरार रख सकें.

साथियों बात अगर हम इस सेवा भाव, संस्कृति को पीढ़ी दर पीढ़ी संरक्षित करने की करें तो हमें अपने बच्चों को उनके बचपन से ही सामुदायिक सेवा भाव के लिए प्रेरित करना होगा ताकि भारतीय संस्कृति की बुनियादी विरासत उन्हें बचपन से ही कंठस्थ हो सके और बड़े होकर अपनी खुशबू हर उस जगह फैलाएँ जहाँ भी किस्मत उन्हें लेकर जाए.

इसका जीता जागता उदाहरण विदेशों में लाखों हमारे प्रवासी भारतीय, मूल भारतीय हैं जो भारतीय संस्कृति, सेवा भाव की बुनियादी विरासत की खुशबू चारों तरफ फैला रहे हैं. जिससे भारत की प्रतिष्ठा को चार चांद लग गए हैं.

साथियों बात अगर हम शिक्षकों और शिक्षा संस्थाओं की करें तो फिलहाल कोरोना ओमिक्रान वेरिएंट की त्रासदी चल रही है और स्कूलों को फिर से बंद किया जा रहा है या बंद करने के कगार पर हैं, परंतु शिक्षक और शिक्षण संस्थाओं को इस बात को रेखांकित करना चाहिए कि विद्यार्थियों को शुरुआत से ही सामुदायिक सेवा का पाठ पढ़ाना और उन्हें व्यावहारिक रूप से सामुदायिक सेवा कराना अनिवार्य करना चाहिए और उस पर ग्रेड का अवार्ड निश्चित करना चाहिए.

साथियों बात अगर हम प्रसिद्ध बौद्धिक व्यक्तियों और उच्च क्षमता प्राप्त मूल भारतीयों की करें तो आज अनेक वैश्विक बड़ी-बड़ी कंपनियों में सीईओ हैं। अमेरिका की उपराष्ट्रपति, स्पेस क्षेत्र में भारी सफलता सहित अनेक क्षेत्रों में जिनका नाम वैश्विक पटल पर आया है। हालांकि पूर्ण विकसित देशों से उनका नाम जुड़ा, परंतु है तो वह मूल भारतीय ही। उनकी भारतीय संस्कृति, सामुदायिक सेवा, मूल सेवा भाव, विनम्रता, इतनी सफलता के बावजूद भी झलकती है। यह है मूल भारतीय संस्कृति की बुनियादी विरासत! इसलिए हमें इसे रेखांकित कर इस ओर उचित कदम उठाने की जरूरत है।

साथियों बात अगर हम दिनांक 3 जनवरी 2022 को माननीय उपराष्ट्रपति द्वारा एक कार्यक्रम में संबोधन की करें तो पीआईबी के अनुसार उन्होंने भी कहा है कि युवाओं को कम आयु से ही सेवा भाव के लिए प्रेरित करना अत्यंत आवश्यक है।

उन्होंने स्कूलों से स्थिति सामान्य होने पर विद्यार्थियों के लिए सामुदायिक सेवा को अनिवार्य बनाने का आग्रह किया। उन्होंने कहा है कि युवाओं को कम आयु से ही सेवा भाव के लिए प्रेरित करना अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने स्कूलों से स्थिति सामान्य होने पर विद्यार्थियों के लिए सामुदायिक सेवा को अनिवार्य बनाने का आग्रह किया।

उन्होंने कहा कि प्रत्येक भारतीय के रक्त में धर्मनिरपेक्षता है और पूरे विश्व में अपनी संस्कृति और विरासत के लिए देश का सम्मान किया जाता है। इस संदर्भ में उन्होंने भारतीय मूल्य प्रणाली को मजबूत बनाने का आह्वान किया।

युवाओं से भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों को अपनाने, संरक्षित तथा प्रोत्साहित करने का आग्रह करते हुए उन्होंने दूसरों के साथ साझा करने और एक दूसरे की देखभाल करने के भारत के दर्शन के महत्व पर प्रकाश डाला।

उन्होंने कहा कि दूसरों के लिए जीने से व्यक्ति को न केवल संतोष मिलता है, बल्कि व्यक्ति के नेक कार्यों के लिए लोग उसे लंबे समय तक याद रखते हैं।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन और विश्लेषण करें तो हम पाएँगे कि युवाओं और स्कूल विद्यार्थियों के लिए सामुदायिक सेवा अनिवार्य करना जरूरी है तथा सेवा भाव हर भारतीय की बुनियादी विरासत में से एक है, इसके लिए बच्चों को कम आयु से ही प्रेरित करना जरूरी है।

ठंडी मौसम

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू"



ठंडी का मौसम जब आये,
स्वेटर, मफलर सब को भाये.
भीनी-भीनी आग सुहाये,
ठंडी का मौसम जब आये.

एक जगह पर सभी इकट्ठे,
मिलकर लाते लकड़ी लट्टे.
बच्चे बूढ़े बैठे सारे,
आग तापते लगते प्यारे.

सरसर-सरसर चली हवायें,
तन-मन को ठंडी कर जाये.
धूप बड़ी लगती है प्यारी,
देह सेंकते नर अरु नारी.

शीत बूँद मोती बन आये,
बैठ धरा को वह हर्षाये.
धुँधली-सी बादल पर छाये,
जब-जब मौसम ठंडी आये.

मैं पेड़ होता

रचनाकार- दलजीत कौर

माँ! अगर मैं पेड़ होता,
सदा ही जगता कभी न सोता.

मेरे टहनियाँ -पत्ते होते,
पक्षी आकर उन पर सोते,
चैं-चैं का शोर-गुल होता,
खुश रहता मैं कभी न रोता.

पक्षी मुझ पर घोंसला बनाते,
उसमें फिर अण्डे दे जाते,
अंडों से बच्चे बाहर आते,
चीं-चीं का वे राग सुनाते,
सीखते उड़ना, फुर्र उड़ जाते.

खट्टे-मीठे फल मैं देता,
बदले में मैं कुछ न लेता,
पेड़-सा जीवन अच्छा होता
माँ! अगर मैं पेड़ होता.



ठंड

रचनाकार- दलजीत कौर

ठंड की हुई शुरुआत,
आँधी चली, हुई बरसात.
थर-थर काँपे बंदर महाराज,
गर्म कपड़े नहीं थे पास.

पेड़ से लगाई आवाज़,
बिल्ली मौसी! दे दो कुछ आज.
लाऊँगा कल रज़ाई-गिलाफ,
इस बार मुझे करना माफ़.



बिल्ली बोली आकर पास,
नहीं तुम्हें कोई शर्म-लिहाज़.
क्यों नहीं दिमाग लगाते,
ठंड से पहले कपड़े लाते.

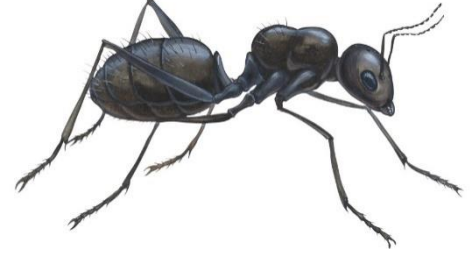
पड़ जाओगे जब बीमार
कौन रखेगा तुम्हारा ख्याल?
मौसम बदलते कई बार,
रखना होगा अपना ध्यान.

जल्दी से बाज़ार तुम जाओ,
रज़ाई, स्वेटर, मोजे लाओ,
ठंड से खुद को बचाओ.

नन्हीं चींटी

रचनाकार- तुषार शर्मा "नादान"

नन्हीं-सी चींटी है आई,
मुंह में दाना भर के लाई.
इसकी तुम ताकत तो देखो,
अपने से ज्यादा वजन उठाई.



रोज-रोज वह आ जाती है,
इधर-उधर वह मंडराती है.
लगन ज़रा तुम देखो उसकी,
रुके तभी जब कुछ पाती है.

इतनी छोटी-सी दिखती है,
छुईमुई-सी वो लगती है.
धूल चटाने का हाथी को,
वो खुद में साहस रखती है.

चलती जब वो ऊंचाई पर,
गर थोड़ा-सा गिर पड़ती है.
हार नहीं माने वो बिल्कुल,
कर हिम्मत फिर से चढ़ती है.

आओ हम सब सीखें इससे,
है नहीं ये कहानी किस्से.
ज़रा भी गुण हो चींटी जितना,
होगी सफलता अपने हिस्से.

तीसरी लहर

रचनाकार- आशा उमेश पान्डेय

तीसरी लहर कोरोना आई,
ओमीक्रान रुप धर लाई.
मीठी जहर जैसी है भाई,
तन में घूसकर जान गवाई.

आफत विश्व में खूब मचाई,
सबको वह तो है छकाई.
कहना सबका तुम भी मानो,
ओमीक्रान को सब पहचानों.



लक्षण कुछ भी नहीं दिखाती,
सबको मीठी नींद सुलाती.
मास्क लगाना है सुखदाई,
रखना दूरी हरदम भाई.

जनसंपर्क से दूर रहना,
नहीं पड़ेगा फिर दुख सहना.
ध्यान सुरक्षा का है धरना,
सभी नियम का पालन करना.

ओमीक्रान को है भगाना,
जीत शत्रु पर हमको पाना.
प्रतिरक्षा मजबुत है रखना,
सदा शक्तिशाली है बनना.

मैं फूल हूँ

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु"



मैं फूल हूँ, मुझसे फुलवारी की सुंदरता है.
मुझे मत तोड़ो, मुझसे इसकी रौनकता है.

मेरी सौरभता से सारी प्रकृति सुरभित है.
मुझसे से ही मनमोहित और श्रृंगारित है.

मैं डालियों में इतराता अच्छा लगता हूँ.
मैं अहर्निश खिलके खिलना चाहता हूँ.

मैं इन पेड़ों की गोद में सदा इठलाता हूँ.
मैं इन पेड़ों की गोद में ही प्यार पाता हूँ.

मुझे मत सताओ, डालियों से दूर न करो.
मेरे दर्द को तनिक समझो, अहसास करो.

इस हरी-भरी हरियाली पर कृतार्थ करो.
अपने मानव धर्म को चरितार्थ करो.

आओ मिलकर संकल्प करें

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु"

आओ मिलकर संकल्प करें,
इस नव वर्ष को सुखद बनाएँ.
कुछ नया करें, कुछ नया सोचें,
चलो एक नया संकल्प दुहराएं.

यह नव वर्ष एक अवसर है,
हमारा कर रहा यह आह्वान है.
इस अवसर को हम न भुलाएँ,
आओ करें इसका सम्मान है.

नव वर्ष की बेला एक आस है,
एक प्रेरणा है और विश्वास है.
हमारी संकल्पों का आगाज है,
भूली स्मृतियों का अहसास है.

आओ सब कुछ अच्छा करें,
सारे गीले-शिकवों को मिटाएँ.
नफरतों को प्यार में बदले,
एक दूसरे के गले लग जाएँ.



मन के हारे हार और मन के जीते जीत

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु"



मानव का सबसे बड़ा शक्तिपुंज उसका मन है और इस संसार में सबसे शक्तिशाली हमारा मन है। मन की गति इतनी तीव्र है कि वह कुछ ही सेकंड में पूरे ब्रह्माण्ड का भ्रमण कर लेता है। यदि मन चाहे तो पूरे विश्व को जीत सकता है। मन हमारे पूरे जीवन का सूत्रधार होता है। मन से ही हमारा वर्तमान और भविष्य निर्धारित होता है। मन से ही हमारा पूरा जीवन संचालित होता है। मन के बिना हमारा जीवन एक पल भी आगे नहीं बढ़ सकता है। हमारी इंद्रियाँ मन से ही संचालित होती हैं। इन इंद्रियों का सारथी हमारा मन ही होता है। हम अपने सारथी को नित्यप्रति यह आदेश करते रहें कि वह इंद्रियों को अच्छे भले बुरे कर्मों का भान कराता रहे और यह प्रयास करता रहे कि हमारी इन्द्रियाँ अच्छे कर्मों की ओर प्रेरित होती रहें। इस संसार में शक्तिशाली व्यक्ति वही है जिसने अपने मन को वश में कर लिया हो, जो स्वयं अपने मन को संचालित करता हो।

लेकिन ठीक इसके उल्टे यदि मन ने किसीको अपने वश कर लिया हो, जो मन के इशारे से चलता हो ऐसा होना बड़ा खतरनाक है। व्यक्ति यह तय नहीं कर पाता कि वह सही है या गलत। गलत होना भी उसे सही लगता है और यही स्थिति खतरनाक है। यह स्थिति मानव समाज के लिए, देश के लिए, धर्म के लिए घातक हो सकती है। देश धर्म समाज का पतन होने से यदि बचाना है तो हमें अपने मन को जीतना होगा। मन को जीत गए तो पूरे संसार को जीत गए और यदि मन से हार गए तो समझो पूरे संसार से हार गए अपने आप से हार गए।

इसीलिए कहा जाता है कि-

"मन के हारे हार है, मन के जीते जीत"

फिर बच्चे बन जाएँ

रचनाकार- धारणी सोनवानी 11वीं शा. उ. मा. वि. पहाड़ोर (पाटन) दुर्ग



मन करता है बारिश में हम
फिर बच्चे बन जाएँ.
नाचे गाएँ खेले कूदें
तितली बन उड़ जाएँ.

मेघा खूब बरसे और
हम उसमें भीग जाएँ.
मम्मी बनाती पकौड़े,
चलो मजे से खाएँ.

पक्षियों की तरह हम भी,
मस्त मगन उड़ जाएँ.
सूरज चाचू और चंदा मामा से,
मिलकर हम आएँ.

मेघा रानी के महल को,
हम भी देख के आएँ.
उसके घर में जाकर के हम,
हल्ला खूब मचाएँ.

आसमान की ठंडी छाँव में,
हम बच्चे सो जाएँ.
सड़कों के पानी में हम,
दौड़ खूब लगाएँ.
मम्मी की जब डाँट पड़े तब,
चुपके से घर आएँ.

स्वस्थ तन-स्वस्थ मन

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु"



एक कहावत है कि-

स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का विकास हो पाता है। यह बात बिल्कुल सत्य है, यदि हमारा शरीर स्वस्थ रहेगा तभी हमारे मन मस्तिष्क में सुंदर और सही शिक्षा, संस्कार, बुद्धिलब्धि, क्षमता का विकास हो पायेगा। इसके अभाव में यह सम्भव ही नहीं है। अपने शरीर को स्वस्थ रखने के लिए उचित आहार-विहार की अत्यंत आवश्यकता है। उचित आहार- विहार होगा तभी हमारे शरीर के साथ-साथ हमारा मस्तिष्क भी स्वस्थ और विकसित हो पायेगा। कहा गया है-"जैसा खाये अन्न-वैसा बने हमारा मन."

स्वस्थ शरीर और स्वस्थ मस्तिष्क के लिए आहार-विहार पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

हमारा शरीर स्वस्थ रहता है तो यह प्रकृति बहुत सुंदर और प्यारी लगती है। हमारे मस्तिष्क में सकारात्मक विचार, चिंतन, भावनाओं का उचित विकास हो पाता है और हमारी मनोभावनाएँ परिष्कृत सुंदर बन पाती हैं। स्वस्थ शरीर के बिना इसकी अपेक्षा करना सम्भव नहीं है।

सहारा

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु"



शरद ऋतु की कड़कड़ाती ठण्ड, कोहरे में लिपटी साँझ जब एक बुजुर्ग, बेसहारा, आँखों की रोशनी से हीन, सरोवर में पद प्रक्षालन हेतु लड़खड़ाते हुए किनारे पर उतरता है. जैसे ही उसने अपनी लाठी छोड़कर हाथ जल में डाले, उसका सहारा लाठी छिटककर, गहरे सरोवर की लहरों में गोता लगाती दूर चली जाती है.

वह दृष्टिहीन बुजुर्ग, अपनी लाठी पाने के लिए जट्टो जहद करने लगा, पर लाठी, लहरों पर तैरती हुई दूर जा चुकी थी.

वह बुजुर्ग बेसहारा हो गया था. आने जाने वालों से सहायता के लिए खूब गिड़गिड़ाया पर किसी ने नहीं सुनी.

पास में खड़े छोकरे बुजुर्ग का सहयोग करने की बजाए, उसका मखौल उड़ाने लगे.

वह बुजुर्ग निराश होकर, दुखी होकर वहीं बैठ गया और कहने लगा-

हे भगवान! अब आप ही सहारा हो.

बुजुर्ग ऐसा सोच रहा था तभी मास्टर जी अचानक उस सरोवर के किनारे आ पहुँचे. उस बुजुर्ग को देखकर ठिठक गए.

और फिर पूछने लगे "कौन हो बाबा"?

बुजुर्ग ने अपना परिचय देते हुए मास्टरजी को पूरी बात बताई.

मास्टर जी की नजर दूर लहरों के बीच तैरती लाठी पर पड़ी. मास्टर जी ने बिना देर किए कड़कड़ाती ठंड में सरोवर में छलाँग लगा दी और लाठी लाकर उस बुजुर्ग को दे दी. लाठी वापस पाकर वह बुजुर्ग फूला नहीं समाया. उसकी आँखों में मानो रोशनी की चमक आ गई.

बुजुर्ग मास्टर जी को आशीष देते हुए बोले -

जीते रहो बेटा! जीते रहो!!

छोकरे दूर से देख रहे थे. मास्टरजी ने उन्हें खूब फटकारा. कहा-

क्या यही मानवता है?

एक बेसहारा बुजुर्ग की सहायता करने की बजाय उसका उपहास कर रहे हो. तुम्हारी संवेदनाएँ मर चुकी हैं. तुम लोगों को शर्म नहीं आती. यह बुजुर्ग अंधा नहीं है तुम लोग ही अंधे हो गए हो. लड़कों को अपनी गलतियों का अहसास हो गया. शर्मिदा होकर वे सब अपने किये पर माफी माँग रहे थे.

डोकरी दाई के जोरन

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु"

मंझन के बेरा म डोकरी दाई ओईरछा तीर ल खनत अपने अपन बड़बड़ात रहय.ठीक अतके बेरा ओकर बेटा बुधारु ह किंजर के आईस. ओकर बड़बड़ाए ल सुनके ओकर नाती सुखाऊ हर कुरिया ले आगे.

बुधारु अपन बेटा सुखाऊ ल कथे-

"कस रे सुखाऊ घर के पाछु कोला मंझन के बेरा म कोन हर काय खनत हावे? त बुधारु के बेटा हर कथे- "डोकरी दाई हर तो आय ददा!"

अतका ल सुनके बुधारु ह धरा-रप्टा घर के पाछु कती गिस.

बुधारु ह आपन दाई ल कथे-

"कस ओ दाई झिटका सही तोर देह ह निच्चट सुखागे हे,अउ ऊपर ले ठाड़ मंझन के बेरा म तय हर एकरा काय करत हच" त बुधारु के दाई ह कथे- "अरे!!चुप्पे र रे!!चटरहा!!चटर-चटर मारे ल छोड़.अउ मोर तीर म आके देख मेहर काय चीज ल खनत हावाँ."

ले बता तीर म आगे हँव.बुधारु ह कथे.

ओखर दाई फेर कथे-

"देख रे बुधारु! ये सब्बो ल तुमन ये धरती म गड़िया दे ह.एला देख के मोला अईसे लागत हे जइसे,तुमन हमर पुरखा के चिन्हारी हमर पुरखा के पूँजी,अउ हमर कुल-खूंट के चाल-चलन ल धरती म गड़िया दे ह. ए सब के बिना हमर जिनगी हर अंधियार अउ अद्धर आय."

देख रे बुधारु!आज ए सब ल धरती के भीतर माटी म सनात देखेंव त मोर जी हर कलप गे. अउ आजकल कलजुग के चाल-चलन ल देख के मोर जी रखमकखा जाथे. मोर छाती म भुरी बर जाथे. एमन ल माटी म गड़े देख के मेहर निकाले ल भीड़ गय ह. कई दिन ल कहे फेर मोर गोठ ल कोनो नई चेत करिस. त मेहर खुद भिड़े हाँव."

ए करा के किलिल-बिलील ल सुनके घर-भर के सब्बो माई-पिला ओ मेर आ गे

डोकरी दाई ह किथे-

"बने करे हावा सबो झिन आ गे व .अब तुमन मोर एक-एक ठँन गोठ ल सुनिहा अउ एला गंठिया के धर लिहा. तइहा के जमाना ल अब बड़हा लेगे!"



अब तो कलजुग आगे हे!

जेला देखा उही हर अपन धरम-करम, नैंग-बड़ई अउ पुरखा के रिवाज ल भुला गे हे. कोन-जानी अब ये मनखे अउ जग के का होही!!"

उही करा डोकरी दाई के नाती सुखारु हर कान गड़िया के गोठ ल सुनत रहय.

त ओहर असकट्टा गे अउ फेर कथे-

कस ओ डोकरी दाई तेहर काय-काय गोठियात हसाहमन ल कछु समझ नई आत हे, थोरकुन फरी-फरी बात ल बता!!"

अतका सुन के डोकरी दाई भन्ना गे. अउ किटकिटा के किथे-

"चुप्पे र रे लपरहा!! कुछु ल जानस न समझस!! त सब्बो झन सुन लेवा- मोर बिहाव ह ननपन म हो गे रिसे."

अउ जे बरस म मोर गवन-पठौनी होइस, त मोर दाई-ददा ह, कोउनो दहेज म तुमन कस कलजुगहा चीज नई दे रिसे. दे रिसे त गिन-गिन के जोरन-भारन. जे जोरन-भारन हर हमर पुरखा के चिन्हारी, पुरखा के पूंजी, हमर संस्कृति के चिन्हा आय. इही हर हमर जिनगी के आधार आय. जेला तुमन कलजुग के फेर मे सफा-सफा भुला देहा. आज मोर सब्बो जोरन-भारन ला तिरिया दे ह. सब ल भुइँया म गड़िया दे हा. मोला अइसे लागत हे जइसे मोर पुरखा के पूंजी ल गड़िया देहा. मोर ददा ह मोला जाँतां, ढेंकी-बहना, सील, सिलौटी, कोटना, चरिहा,

झउहा, सुपा, बाहरी, जोरे रिसे. तुमन जे दिन म अवतरे नई रहा, अउ अवतरें के बाद म इही सब जोरन-भारन के भरोसा म तुमन ल पाले-पोंसे हव. इही जोरन के भरोसा म ये धरती दाई के सेवा करे हन, अउ ये धरती ह हमन ल धन-धान्य ले भर दिस. जेला घर म ही रही के एक झूल- झुलहा, पहाती टेम ले, बोरा भर धान ल कूट दारन. अउ काठा भर चाउर ल जाँतां म पीस के अंगाकर-चीला बनावे, सील म चटनी पीस के खवा-पिया के बुता रेंग देवन.

हमन कखरो भरोसा म नई रहेन. इही जिनगी के अधार ल तुमन गड़िया दे ह.

आज मोर दाई-ददा के जोरन अउ मोर डोकरा के चिन्हा ल सम्हाल के रखे ल लागही. तभे तुंहर भलाई अउ उन्नति हो पाही. अतका गोठ ल गोठीयात-गोठियात डोकरी दाई ह रो दारिस.

तहां ल काय बात कहिबे! घर-भर के सब्बो झन ल बात समझ म आगे. अउ डोकरी दाई के गोड़ तरी गिरगिन. अउ डोकरी दाई के जोरन-भारन ल सम्हाल के रखे खातिर भीड़ गिन. डोकरी दाई ह फेर कुलकुल्ला हो गे.

मेरा स्कूल मेरा भविष्य

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु"

वह स्कूल का पहला दिन था,
जो आज तलक मुझे याद है.
वह दिन कैसे भूल सकता हूँ,
जो रहता यादों में मेरे साथ है.



मैं गुमसुम था, सहमा हुआ था,
मैं यहां-वहां ओट में छुपा था.
मैंने माँ से फरियाद किया था,
माँ ने स्कूल भेजकर दम लिया था.

मैं करता रहा माँ से फरियाद,
माँ मुझे स्कूल नहीं जाना है.
पिता ने तभी टॉफी दिलाया था,
माँ ने कहा स्कूल जरूर जाना है.

मैं कई बार बहाने बनाया था,
पर पिता ने प्यार से समझाया था.
स्कूल जाओगे तो ज्ञान पाओगे,
और बड़े होकर कुछ बन पाओगे.

वो पहला दिन मेरा भविष्य था,
मेरी दशा-दिशा तय कर दिया था.
मेरा मंजिल मुझे दिख गया था,
चुपचाप स्कूल खाना हो गया था.

आम फलों का राजा है

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु"

आम फलों का राजा है
लगता हरदम ताजा है.

बच्चों का मन ललचाता है,
सभी के मन को भाता है.

पीने में बड़ा मजा आता है,
जब माजा तू बन जाता है.

कच्चे में तू हरा दिखता है,
पके में तू पीला हो जाता है.

तू आमरस भी बन जाता है,
तभी चटकदार कहलाता है.

तू चटक चटनी बन जाता है,
तू ही अचार बन इतराता है.

तू ही अमराई को महकाता है,
जब बौरों से ही लद जाता है.

कोयल को तू ही लुभाता है,
तब कोयल कूकता जाता है.

तू बसन्त का सन्देशा लाता है,
प्रकृति में सौंदर्य भर जाता है.



मेला

रचनाकार- अनिता चन्द्राकर



नदी किनारे लगता मेला,
सबके मन को भाता मेला.

कहीं खिलौने, कहीं मिठाई,
ढेरों खुशियाँ देता है मेला.

झूलों पर बच्चे झूलते जाते,
हँसते गाते और धूम मचाते.

दिन भर मेले में घूमते रहते,
चारों तरफ वे नजर घुमाते.

बजती बाँसुरी की धुन कहीं,
डम-डम बजते डमरू कहीं.

तरह-तरह के जहाँ खिलौने,
लगता बच्चों का मन वहीं.

शरारतें बचपन की

रचनाकार- अनिता चन्द्राकर



दुनिया भर की दौड़ लगाते, बन जाते वे छुकछुक रेल.
धूल-मिट्टी गलियाँ आँगन में, तरह-तरह के खेले खेल.

दुनियादारी से क्या लेना, पल में झगड़ा पल में मेल.
निष्कपट निश्छल सबका बचपन, रखते न मन में कोई मैल.

धूप हो या हो बारिश, वो तो है अपने मन के राजा.
कभी चलाते कागज की कश्ती, कभी बजाते बाजा.

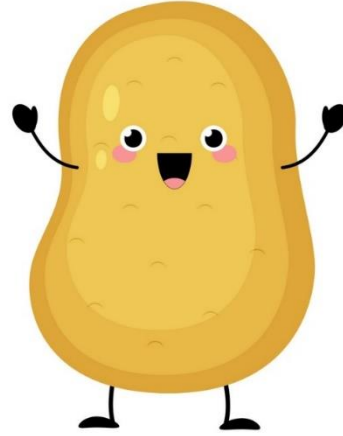
पेड़ों पर चढ़ते, झूला झूलते, तोड़े फल मीठा ताजा.
उनकी टोली धूम मचाती, खोले खुशियों का दरवाजा.

तारों में ढूँढ़े चोर सिपाही, चाँद में पा लेते वे बुढ़िया.
तितली के पीछे भागते, कभी चढ़ते छत की सीढ़ियाँ.

दादा-दादी से सुने कहानी, माँ से सुने मधुर लोरियाँ.
पल भर में आती मीठी नींद, सपनों से भरी अँखियाँ.

आलू भालू

रचनाकार- योगेश्वरी तंबोली



आज लानेव एक ठन आलू,
ओमा निकलिस करिया भालू.
ओ हर रहिस अड़बड़ सुन्दर,
जाने कब ले रहिस अन्दर.

भालू रहिस नाजुक पूछी पतली,
जैसे छुएं मैं हर ओला कटली.
सोंचत ही मोला चढ़ गय बुखार,
ये मैं का कर दारेंव यार.

भालू कहिस मोला निकाल,
तोला बताहुं एक ठन सवाल.
आलू सब्जी बन थे रसदार,
तै लागथस बड़ समझदार.

वक़्त की गाड़ी

रचनाकार- प्रीतम कुमार साहू



वक़्त की गाड़ी है वक़्त के साथ चलेगी,
उगता हुआ सूरज भी शाम को ढलेगा.

ज़ख्म है जिस्म में तो मलहम भी मिलेगा,
आज है खुशी तो कल गम भी मिलेगा.

बागों में कलियाँ हैं तो फूल भी खिलेगा,
महकेगा चमन तो कभी काँटा भी चुभेगा.

कभी जीत मिलेगी तो कभी हार मिलेगी,
कभी पतझड़ मिलेगा तो कभी बहार मिलेगी.

कर रहे हो मेहनत तो फल भी मिलेगा,
दुनिया में हर समस्या का हल भी मिलेगा.

थक कर ना बैठ ऐ मंजिल के मुसाफिर,
आज नहीं तो कल मंजिल भी मिलेगी.

जीने की कला

रचनाकार- सीमा यादव



खुशी -खुशी हर काम करना.
जीवन में कभी निराश न होना.

अपने से बड़ों का सदा आदर करना.
अपने से छोटे को सदा स्नेह व प्रेम देना.

जीवन पथ में न किसी को छोटा समझना.
न किसी से स्वयं को छोटा समझना.

सबकी जीत में विश्वास करना.
सबकी जीत में खुशी मनाना.

अपने हो या पराये सदा सही पथ दिखाना.
कभी किसी को बेवजह न सताना.

बिजली दीदी

रचनाकार- महेन्द्र साहू "खलारीवाला"

तुम न होती बिजली दीदी,
रातों को जगमग करता कौन?
तुम न होती तार की रग-रग में,
सबको दूरदर्शन कराता कौन?

बिन बिजली गर्मी के मौसम में,
उमस दूर भगाता कौन?
तुम न होती तो भला बताओ,
कूलर, ए.सी. चलाता कौन?



आविष्कार न हो पाता तुम्हारा,
तो भला, वृहद आयोजन कराता कौन?
भीड़ भरे जलसे, समारोह में,
मुखिया को सुन पाता कौन?

तुमसे मन के तार जुड़े हैं,
तुमसे घर संसार जुड़े हैं.
तुमसे बिछड़े यार जुड़े हैं,
दूरस्थ बच्चों से माँ-बाप जुड़े हैं.

तुम हो तो शहर से गाँव जुड़े हैं,
तुमसे लोगों के व्यापार बढ़े हैं.
तुमसे देश का विकास बढ़ा है,
देश संग निरत विदेश जुड़े हैं.

राह आसां बनाता चलूँ

रचनाकार- महेन्द्र साहू "खलारीवाला"



जीवन में कितने भी गम हो,
मैं नित खुशियाँ बाँटता चलूँ.
चाहे सैकड़ों काँटे हो राहों पर,
मैं राह आसां बनाता चलूँ.

मंजिल की डगर चाहे तम हो,
एक नया आशियां बनाता चलूँ.
लक्ष्य हो चाहे कितनी भी दूर,
मैं सारी दूरियां मिटाता चलूँ.

जीवन पथ पर हो स्याह रात,
विभावरी में कांति लुटाता चलूँ.
हो चाहे मुश्किलों का सामना,
मैं दुरुहता को आसां बनाता चलूँ.

जीवन में प्रतिपल खुशियाँ ही हो,
छोटी-छोटी खुशियाँ ढूँढता चलूँ.
उन छोटी खुशियों को जीता चलूँ,
हँसता रहूँ, औरों को हँसाता चलूँ.

आसमां छूने का मन करता है

रचनाकार- महेन्द्र साहू "खलारीवाला"



आसमां छू जाने का मन करता है,
समंदर पार उतरने का जी करता है.
दूर नीलाम्बर में उड़ते हैं जैसे विहंग,
हकीकत में उड़ने का मन करता है.

हसीन दुनिया की सैर करने को जी करता है,
यूँ चाँद तारे छू जाने का मन करता है.
क्या-क्या नहीं उठ रही मन में अभिलाषा,
सम्पूर्ण तृष्णा पूर्ण करने का मन करता है.

दुनिया में गमों की लगी है झड़ियाँ,
उन गमों से मेरा गम बहुत कम है.
औरों की खुशियों के लिए खलारीवाला,
पुष्प बनकर बिखर जाने का मन करता है.

हाँ शरद ऋतु आई है

रचनाकार- महेन्द्र साहू "खलारीवाला"



धरा पर मतवाली शरद ऋतु आई है.
सबके हृदय में मकरंद बन समाई है.
हरी-भरी दूब पर शबनम नजर आई है.
हाँ शरद ऋतु आई, हाँ शरद ऋतु आई है.

बागों में कली मंद-मंद मुस्काई है.
तड़ागों में लहराती हिलोरें उठ आई है.
चहुँ-दिसि धुंध की झीनी सी चादर छाई है.
हाँ शरद ऋतु आई, हाँ शरद ऋतु आई है.

साक्षात दर्शन को प्रकृति पास बुलाई है.
उपवन में सतरंगी तितलियाँ मंडराई हैं.
प्रकृति भी इस मौसम में खूब इठलाई है.
हाँ शरद ऋतु आई, हाँ शरद ऋतु आई है.

इनकी सुंदरता में अनुपम मादकता छाई है.
पर्वत घाटी देख मन में बजती शहनाई है.
विहंगों का कलरव मीठा तराना गुनगुनाई है.
हाँ शरद ऋतु आई, हाँ शरद ऋतु आई है.

उन खोहों, दरख्तों के दर्शन मन लालायित हैं.
नव कोपलों की भाँति नव चेतन पल्लवित है.
शरद ऋतु की गुनगुनी धूप उर आनंद समाई है.
हाँ शरद ऋतु आई है, हाँ शरद ऋतु आई है.

कोरोना भाग जायेगा

रचनाकार- डॉ. कमलेंद्र कुमार श्रीवास्तव

चारों ओर सन्नाटा पसरा और अंधियारी छाई है,
क्रूर कोरोना ने मेरे भैया अपनी धूम मचाई है.
और उग्र हो गया कोरोना, और तबाही लाएगा,
कोरोना रूपी ये अंधियारा शीघ्र भाग ही जायेगा.



गली मोहल्ले ऐसे सूने, जैसे राक्षस कोई आया,
मास्क लगा झाँक रहे सब, हवा में वायरस छाया.
जाने कितने मृत हो गए, और कितनों को खायेगा.
कोरोना रूपी ये अंधियारा शीघ्र भाग ही जायेगा.

साथ में ओमीक्रान घूम रहा बच कर इससे रहना,
नए वर्ष का नया वायरस हम सबका है कहना.
हम सब जागरूक बनेंगे अगर ये मात ही खायेगा,
कोरोना रूपी ये अंधियारा शीघ्र भाग ही जायेगा.

मनुष्य बहुत ही उलझ रहा व्हाट्सएप के मैसेज से,
सही बस उसकी मानो जो निकले डॉक्टर के मुँह से.
सरकार के साथ चलेंगे हम तभी हार ये पायेगा,
कोरोना रूपी ये अंधियारा शीघ्र भाग ही जायेगा.

मास्क ग्लब्स और सेनेटाइजर का प्रयोग करेंगे हम,
सभी वैक्सीन लगवाएँगे फिर काहे का गम.
बहुत तबाही ला दी तूने अब मार ही खायेगा,
कोरोना रूपी ये अंधियारा शीघ्र भाग ही जायेगा.

पिंक ब्रश

रचनाकार- प्रीतम कुमार साहू



पिंक कलर का मेरा ब्रश,
हर दिन करता हूँ मैं ब्रश.

दिखते पीले जिनके दाँत,
साफ नहीं है उनके दाँत.

दाँतों की जो करें सफाई,
इसमें है दाँतो की भलाई.

जो दिन में दो बार ब्रश करता,
कीटाणु उनसे दूर ही रहता.

ब्रश करना,करें जो बन्द,
मुख से उनके आये दुर्गन्ध.

सौ बातों की एक ही बात,
स्वच्छ रखिये अपने दाँत.

जल

रचनाकार- प्रीतम कुमार साहू



टप-टप टप-टप करता नल,
व्यर्थ ही बहता नल का जल.

जो जल का महत्व समझता,
कभी व्यर्थ ना जल बहने देता.

जितना जरूरत लो उतना जल,
टपकने न दे कभी नल का जल.

संरक्षित करो बरसात का जल,
जल की समस्या का होगा हल.

सपने

रचनाकार- प्रीतम कुमार साहू



देखें है हमने भी, सुंदर से सपने,
यकीन है वो सपने हो जायेंगे अपने.

अगर ना हो सके, मेरे सभी सपने पूरे,
तो कोई गम नहीं, पर रह जायेंगे अधूरे.

अब सपने हमारे, मेहमान तो नहीं,
उनसे हमारी कोई, पहचान तो नहीं.

सपने ना सही, कुछ मिला तो सही,
जीत का ताज न सही, हार ही सही.

सपने देखना कोई गुनाह तो नहीं,
हर सपने पूरे हो जरूरी तो नहीं.

माँ-बेटी का रिश्ता प्यारा

रचनाकार- प्रीतम कुमार साहू



माँ बेटी का रिश्ता प्यारा,
सब रिश्तों से न्यारा है.

नौ महीने तक कोख में रहकर,
जब दुनिया में बेटी आती हैं
दर्द सहकर भी खुश हो जाती
वो सिर्फ माँ ही होती है.

माँ की उंगली पकड़ के बेटी
जब वो चलना सीखती है
गिरकर उठती, उठकर गिरती
उंगली पर नहीं छूटती है.

माँ बेटी का रिश्ता प्यारा,
सब रिश्तों से न्यारा है.

तीज पर्व पर, माँ जब अपने,
मायके जाने लगती है.
माँ संग जाने की जिद पकड़
अशक बहाने लगती है.

संग में जाती पनघट माँ के
मटका भर-भर लाती है.
झाड़ू-पोंछा साथ में करती
खाना साथ बनाती है.

माँ बेटी का रिश्ता प्यारा,
सब रिश्तों से न्यारा है.

अपने माँ के साथ नहाती
दिल की अपने बात बताती.
काम में माँ के हाथ बटाकर
माँ-बेटी का फर्ज निभाती.

बेटी का जब ब्याह रचाती,
दुल्हन सा श्रृंगार कराती,
लेकर यादें वो मायके की,
अपने घर ससुराल को जाती.

माँ बेटी का रिश्ता प्यारा,
सब रिश्तों से न्यारा है.

मनमोहक प्यारी बगिया

रचनाकार- प्रीतम कुमार साहू

प्रकृति का सौंदर्य बढ़ाती,
चहुँ ओर खुशबू फैलाती.
लोगों में उत्साह जगाती,
जीवन जीना हमें सिखाती.
मनमोहक प्यारी बगिया.



तरह-तरह के फूल खिले हैं,
भंवरे भी मंडराते मिले हैं.
बच्चे कलियाँ फूल तोड़ते,
आपस में मिल-जुल खेलते.
मनमोहक प्यारी बगिया.

सुबह-शाम टहलने जाते,
बच्चे बूढ़े साथ में चलते.
उछल कूद, बगिया में करते,
तन-मन को स्वस्थ रखती.
मनमोहक प्यारी बगिया.

कभी पतझड़, कभी बहार,
जीवन में मत मानो हार.
सुख-दुख में साथ निभाती,
मन हमारा हर्षित करती.
मनमोहक प्यारी बगिया.

मूर्तिकार

रचनाकार- संकलित



एक लापरवाह व्यक्ति था, वह अपने काम को बेहतर तरीके से करने की कोशिश नहीं करता था. एक बार वह अपने एक मूर्तिकार मित्र से मिलने गया. मूर्तिकार एक आदमकद मूर्ति पर काम कर रहा था, उसके पास बिल्कुल वैसी ही एक और मूर्ति बनी हुई रखी थी.

उसने मूर्तिकार से पूछा- यह मूर्ति कहाँ लगाई जाएगी?

मूर्तिकार ने कहा- यह 12 फीट ऊँचे एक स्तम्भ पर लगाई जाएगी.

वह व्यक्ति फिर बोला- क्या दो मूर्तियाँ बनानी हैं?

मूर्तिकार बोला- नहीं, बनानी तो एक ही है. पहले मैं वह मूर्ति बना रहा था, लेकिन उसमें एक खराबी आ गयी, इसलिये यह दूसरी मूर्ति बना रहा हूँ. व्यक्ति बोला- लेकिन जरा सी खराबी इतने ऊँचे स्तम्भ से दिखेगी ही नहीं, किसी को पता भी नहीं चलेगा.

बात सुनकर मूर्तिकार मुस्कुराया और बोला- यह सही है कि मूर्ति की खराबी का पता किसी को नहीं चलेगा, लेकिन इसका पता मुझे तो है न?

मूर्तिकार की इस बात का गहरा प्रभाव उस व्यक्ति पर पड़ा और उसने भी अपना काम पूरी तल्लीनता से करने का संकल्प ले लिया.

कोरोना के पीरा

रचनाकार- तुषार शर्मा "नादान"



बाहिर कहुं थोरको निकले ता,
पुलिस हा लठियावत हे.
मास्क पहिरे बर भूलेस ता,
कोरोना हा गठियावत हे.

थोरको इलाज म देरी हे ता,
रोगी तुरते पटीयावत हे.
अपन जीव ला बचाए बर सब,
डॉक्टर तीर जोजियावत हे.

ऑक्सीजन बिस्तर नइ बाचिस,
इहां उहां फिफियावत हे.
मनखे हा मनखे ला देख के,
दुरिहा ले छटियावत हे.

गरीब सेनिटाइजर कहां ले पाहि,
धुर्रा मा मटियावत हे.
जऊन हा जईसने कहत हे,
तेला सब पतियावत हे.

'नादान' प्राणायाम योग कर,
स्वस्थ होके अटियावत हे.
देसी नुस्खा, काढ़ा फिटकिरी से,
प्रतिरोधक क्षमता बढ़ावत हे.

लगवाके दूनों टीका ला,
बीमारी ले खुद ला बचावत हे.
जुड़ जावन हम सब प्रकृति सन,
इही एक बात सुहावत हे.

बतायेंव जब मन के पीरा ल,
ता जम्मो झन गोठियावत हे.
घर में खुसरे खुसरे येदे,
टुरा हा सठियावत हे.

तो क्या हुआ?

रचनाकार- सीमा यादव



मैं नादान हूँ तो क्या हुआ?
सबकी चालाकी समझता हूँ.

मैं छोटा हूँ तो क्या हुआ?
सबकी बात समझता हूँ.

मैं मासूम हूँ तो क्या हुआ?
सबकी भावना समझता हूँ.

मैं अज्ञानी हूँ तो क्या हुआ?
सबकी परीक्षा समझता हूँ.

प्रेरणा गीत

रचनाकार- सीमा यादव



मैं बेटी हूँ,
मैं सृष्टि हूँ
मैं संतति हूँ.

मैं बेटी हूँ,
मैं शक्ति हूँ,
मैं लक्ष्मी हूँ.

मेरे गुण अनन्त,
मेरी भाषा अनन्त.
मेरा नाम अनन्त,
मेरी रचना अनन्त.

शरद ऋतु

रचनाकार- सुशीला साहू "विद्या"



आया मौसम सर्दी का, शीत सुहानी शाम.
देख कड़ाके ठंड में, दुबके रह निज धाम.
दुबके रह निज धाम, आज मौसम बेदर्दी.
पड़ी ओस की बूंद, ओढ़ ली ऊनी वर्दी.
सुन विद्या की बात, शरद ऋतु सबको भाया.
ओढ़े कम्बल शाल, सर्द मौसम है आया.

महकी महकी है फिजा, शीतल चली बयार.
ऋतु जब आती शीत की, लगती ठंड अपार.
लगती ठंड अपार, जला लो आग अँगीठी.
सुखद गुलाबी ठंड, पी लें कॉफी मीठी.
सुन विद्या की बात, देख चिड़िया अब चहकी.
बिखरी खुशबू भोर, फिजा है महकी-महकी.

ठंडी ऋतु है आ गयी, धरा हुई गुलजार.
ओस बूंद पत्तों पड़ी, लगे मोतियन हार.
लगे मोतियन हार, बूंद ये सबको भाती.
सर्द भोर की धूप, सुखद गरमाहट आती.
कहती विद्या आज, थाल सजती है मंडी.
सुहावनी है रात, हर सुबह हो गयी ठंडी. +

आलसी कऊंआ

रचनाकार- सुरेखा नवरत्न

एक ठन पीपर के रूख म, एक ठन कऊंआ ह खोंधरा बनाय रहय. ओ कऊंआ ह अब्बड़ आलसी रहय. दिन भर खोंधरा म खुसरे रहय, अऊ मुड़ी ल अपन निकाल के रूख के ऊपर ल चारो मुड़ा ल देखत रहय. चारा के खोज म संगी मन संग करा एति ओती कोनो कोती घलो नइ जाय. भूख लागय त चट ले उठय अऊ सीधा चौकीदार कका के छानही म उड़त-उड़त जावय, काबर की चौकीदारिन काकी ह रोज के कुछु न कुछु बनाके छानही म सुखोवय. एक दिन काकी ह गिनके भर्करा लाडु ल सुखोय रहिस, काबर कि रोज कऊंआ अपन चारा बार सुखोये जिनिस खा दय काकी ह मने मन म गुनय, का ह लेग जाथे. फेर आज ओहा दांव म रहय, भले घर भीतरी म रहय फेर ओकर चेत ह छानही डहर रहय. कऊंआ ह दस बजती के बेरा कलेचुप आइस, अऊ नरियाईच घलो निहि, एक ठन भर्करा लाडु ल चौंच म धरिस अऊ सररट ले उड़ घलिस. डेना के फड़फड़ के आवाज ल थोरकिन सुनाइच त काय आगे रे कइके काकी दौड़त आईस. त कौआ ह लाडु ल चौंच म धरके उड़त रहय. रा रे तैं कऊंआ कालि तैं आबे त तोर जौंहर ल करहा मने मन सोचीसा।



दूसर दिन काकी ह चार ठन कोतरी के सुस्की ल, छोटकन कागज म पुतकी बना के लाडु सुखोय रहय, तेकरे तीर म मढ़ा दिस. ललचहा कऊंआ ह आईस, त ओकर नाक म सुस्कईन सुस्कईन माहके लागिस. एती ओती ल नजर दऊंड़ा के देखिस, खटबिलई म सुस्की ह दिखत रहय. कऊंआ के लार चुह गे, खाहां कईके टप ले बिनिस, फट ले फांदा ह ओकर मुड़िच ल धर लिस. अब कऊंआ ह फट फट फट फट फटफटाय लागिस. काकी ह पानी भरे बर कुंआ गय रहय. चौकीदार कका ह घर म रहय, कऊंआ ल देखके अब्बड़ खुश होगे. झट ले कऊंआ ल खाल्हे म उतारिस, चुल्हा म आगी ह रम रम रम रम बरत रहय.

डेना पंखरी ल निंद के भुंज डारिच, अऊ नून मिरची के बुकनी निकाल के कऊंआ ल खा डारिस. किस्सा पुरगे आऊ ढेला घुरगे, संगवारी हो.

सीख - लईका हो सीख राखे रहा ओकरे बर आलसी अऊ लालची नई होना चाहिए, लालची मन के असने दसा हो जाथे.

हिन्दी

रचनाकार- दीपेश पुरोहित 'बिहारी'



संस्कृत जननी की जाया, सरस सरिता, तरुणा है हिन्दी.
प्रेम पाश, स्नेह बिंदु, उदारता, संवेदना, करुणा है हिन्दी.

रत्नगर्भा, मही, वसुधा, धरित्री, धरती, उर्वि सा धरातल.
क्षितिज, गगनारम्भ, उदयाचल, दिशा मंडल सा आँचल.

माथे की मणिका, रत्न, नगीना, नग, चिंतामणि है बिन्दी.
दीप्ती, प्रभा, ज्योति, उजाला, रोशनी की चमक है हिन्दी.

उठे तो हाथ, ग्रहण को पाणि, बंधन के लिए हस्त, कर है.
सर्प में दंश, पान को विष, घुले तो जहर, कालकूट, गरल है.

कनक से विषैला कनक, यम से यमुना, काल से कालिंदी.
कर हाथ भी हाथी के सूंड, राजा लेती जनता से, हिन्दी.

अपनी चाल में मस्त है, न ऊधौ का लेना न माधो का देना.
आग बबूला है घर का भेदी, माया मिली ना चना चबैना.

सुन्दरता भी सादगी भी, सौम्यता की परिचायिका हिन्दी.
सहज समेटे मातृत्व अंक में, शुभ-लाभ मंगलदायिका हिन्दी.

शीत ऋतु और बरसात

रचनाकार- ऋषि प्रधान



शीत ऋतु आयी है, जाड़ा सँग में लायी है.
ठिठुर रहे हैं सब घरों में, ले रहे अंगड़ाई हैं.

आग की अंगीठी में सेक रहे सब हाथ हैं,
माँ-पापा और दादा-दादी सब घरों में साथ हैं.

ठंड का डर इतना है कि मुन्नी दादा को ढँकती है,
दादी सब कुछ देख कर मन ही मन तो हँसती है.

त्यौहारों का अब दौर चलेगा धान सभी घर आये हैं,
मेरे प्यारे पापा सबके लिए कुछ-कुछ लाये हैं.

ठंडी इतनी ज्यादा है और अब वर्षा भी आयी है,
माँ भी है खोजती घर में और कहाँ रजाई है.

ठंड के इस मौसम में वर्षा का अब खेल हुआ,
इस सुहाने मौसम में प्रकृति का अनुपम मेल हुआ.

मेरी बगिया

रचनाकार- वसुंधरा कुर्रे

मेरी बगिया बड़ी सुंदर और निराली,
रंग-बिरंगे फूलों और सुगंधों वाली.
तरह-तरह के फूलों से लदी हुई.
मेरी बगिया बड़ी सुंदर और निराली.



मेरी बगिया में है भौरों का बसेरा,
गेंदा, गुलाब, गुड़हल और डगर,
चंपा, चमेली और मोगरा की महक.
जिधर देखो मन हो जाता मतवाला.

मन कहता इतनी सुंदर बगिया,
देखते ही रह जाऊँ मैं.
ना जाऊँ मैं दूर कहीं तुझसे,
सब छोड़कर पास तेरे रह जाऊँ.

चुन-चुन कर मैं बाग लगाया,
मैं हूँ इस बगिया का माली.
एक दिन देखे बगैर,
दूर तुझसे ना रह पाऊँ.

मेरी बगिया बड़ी सुंदर और निराली.
मेरी बगिया बड़ी सुंदर और निराली.

विश्व पुस्तक दिवस

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान



दुनिया भर का ज्ञान हमें,
देती रहती है पुस्तक.
वह ज्ञानी बन जाता है,
जो पढ़ता रहता पुस्तक.

पुस्तक पढ़ कर हम,
महान बन जाते हैं.
डाक्टर वैज्ञानिक पत्रकार लेखक,
देखो पढ़ कर बन जाते हैं.

देश-देश की सैर हमें,
कराती है यह पुस्तक.
घर बैठे सारी दुनियाँ,
घुमाती है यह पुस्तक.

जो पुस्तक से प्यार करता,
वह बड़ा बन जाता है.
उद्धोषक बन कर वह,
सारी दुनिया में छा जाता है.

घर में पुस्तक सदा खरीद कर,
सबको लाना चाहिए.
खुद पढ़े और बच्चों को,
रोज पढ़ाना चाहिए.

विश्व पुस्तक दिवस पर आज,
देना है यह संदेश.
जो पुस्तक प्रेमी होता,
महान कहलाता है वह देश.

नीम का फूल

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान

भीनी-भीनी खुशबू फैला रहा,
देखो नीम का फूल.
प्रदूषण को दूर भगा रहा,
देखो नीम का फूल.

जीवन सुखमय बना रहा,
देखो नीम का फूल.
शुद्ध हवा सबको दे रहा,
देखो नीम का फूल.

मौसम में बहार भर रहा,
देखो नीम का फूल.
सारा समां गुलज़ार कर रहा,
देखो नीम का फूल.

पेड़ पर मुस्कुरा रहा,
देखो नीम का फूल.
हर ओर ताजगी फैला रहा,
देखो नीम का फूल.

सबकी काया निरोगी बना रहा,
देखो नीम का फूल.
अपनी खुशी खूब लुटा रहा,
देखो नीम का फूल.



चलो चाँद पर मम्मी

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान



चलो चाँद पर मम्मी
यहाँ नहीं रहना है.
बहुत बुरे हैं लोग यहाँ के
इनसे बच के रहना है.

चंदा मामा से कह कर
थोड़ी सी जगह माँग लेंगे.
अपने रहने के लिए
एक झोपड़ी डाल लेंगे.

घर के पीछे छोटा सा
आँगन एक बना लेंगे
चाँद पर चल कर मम्मी
अपना जीवन बचा लेंगे.

चाँद पर चल कर मम्मी
इन सब से दूर हो जाएँगे.
चैन से वहाँ रहेंगे,
चैन की रोटी खाएँगे.

चाहे कुछ भी हो जाए
हमें चाँद पर जाना है.
वहाँ पहुँच कर हमको
नई दुनिया बसाना है.

चूहों का प्रण

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान

एक रोज छोटू तिलचट्टा घूमते घूमते बरगद के पेड़ के पास जा पहुँचा. वहाँ उसने देखा कि बहुत सारी चींटियाँ बरगद के पेड़ के नीचे बैठी रो रही थी. चींटियों को रोता देख कर छोटू तिलचट्टे ने पूछा- तुम सब रो क्यों रही हो. क्या मैं तुम्हारे रोने का कारण जान सकता हूँ.



चींटियों की रानी बोली हम सब तीन दिनों से भूखे हैं, कहीं कुछ खाने को नहीं मिल रहा है. अगर इसी तरह हम सब भूखे रहेंगे तो मर जाएँगे. क्या तुम हमारी मदद कर सकते हो?

चींटी रानी की बात सुन कर छोटू तिलचट्टा बोला चींटी रानी पिंटू चूहे के घर पर बहुत सारी मिठाइयाँ रखी हुई हैं तुम सब वहाँ जा कर पेट भर मिठाइयाँ खा सकती हो.

नहीं, हम पिंटू चूहे के घर नहीं जा सकते हैं. सुना है कि पिंटू चूहा और उसका पूरा परिवार चींटियों को पकड़ पकड़ कर खाने लगा है. तुम हमें कहीं और ले चलो.

चींटी रानी की बात सुन कर छोटू तिलचट्टा बोला चींटी रानी, पिंटू मेरा दोस्त है, मैं उससे कह कर तुम सब की सारी परेशानी दूर करा दूँगा. तुम सब मेरे साथ चलो.

सारी चींटियाँ छोटू तिलचट्टे के साथ चल पड़ीं.

पिंटू के घर पहुँच कर छोटू ने सारी बात उससे कह सुनाई.

पिंटू अपने दोस्त छोटू की बात सुनकरन खुश हुआ और बोला आज से सारी चींटियाँ हमारे साथ रहेंगी. इन्हें खाने पीने की कोई कमी नहीं होगी. ये जब तक चाहें यहाँ रह सकती हैं.

पिंटू की बात सुनकर सारी चींटियाँ छोटू को धन्यवाद देने लगीं.

डाक्टर गधा लाल

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान



डाक्टर गधा लाल अपनी स्कूटी से अपने नर्सिंग होम जा रहे थे. रास्ते में आम के पेड़ पर बैठा नटकू बंदर मजे से पके आम खाकर उसकी गुठली फेंक रहा था. डाक्टर गधा लाल को आता देख कर नटकू बंदर को शरारत सूझी और वह जोर से बोला- अरे ओ गधे की औलाद तू कहाँ जा रहा है. पेड़ के नीचे बैठ मैं तुझे पके आम खिलाता हूँ.

कौन है दुष्ट जो मुझे गधा कह रहा है? जरा सामने तो आ. डाक्टर गधा लाल गुस्से में बोले.

मैं हूँ नटकू बंदर लो मैं तुम्हारे सामने आ गया. क्या कर लोगे तुम मेरा गधा कहीं का. नटकू बंदर अकड़ कर बोला.

अरे नटकू सारा नंदनवन हमें डाक्टर गधा लाल बुलाता है. मैं डाक्टर हूँ. मुझे कुछ पता है. मुझे तो तुम एकदम अनपढ़ गंवार लग रहे हो. जा भाग जा यहाँ से. डाक्टर गधा लाल बोले. ओ डाक्टर मुझे तो तू बेवकूफ गंवार लग रहा है. गधे कहीं के. नटकू बंदर बोला.

चल नटकू, सामने से हट जा वर्ना दुलत्ती मारकर तेरा थोबड़ा बिगाड़ दूंगा, कह कर डाक्टर गधा लाल अपने नर्सिंग होम की ओर चल दिए. नटकू ताली पीटकर भाग गया डरपोक, भाग गया डरपोक कहने लगा.

कुछ दिनों बाद नटकू बंदर का पैर एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर कूदते वक्त फिसल गया और जमीन पर गिरते ही उसका पैर टूट गया और सर पर भी चोट लगी. खून बहने लगा.

नटकू बंदर दर्द से बचाओ-बचाओ चिल्लाने लगा.

नटकू की आवाज सुनकर सभी जानवर वहाँ आ गए. नटकू की शरारतों के कारण कोई भी जानवर नटकू बंदर को अस्पताल पहुँचाने को तैयार नहीं था, नटकू बंदर सभी जानवरों से माफी माँगते हुए बोला मैं कसम खाता हूँ कि आज के बाद किसी भी जानवर को परेशान नहीं करूँगा. दर्द से परेशान नटकू रोने लगा.

नटकू को रोते देख हाथी को दया आ गई, वह नटकू को अपनी सूंड से उठा कर डाक्टर गधा लाल के अस्पताल की ओर चल पड़ा. अन्य जानवर भी हाथी के साथ चले. अस्पताल पहुँचकर कर हाथी ने नटकू को चारपाई पर लिटा दिया और डाक्टर गधा लाल से बोला डाक्टर साहब, नटकू पेड़ पर कूदते वक्त जमीन पर आ गिरा जिससे इसका पैर की हड्डी टूट गई है. आप इसका उपचार कीजिए.

नटकू बंदर को देखते ही डाक्टर गधा लाल बोल पड़े इसका इलाज मैं कतई नहीं करूँगा, आप इसे ले जाइए. मैं इस बदमाश का मुँह नहीं देखना चाहता. इसने मुझे बहुत परेशान किया है. मैं इसका इलाज नहीं करूँगा.

नटकू के मम्मी पापा रोने लगे और कहने लगे डाक्टर साहब आप हमारे बेटे को बचा लीजिए. नटकू भी बोला डाक्टर साहब मैं आपसे अपनी गलती पर क्षमा माँगता हूँ, मुझे बचा लीजिए मैं आज के बाद जंगल में किसी के साथ शरारत नहीं करूँगा. नटकू रोने लगा.

डाक्टर गधा लाल को नटकू पर दया आ गई. वे नटकू को समझाते हुए बोले आइंदा तुम किसी को परेशान मत करना. डाक्टर गधा लाल ने नटकू नटकू के पैर में प्लास्टर लगा दिया और बोले सवा महीने तक बिस्तर पर आराम करना.

जब नटकू अस्पताल से जाने लगा तो बोला डाक्टर साहब आप ने मेरी जान बचा कर एहसान किया है उसके लिए मैं आप के कर्जदार रहूँगा. आज से मैं आप को डाक्टर गधा लाल कह कर ही बुलाऊँगा.

नटकू की बात सुन कर डाक्टर गधा लाल हँस पड़े.

जीवन की सीख

रचनाकार- मनोज कुमार पाटनवार



जीवन एक संघर्ष है यह जान लो,
जो लड़ा वही बढ़ा यह मान लो.

बैठे रहने से कुछ नहीं मिलता यह जान लो,
मेहनत करने वाले आगे बढ़ते हैं यह मान लो.

सोना निखरता है आग में तप कर यह जान लो,
सफलता के लिए परीक्षा देनी होती है यह मान लो.

मेहनत करने से घबराना नहीं तुम ठान लो,
मेहनत का फल मीठा होता है यह मान लो.

दीन-दुखियों की मदद करना तुम जान लो,
सेवा करने से सुकून मिलता है यह मान लो.

सीखने की ललक होनी चाहिए यह जान लो
सीखने वाले ही विद्वान बनते हैं यह मान लो.

जीवन की चुनौतियों को स्वीकारना जान लो,
हर परिस्थिति में मुस्कुराना है यह मान लो.

चिंता को पास आने ना देना यह जान लो,
चिंता बढ़ने से चिता सज जाती है यह मान लो.

माता-पिता की सदैव सेवा करना यह जान लो
माता-पिता ही साक्षात भगवान हैं यह मान लो.

युवाओं के प्रेरणास्रोत

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु"



उठो जागो, और तब तक न रुको जब तक लक्ष्य की प्राप्ति न हो जाए.

ऐसा कहने वाले युग पुरुष, युवाओं के प्रेरणा स्रोत स्वामी विवेकानन्द जी के जन्मदिवस पर हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित हैं.

लेकिन क्या इतना पर्याप्त है?

तो उत्तर है कि यह पर्याप्त नहीं है. यदि हम उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि देना चाहते हैं तो हमें उनके आदर्शों पर चलना होगा. उनके सिद्धांतों का अनुसरण करना होगा.

स्वामी विवेकानन्द ने देश की सेवा, मानव की सेवा, दीन-हीन की सेवा, सनातन धर्म की सेवा की. आध्यात्मिक चिंतन को सर्वोपरि बताया और युवाओं को इसके लिए प्रेरित किया.

स्वामी जी देश की सेवा और जनजन में राष्ट्रीयता की भावना भरने हेतु तत्पर रहा करते थे. उनका मानना था कि सांप्रदायिकता और कट्टरता से देश का भला नहीं होगा और वे इसका विरोध करते थे. उनकी यही उदार भावना सहिष्णुता धर्म, राष्ट्रवाद का आधार है.

स्वामी जी "नर की सेवा को नारायण सेवा माना करते थे." वे कहा करते थे- "नर की सेवा से ही भगवान की भक्ति, आराधना और सेवा हो जाती है." उन्होंने दीन-हीन गरीब और बीमारों की सेवा में अपना जीवन समर्पित कर दिया यही पवित्र भावना उन्हें महान बनाती है.

स्वामी जी ने हमारे देश की संस्कृति, सभ्यता और खोई हुई अस्मिता को बचाने के लिए कश्मीर से कन्याकुमारी तक, पूर्व से पश्चिम तक हिन्दू धर्म की पताका फहराने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ी. उन्होंने शिकागो के धर्म

सम्मेलन में भारत का प्रतिनिधित्व किया.और अपने सम्बोधन की शुरुआत में-"भाइयों और बहनों" कहकर पूरे विश्व से आये लोगों को अपनी ओर आकर्षित कर लिया.

स्वामी जी युवाओं के प्रेरणास्रोत हैं. उन्होंने कहा-"उठो, जागो और तब तक आगे बढ़ते रहो जब तक तुम्हें लक्ष्य की प्राप्ति नहीं हो जाती."

उन्होंने देश की प्रगति और देश के पुनरुत्थान में युवाओं को जिम्मेदार माना. युवाओं का आह्वान करते हुए वे कहा करते थे-युवाओं में शक्ति है, ऊर्जा है, क्षमता है. युवा का दूसरा नाम वायु है, जिसमें सतत आगे बढ़ने की गति, अपार उत्साह और जोश है." वो कहा करते थे-"युवाओं को अपना लक्ष्य निर्धारित कर लेना चाहिए.और उसके लिए कमर कसकर भिड़ जाना चाहिए.

स्वामी जी ने राष्ट्रीयता की भावना को जागृत किया, युवाओं को जागृत किया, युवाओं के धर्म को और उनके कर्तव्यों को जागृत किया.

स्वामी जी ने शिक्षा पर भी सारगर्भित बात कही-शिक्षा ऐसी हो जिससे बालक का शारीरिक, मानसिक एवं आत्मिक विकास हो सके. शिक्षा ऐसी हो जिससे बालक के चरित्र का निर्माण हो, मन का विकास हो, बुद्धि विकसित हो तथा बालक आत्मनिर्भर बने. बालक एवं बालिका को समान शिक्षा देनी चाहिए."

स्वामी विवेकानंद के बारे में जितना भी कहा जाए कम है. स्वामी जी के आदर्श सिद्धान्त और विचार हमेशा प्रासंगिक हैं, और रहेंगे. वे भारत के युवाओं के लिए प्रेरणास्रोत बने रहेंगे.

बागों में बहार है

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु"



बागों में बहार है, फूलों में निखार है,
फूल मुस्काते हैं, कली मन लुभाती है.
भौरें गुनगुनाते हैं, तितली मंडराती है,
करते अठखेलियाँ रसपान करते हैं.

चहुँ ओर चहुँ दिसि, रौनकता छाई है,
नाना फूल कलियाँ, देख मन भायी है.
मन में उल्लास है, और उमंग आयी है,
शीतल सुगन्ध मन्द, हवा चल आयी है.

बागों में बीथीन में, खुशबू भर आई है,
प्रकृति के कण में, मधुमास छाई है.
लाली है सिंदूरी है, पलास मन भाया है,
जहाँ देखो वहीं रंग-रंगीला समाया है.

सुरभित आम है, बौर लिए अमराई है,
नव पल्लव कोपल में, बौर खिल आई है.
पंछियों का कलरव, शुभ सन्देशा लाया है,
दूत है वसन्त की, कोयल की तान आई है.

राज है वसन्त ऋतु, रथ में सवार आए हैं,
प्रकृति है राज-रानी, चार-चाँद ये लगाएँ हैं.
पीले फूल सरसों से, महि मंडप छावाएँ हैं,
पँछी और भ्रमर दल, सुमङ्गल गीत गाएँ हैं.

बिल्ली की सूझबूझ

रचनाकार- टीकेश्वर सिन्हा "गब्दीवाला"



एक खंडहर में एक बिल्ली रहती थी. उसके तीन बच्चे थे. बच्चे चलना सीख गये थे. बिल्ली जहाँ जाती, उसके पीछे-पीछे उसके बच्चे भी जाते. बिल्ली बड़े लाड़-प्यार से अपने बच्चों की परवरिश कर रही थी.

एक दिन खंडहर में एक कुत्ता घुस गया. बिल्ली और उसके बच्चे देखकर कुत्ते के मुँह में पानी आ गया. बिल्ली ने झट से अपने बच्चों को छुपा दिया. स्वयं एक ऊँची दीवार पर बैठ गयी. कुत्ता कुछ नहीं कर पाया. मुँह लटकाये वहाँ से चला गया. बिल्ली ने अपने बच्चों की जान बचा ली.

खंडहर से जाने के बाद भी कुत्ते का ध्यान बिल्ली व उसके बच्चों की ओर लगा रहता था. वह ताक में था कि कब मौका मिले और बिल्ली व उसके बच्चों को चट करे. बिल्ली को भी चिंता सताने लगी थी कि स्वयं और अपने बच्चों को उस धूर्त कुत्ते से कैसे बचाये. उसे लगता था कि वह कुत्ता कभी न कभी जरूर आयेगा.

एक दिन सुबह दस-ग्यारह बजे का समय था. कुत्ते को मनचाहा मौका मिल गया. दबे पाँव खंडहर में घुस गया. उस समय घर पर बिल्ली नहीं थी. कुत्ते की आहत पाते ही बच्चे फटाफट सबसे ऊँची दीवार पर चढ़ गये. कुत्ता भाग-दौड़ करने लगा बच्चों को पकड़ने की फिराक में. "आज तो मैं तुम्हें नहीं छोड़ूँगा. मुझसे तुम तीनों नहीं बच पाओगे. तुम्हारी माँ भी घर में नहीं है; देखता हूँ तुम्हें कौन बचायेगा." दरवाजे पर पैर पसार कर बैठ गया. बच्चे डरकर चिल्लाने लगे.

थोड़ी देर बाद बिल्ली आ गयी. अपने बच्चों के पास पहुँच गयी. उन्हें सहलाती हुई बोली- "बच्चो ! मैं आ गयी. अब मत घबराओ."

"देखता हूँ कि आज तुम और तुम्हारे बच्चे मुझसे कैसे बचोगे." कुत्ता गुर्गया.

"क्या कर लेगा धूर्त! आखिर हमने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है कि हमारे पीछे पड़े हो. किसी को सताना अच्छी बात नहीं है. बहुत बुरा कर रहे हो तुम हमारे साथ. इसका परिणाम तुम्हें अवश्य मिलेगा. जैसी करनी वैसा फल, आज नहीं तो निश्चय कल." आँखें तरेरती हुई बिल्ली बोली.

कुत्ता दरवाजे पर बैठ गया. उसने ठान लिया था कि आज वह बिल्ली व उसके बच्चों का काम तमाम करके ही रहेगा. वह उन्हें ललचाई आँखों से देख रहा था.

बिल्ली अपने बच्चों के साथ सबसे ऊँची दीवार पर हिम्मत बटोरे बैठी थी. उसके दिमाग में एक ही बात चल रही थी कि कुत्ते से कैसे छुटकारा मिले. तभी उसकी नजर खंडहर के पास क्रिकेट खेल रहे बच्चों पर पड़ी. एक बच्चे ने बाल को जोर से मारा. बाल लुढ़कते हुए खंडहर के पास आ गयी. बिल्ली के दिमाग में एक युक्ति आयी. उसने कुत्ते से नजर बचाकर बाल को मुँह में दबा लिया. दीवार पर चढ़ कर कुत्ते के पास गिरा दिया. कुत्ता कुछ समझ नहीं पाया. बच्चों ने बिल्ली को बाल पकड़ते हुए देख लिया. वे बैठ लेकर खंडहर की ओर दौड़ कर आये. झाँककर देखा. बिल्ली नहीं दिखी. कुत्ता दिखा. कुत्ते की समझ में कुछ नहीं आया. बच्चों को देख कर वह भौंकने लगा. बच्चों को तो अपनी बाल लेनी थी. बच्चे कुत्ते पर टूट पड़े. दे दनादन. कुत्ता अपने प्राण बचाने के लिए कैँ...कैँ...करते हुए वहाँ से दुम दबा कर भागा. बच्चे अपनी बाल लेकर चले गये. बिल्ली व उसके बच्चे दीवार पर बैठे सारा दृश्य देख रहे थे. वे बहुत खुश थे.

बिल्ली की सूझबूझ काम आयी. उस दिन के बाद कुत्ते ने खंडहर की ओर मुड़कर नहीं देखा. बिल्ली अपने बच्चों के साथ खंडहर में चैन से रहने लगी.

बेसुध राहगीर

रचनाकार- यशवंत कुमार चौधरी



एक दिन की बात है, एक आदमी सुबह टहलने निकला. रास्ते में उसने देखा कि सड़क के किनारे पेड़ के नीचे कोई गिरा हुआ है. पास जाकर देखा तो वहाँ एक थकी- हारी वृद्ध महिला बेसुध पड़ी थी. महिला की दशा देखकर आदमी के मन में दया-करुणा आई. उसने महिला के समीप जाकर उसे हिलाया डुलाया जिससे वह कुछ होश में आई. उस अनजान महिला को पास के अस्पताल ले गया जहाँ उपस्थित नर्स ने उसकी जाँच की और बताया कि यह महिला भूख प्यास के कारण बेहोश हो गई है। कुछ देर बाद उस महिला को होश आया और वह पूछने लगी कि मैं यहाँ कैसे? कौन मुझे यहाँ लाया? मेरा सारा सामान कहाँ है?

उस भले आदमी का घर अस्पताल के निकट ही था. वह खाने- पीने का कुछ सामान एवं फल घर से ले आया और महिला को खाने को दिया.

वह महिला जल्दी-जल्दी खाने लगी और उसके बाद उसने राहत महसूस की. वह कृतज्ञता प्रकट कर रही थी. बाद में समझ आया कि वह गूँगी थी और दूर से आ रही थी उसको आगे कहीं जाना था पर अनजान होने के कारण लोग उसकी सहायता नहीं कर रहे थे. रास्ते में उसे कुछ खाने को नहीं मिला जिससे वह भूख से बेहोश होकर बेसुध पड़ी थी.

यात्रा

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू"



छन्न पकैया छन्न पकैया, यात्रा करने जाते.
मिलकर सारे बच्चे बूढ़े, खुलकर के मुस्काते.

छन्न पकैया छन्न पकैया, मन्दिर दर्शन पाते.
मनोकामना पूरी होती, भर कर खुशियाँ लाते.

छन्न पकैया छन्न पकैया, यात्रा सफल बनाते.
माँ के दर पर जा कर सारे, झोली को फैलाते.

छन्न पकैया छन्न पकैया, है जीवन की यात्रा.
गिनती की साँसें हैं चलतीं, होती इसकी मात्रा.

छन्न पकैया छन्न पकैया, फँसते हैं सब माया.
यात्रा कर लो मन से साथी, माटी होती काया.

जागो देश के युवाओं

रचनाकार- मनोज कुमार पाटनवार



जागो देश के युवाओं
माँ भारती तुम्हें जगाती है.
लक्ष्य पाने बढ़ चलो
राह तुम्हें दिखाती है.
दुष्प्रवृत्तियों से दूर रहो
जन-जन को संदेश सुनाना है.
संस्कृति, कला, विज्ञान में
देश को आगे बढ़ाना है.

उन्नति के पथ पर देश को
शिखरों तक पहुँचाना है.
खेल, कला, विज्ञान में
सबको परचम लहराना है.
कर्तव्य पथ पर चलकर
हिंद को विश्व गुरु बनाना है.
जागो देश के युवाओं
माँ भारती तुम्हें जगाती है.

सत्य, कर्म, ज्ञान से
खुद को समृद्ध बनाना है.
राग-द्वेष को छोड़कर
सबको गले लगाना है.

बुरी नजर डाले जो हिंद पर
उन्हें सबक सिखाना है.
जागो देश के युवाओं
माँ भारती तुम्हें जगाती है.

वसंत

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र



मनमोहक वसंत आया है,
फूल खिले हैं उपवन-उपवन.

नवल प्रकृति की सुषमा न्यारी,
महक रही है क्यारी-क्यारी.

बीत गई है ऋतु पतझड़ की,
बजे हवा की पायल छन-छन.

अमराई में कोकिल बोले,
कानों में मधुरस सा घोले.

रंगबिरंगी उड़ें तितलियाँ,
चंचल भौंरे करते गायन.

नन्हीं कलियाँ भी मुस्काएँ,
सदा सुहाने स्वप्न सजाएँ.

जाग उठी हैं नयी उमंगें,
मुदित हुआ आशामय जीवन.

हमारे बाबा

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र



हम बच्चों के प्यारे बाबा,
बस्ती भर में न्यारे बाबा.

हमको प्रातः काल जगाते,
उठ जाते भिनसारे बाबा.

भारतीयता के गुण गाते ,
धोती-कुर्ता धारे बाबा.

अपने काम स्वयं करते हैं,
किसी के नहीं सहारे बाबा.

सब नन्हें-मुन्नों की टोली,
प्रेम से उन्हें पुकारे बाबा.

हर पल ध्यान सभी का रखते,
घर भर के उजियारे बाबा.

सच्चाई, अनुशासन प्रिय हैं,
हैं आदर्श हमारे बाबा.

कैसी भी आए कठिनाई,
कभी न हिम्मत हारे बाबा.

पौध लगाते, पानी देते
हरियाली के तारे बाबा.

साफ-सफाई, श्रेष्ठ दवाई,
खूब लगाते नारे बाबा.

भारतीय नववर्ष

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र



ईस्वी सन नववर्ष भुलाएँ,
भारतीय नववर्ष मनाएँ

अँग्रेजी का नया वर्ष तो,
प्रथम जनवरी से है चलता

भीषण ठंड शीतलहरी में,
अर्धरात्रि में उत्सव खलता

अँग्रेजों की पराधीनता,
आओ हम मन से ठुकराएँ.

मार्च-अप्रैल नवरात्र से,
नव संवत् का शुभारंभ है.

यह भारतीय कालगणना है,
वैज्ञानिक है, नहीं दंभ है.

वासंती मौसम होता है,
साथ प्रकृति के हम मुस्काएँ.

रक्षाबंधन, विजयादशमी,
संवत् के अनुसार मनाते.

गृह प्रवेश, मंगल विवाह भी,
शुभ मुहूर्त में ही हैं भाते.

राशि, लग्न, दिन, ग्रह, नक्षत्र से,
हम जीवन की चाल मिलाएँ.

जन्माष्टमी, रामनवमी हो,
एकादशी, पूर्णमासी.

व्रत - त्योहारों की संस्कृति से
जुड़े हुए भारतवासी.

ईस्वी सन से बहुत पुरानी,
निज गौरव गाथा दोहराएँ.

सूर्य-चंद्रमा की गति से है,
संवत्सर गणना संबद्ध.

बारहमास व्यवस्था रहती,
ग्रह-नक्षत्रों से आबद्ध.

भारतीयता के रंग में ही,
अपने सुंदर स्वप्न सजाएँ.

चलो मातृ पितृ पूजन दिवस मनाएं

रचनाकार- मनोज कुमार पाटनवार



आओ भारतीय सभ्यता को अपनाएं,
संस्कार और संस्कृति मन में बसाएं.

चलो मातृ-पितृ पूजन दिवस मनाएं,
पाश्चात्य सभ्यता से दूरी बनाएं.

वैलेंटाइन डे से ज्यादा,
माता-पिता का मान बढ़ाएं.

जिसने हमको जन्म दिया,
चलो उसका कर्ज चुकाएं.

जिसने हमें संस्कार दिया,
पैरों में उनके शीश झुकाएं.

आओ भारतीय सभ्यता को अपनाएं,
संस्कार और संस्कृति मन में बसाएं.

चलो मातृ पितृ पूजन दिवस मनाएं,
पाश्चात्य सभ्यता से दूरी बनाएं.

हाय हेलो से अच्छा साष्टांग हो जाएं,
माता-पिता का आज्ञाकारी बने.

जिसने सब सुख का त्याग किया,
माता-पिता के कार्यों में हाथ बटाएं.

जितना हो सके सुख पहुंचाएं,
आंख से अश्रु ना बहने पाएं.

चलो मातृ-पितृ पूजन दिवस मनाएं.
चलो मातृ-पितृ पूजन दिवस मनाएं.

कोरोना की तीसरी लहर

रचनाकार- खुशी नैनवानी



अचानक से इस दुनिया में कोरोना एक वायरस आया और पूरी दुनिया में तालाबंदी हो गई और पूरी दुनिया सिमट सी गई.

सभी लोग अपने अपने घरों में बंद हो गए, लोगों का आपस में मिलना जुलना बंद हो गया. कई लोग अन्य जगहों पर अपने परिवारों से अलग हो गए. बहुत से लोगों की नौकरियां चली गई, काम धंधे खत्म हो गए. मजदूर खाने-पीने के लिए तरस रहे थे और अपने घरों की ओर वापसी किए. जो स्थिति बहुत ही दयनीय थी. बच्चे भूख से बिलख रहे थे और बहुत सारे एनजीओ एवं लोगों ने उनके लिए भोजन, आने-जाने की व्यवस्था की जो कि आपसी भाईचारे का बहुत अच्छा उदाहरण था.

कोरोना के कारण लोग अपने चेहरे पर मास्क लगाकर रहते हैं. कहीं तो हम मनुष्यों ने गलतियां की है जिसके परिणाम स्वरूप आज चेहरे पर मास्क लगाकर हम को एक दूसरे से मिलना पड़ रहा है. मनुष्य ने प्रकृति का अंधाधुंध दोहन किया है प्रकृति के नियमों के खिलाफ जाकर कार्य किये हैं जिसके कारण यह स्थिति उत्पन्न हो गई है इसलिए हमें जल बचाना चाहिए, वनों की रक्षा करनी चाहिए, ऊर्जा संरक्षण करना चाहिए, प्रदूषण नहीं फैलाना चाहिए. कोरोना की तीसरी लहर आ गई है एवं सभी देशों ने टीकाकरण शुरू कर दिया है और बहुत सारे लोगों ने टीके लगवा लिये हैं. फिर भी वायरस ने लोगों को संक्रमित करना शुरू कर दिया है. इसलिए मास्क लगाइए. आपस में दूरी बनाकर एक दूसरे से बातचीत करें. घर पर रहें सुरक्षित रहें.

मकर संक्रांति और मेला

रचनाकार- ऋषि प्रधान

मकर संक्रांति और पतंगों का रेला.
कितना मनभावन वो तिल लड्डू का ठेला.

छत में हम सब होते हैं, उड़ाते हैं पतंग.
क्या सफेद क्या लाल और कई रंग.

मोनू भी होता, गोलू भी होता.
हम भी हैं होते अपने भाई-बहनों के संग.

माँ बनाती है लड्डू, पेड़े और मिठाई.
हम सब मिल बाँटकर खाते हैं भाई.

त्योहारों की शुरुआत है होती,
पावन पर्व होता है मकर संक्रांति.

मकर में लगता है कई जगहों पर मेला.
रात में जगराता और सुबह अलबेला.

हम सब जाते हैं सुबह पुण्य नदी में नहाने,
मिलते हैं सभी दोस्तों से हम इसी बहाने.

कहीं पे लोहड़ी, कहीं पे बीहू, कहीं पे कहते उत्तरायण हैं.
मकर संक्रांति का ये मेला पावन सा रामायण है.



जल

रचनाकार- सीमा यादव



जल है तो सब सार हैं,
जल नहीं तो सब बेकार हैं.

जल है तो जहाँ में जीवन है,
जल नहीं तो हर जगह मरण है.

जल ही है सबके जीवन का आधार,
यही है मानव जीवन का मूलाधार.

माँ मुझको पंख लगा दे

रचनाकार- जीवन चन्द्राकर "लाल"

हे माँ, मुझको पंख लगा दे,
मैं अम्बर तक जाऊंगा.

ऊँचे-ऊँचे पर्वत को भी,
अपने नीचे पाऊंगा.

वहां पर जितने भी तारे हैं,
सबको चुन-चुन लाऊंगा.

हर घर को कर दूंगा जगमग,
गलियों को भी चमकाऊंगा.

फिर न रहेगी कोई सीमा,
देश विदेश घूम आऊंगा.

अवारा घूमते बादल को,
धरती की राह दिखाऊंगा.

हे माँ मुझको पंख लगा दे,
मैं अम्बर तक जाऊंगा.



अच्छा लगता खेल

रचनाकार- वेद उत्कर्ष चन्द्राकर

मुझको अच्छा लगता खेल,
मित्रों से होता है, मेल.

मुझको अच्छा लगता खेल,
हाथ मिला लेते कतार से,
बन जाते हैं, छुक-छुक रेल.

मुझको अच्छा लगता खेल,
कभी खेलते चोर पुलिस हम,
कमरा बन जाता फिर जेल.

मुझको अच्छा लगता खेल,
कभी खेलते हैं, क्रिकेट हम,
बनकर कोहली और कृष गेल.

मुझको अच्छा लगता खेल,
नहीं हम रखते बैर किसी से,
न करते हम पेल-धकेल.

मुझको अच्छा लगता खेल,
मित्रों से होता है, मेल.



कोरोना

रचनाकार- जिज्ञासा वर्मा



कोरोना से सब डरो ना,
कोरोना से सब बचो ना.

घर में सुरक्षित रहो ना,
सब गाइडलाइन पर चलो ना.

मास्क पहनकर निकलो ना,
भीड़-भाड़ से बचो ना.

सैनिटाइजर का प्रयोग करो ना,
बार-बार हाथ को धोते रहो ना.

कोरोना जिसे हुआ उससे पूछो ना,
घर पर क्या बीती उनसे जानो ना.

एक दिन कोरोना खत्म होगा ना,
जल्दी से वैक्सीन लगवा लो ना.

शादी पार्टी समारोह को टालो ना,
किसी से हाथ मिलाओ ना.

दूर से ही हाय हेलो बोलो ना,
सुबह बाहर टहलना छोड़ो ना.

घर पर योग व्यायाम करो ना,
जुड़े मानव श्रृंखला को तोड़ो ना.

ऑक्सीजन की कमी को समझो ना,
पेड़-पौधे अधिक लगाओ ना.

सर्दी, खांसी, बुखार को छुपाओ ना,
जांच के लिए डॉक्टर के पास जाओ ना.

उसने सीख लिया

रचनाकार- डॉ. सतीश चन्द्र भगत



नन्हा कमलू पढ़ने- लिखने में कमजोर था. वह पढ़ने से दूर भागता था. उसकी आँखें खराब हो गई थी. उसे धुंधला- धुंधला दिखता था. इसलिए कमलू के साथ कोई खेलना भी पसंद नहीं करता था. जब सभी छुपा- छुप्पी खेलते थे तो कमलू किसी को पकड़ भी नहीं पाता था. क्योंकि सब दौड़कर इधर- उधर छुप जाते थे. परन्तु, कमलू को दिखने में कठिनाई होती थी. वह कहीं गिर न पड़े. उसे चोट न लग जाए. ऐसा सोचकर वह धीरे- धीरे आगे बढ़ता था.

एक दिन वह हिम्मत कर घूमने निकला था. उसका मन उदास था. क्योंकि कोई उसके साथ नहीं था.

रास्ते में कुछ लोग उसे मिला. लेकिन केवल उससे कुछ बोल कर आगे निकल जाता था. थक- हार कर कमलू एक बगीचे के निकट रुक गया. बहुत सी चिड़िया उड़- उड़ कर चीं- चीं, चूं- चूं कर रही थी. फूल खिले हुए सुन्दर दिखने लगा कमलू को. उसके पास जाकर ज्योंही वह फूल तोड़ने के लिए अपना हाथ बढ़ाया था. फूल के कांटें चूभ गए. कमलू रोने लगा. उसे रोते हुए देखकर एक विकलांग लड़का उसके पास आया. उसने कमलू को ढाढ़स बंधाया. मत रोओ!

चुप हो जाओ. कमलू ने वह तो विकलांग है. परन्तु, होठों पर मुस्कान है. वह लड़का बहुत खूबसूरत भी था. कमलू ने पूछा- "तुम्हारा नाम क्या है."

उसने बताया- "मेरा नाम हर्षित है. मैं पढ़ता हूँ. लेकिन दौड़ नहीं पाता हूँ."

कमलू ने कहा- "मेरी आँखें कमजोर हैं. धुंधला- धुंधला दिखाई पड़ता है. इसलिए मेरे साथ कोई नहीं खेलता है. पढ़ने में भी कमजोर हूँ."

हर्षित ने कहा- "मैं तुम्हें पढ़ना सीखा सकता हूँ. और तुम्हारे साथ खेल भी सकता हूँ."

कमलू और हर्षित एक- दूसरे की बात सुनकर एकाएक खिल-खिलाकर हंस पड़े.

अब दोनों एक साथ पढ़ने लगे थे. साथ- साथ खेलने लगे थे. दोनों कुछ गीत गुनगुनाने लगे थे.

कमलू भी पढ़ना सीख लिया. अब कमलू भी हर्षित के साथ रहकर पढ़ने में बहुत तेज गया था. कभी- कभी दोनों छुपा- छुप्पी खेलने के लिए बगीचे में भी जाता और मन बहलाया करता था. अब कमलू भी खुश रहने लगा था. उदासी उसके चेहरे पर से मिटने लगा था. उसने सीख लिया हर्षित से हंसना.

फूलों सा मुस्काना

रचनाकार- डॉ. सतीश चन्द्र भगत



थककर बैठ नहीं जाना है
मिलकर कदम बढ़ाना है.
जो हैं लक्ष्य हमारे उसको
पाकर ही मुस्काना है.

बीता समय कहाँ आता है
साथ समय के चलना है.
छट जाएंगे तम के बादल
सूरज बन निकलना है.

बहती नदियाँ हमसे कहती
सबकी प्यास बुझाना है.
नई रौशनी खुशहाली की
घर- घर में फैलाना है.

बाधाओं से डरना क्या है
आगे कदम बढ़ाना है.
कांटों में खिलते गुलाब हैं
फूलों- सा मुस्काना है.

चित्र देख कर कहानी लिखो

पिछले अंक में हमने आपको यह चित्र देख कर कहानी लिखने दी थी –



हमें जो कहानियाँ प्राप्त हुई हम नीचे प्रदर्शित कर रहे हैं

मनोज कुमार पाटनवार द्वारा भेजी गई कहानी

शेर और चूहे की दोस्ती

एक समय की बात है. जंगल का राजा शेर पेड़ के नीचे गहरी नींद में सोया हुआ था. तभी वहाँ एक चूहा आया और उसके पास उछल-कूद करने लगा. चूहा कभी शेर की पीठ पर उछलता तो कभी उसकी पूँछ को खींचता. चूहे की इस उछल-कूद के कारण शेर की नींद खुल गयी और उसने अपने पंजों में चूहे को पकड़ लिया.

शेर ने गुस्से में कहा – “मूर्ख चूहे! तेरी हिम्मत कैसे हुई मुझे नींद से जगाने की? अब मैं तुझे इसकी सज़ा देता हूँ. मैं तुझे अभी चबा जाऊँगा.”

यह सुनकर चूहा डर के मारे कांपने लगा और शेर से कहने लगा – “नहीं नहीं ऐसा मत करो महाराज! मुझे मत खाओ, मुझसे गलती हो गई. वैसे भी मैं तो बहुत छोटा हूँ जिससे आपकी भूख भी नहीं मिटेगी. मुझपर दया करो महाराज शायद किसी दिन मैं आपकी कोई मदद कर सकूँ.

शेर ने सोचा कि इतना छोटा सा चूहा मेरी क्या मदद कर पायेगा लेकिन फिर भी शेर को उस पर दया आ गई और उसने चूहे को छोड़ दिया.

कुछ दिनों बाद शेर एक शिकारी के जाल में फँस गया. उसने जाल से निकलने के लिए बहुत प्रयास किया लेकिन वो जाल से निकल नहीं सका.

थक हार कर शेर जोर-जोर से दबाने लगा. शेर की दहाड़ जंगल में दूर-दूर तक सुनाई देने लगी. शेर की दहाड़ उस चूहे ने भी सुनी, उसने सोचा कि शायद जंगल का राजा किसी मुसीबत में है.

चूहा शेर के पास गया तो उसने देखा कि शेर तो सचमुच मुसीबत में है. उसने शेर से कहा- महाराज आप बिलकुल चिंता न करें. मैं अभी इस जाल को अपने दांतों से काटकर आपको आज़ाद करता हूँ.

थोड़ी ही देर में चूहे ने जाल को अपने पैने दांतों से काटकर शेर को आज़ाद करा लिया. शेर बड़ा खुश हुआ और उसने चूहे से कहा – “दोस्त मैं तुम्हारा ये अहसान कभी नहीं भूलूँगा, तुमने आज मेरी जान बचाई है.

चूहे ने कहा कि नहीं महाराज एहसान तो उस दिन आपने मेरी जान बख्शकर मुझपे किया था. यदि आप उस दिन मुझपर दया नहीं दिखाते तो आज मैं आपकी मदद नहीं कर पाता.

चूहे की बात सुनकर शेर मुस्कुराया और कहा – “आज से तुम मेरे सच्चे मित्र हो.”

योगेश्वरी तम्बोली द्वारा भेजी गई कहानी

शेर और चूहा

जंगल के बीच एक पेड़ था उस पेड़ के नीचे शेर और चूहा आराम करते हुए बातचीत कर रहे थे कि चलो आज हम अपनी जीत की खुशी में पार्टी करते हैं. बात यह थी कि एक बार जब शेर के पंजे के नीचे चूहा दब गया था तो चूहे ने कहा मुझे छोड़ दो मैं आवश्यकता पड़ने पर तुम्हारी मदद करूँगा. चूहे की बात मानकर शेर ने उसे छोड़ दिया था. और कहा था कि तुम मेरी क्या मदद करोगे? लेकिन आज जब एक शिकारी ने शेर को जाल में कैद कर लिया, तब उसी चूहे ने जाल काटकर शेर को मुक्त करा दिया.

अब दोनों पेड़ के नीचे बैठकर अपनी जीत की खुशी मना रहे थे. वे सोच रहे थे क्यों न आज पार्टी की जाए. शेर बोला खाने की चीजें कौन लाएगा मुझे तो लोग देख कर डर जाते हैं मैं सामान कैसे लाऊँगा. चूहा बोला इसकी चिंता आप मत करो मैं जाकर खाने की चीजें लाता हूँ. शेर खुश हो गया और बोला ठीक है. चूहा चला गया और शेर चूहे का इंतजार करने लगा.

थोड़ी देर बाद चूहा ब्रेड और पिज्जा लेकर आया. दोनों मिलकर खाने लगे. इस तरह शेर और चूहे की दोस्ती भी पक्की हो गई.

संतोष कुमार कौशिक द्वारा भेजी गई कहानी

शेर और चूहे की दोस्ती

पेड़ के नीचे बिल में एक चूहा रहता था. उसी पेड़ के नीचे शेर भी आराम करता था. शेर और चूहा अच्छे दोस्त बन गए. शेर, शिकार करने के पश्चात आता तो चूहे के लिए भी खाने को कुछ लाता था. चूहा, शेर के पीठ पर उछल, कूद करते हुए धमाचौकड़ी मचाता था. शेर भी उसकी इन हरकतों पर खुश हो जाता था. कुछ दिन पहले शिकारी के जाल में फँसे हुए शेर को चूहे ने बचाया था. जिसके कारण दोनों में गहरी दोस्ती थी.

इनकी दोस्ती देखकर लोमड़ी को ईर्ष्या होने लगी. दोनों की गहरी दोस्ती को तोड़ने के लिए लोमड़ी ने एक उपाय सोचा.

एक दिन शिकार करने जा रहे शेर से लोमड़ी ने कहा- शेर राजा!आपके पीठ पर चूहे को उछल-कूद करते देखकर मुझे अच्छा नहीं लगा, क्योंकि छोटा सा चूहा जंगल के राजा के पीठ पर उछल-कूद करे, इससे आपके मान- सम्मान पर बुरा असर पड़ेगा. जंगल के पशु-पक्षी,जीव-जंतु आप से नहीं डरेंगे. शेर इन बातों को सुनकर सोचने लगा कि,बात तो ठीक ही है. लेकिन उसने लोमड़ी से कहा- अपनी सलाह अपने पास रखो. शेर को आगे जाते देखकर, फिर लोमड़ी ने उससे कहा- "एकान्त में मेरी बात पर चिंतन करिएगा."

अब शेर को लोमड़ी की कही हुई बात बार-बार परेशान करने लगी. उसका मन शिकार में नहीं लगा और वह वापस उस पेड़ के पास आ गया.

चूहा रोज की तरह आज भी उसकी पीठ पर उछल-कूद करने लगा. शेर ने क्रोधित होकर उसे उठाकर दूर फेंक दिया और कहा- मेरी नजरों से दूर हो जाओ.

चूहा पुनः उसके पास आकर हाथ जोड़कर बोला आज आप को क्या हो गया है? आज आपके व्यवहार में बदलाव आ गया है. जरूर उस लोमड़ी की हरकत होगी, उसी ने आपसे कुछ कहा होगा. ठीक है- मैं चला जाता हूँ.

चूहा दूसरे पेड़ के नीचे बिल बनाकर रहने लगा. लोमड़ी को उन दोनों की दोस्ती टूटने पर खुशी हुई.

कुछ दिनों पश्चात एक शिकारी, चूहे के बिल के पास खड़ा होकर शेर का शिकार करने की योजना बना रहा था. शिकारी को शेर पर निशाना लगाते देख चूहा सोचने लगा आज मेरे दोस्त शेर को यह शिकारी मार देगा. मुझे कुछ करना चाहिए. यह सोच कर जब शिकारी बाण छोड़ने ही वाला था तभी चूहे ने शिकारी के पैर पर जोर से काट लिया. शिकारी का निशाना चूक गया और लोमड़ी को वह बाण लगा. शेर हमला न कर दे, यह सोचकर शिकारी डरकर भाग गया.

शेर और चूहा उस लोमड़ी के पास जाकर उसे बचाने की कोशिश करने लगे. लेकिन उसके सीने पर बाण लगने के कारण बचने की संभावना नहीं थी. लोमड़ी ने कराहते हुए कहा कि आप दोनों मुझे क्षमा कर दीजिए. मेरे कारण आप दोनों की मित्रता में दरार आई. इसी पाप के कारण मेरा यह हाल हुआ है. कोई किसी का अहित करता है, उसका फल उसके किए हुए कर्मों के अनुसार अवश्य ही मिलता है. यह कह कर लोमड़ी ने प्राण त्याग दिए.

शेर को अपनी गलती का एहसास हो गया और चूहे से क्षमा माँगते हुए कहा - मेरे दोस्त तुमने एक बार फिर मेरी जान बचाई है. आज से हमारी दोस्ती अटूट रहेगी.

अगले अंक की कहानी हेतु चित्र



अब आप दिए गये चित्र को देखकर कल्पना कीजिए और कहानी लिख कर हमें यूनिकोड फॉण्ट में टंकित कर ई मेल kilolmagazine@gmail.com पर अगले माह की 15 तारीख तक भेज दें. आपके द्वारा भेजी गयी कहानियों को हम किलोल के अगले अंक में प्रकाशित करेंगे

भाखा जनऊला

रचनाकार- दीपक कंवर

1 न	2			3			4 ख		5
			6 क			7			
8 अ								9	
					10 क				
11		12 ख						13	
				14 ल					15 र
		16 ख							
							17 छे		
18 स				19					
			20 जू				21		

बाएँ से दाएँ

- गायब, नदारत
- खपरैल 6. कान का मैल
- अजीब 9. ढंक
- चाँवल का बहुत छोटा टुकड़ा 11. अचानक
- जल्दी-जल्दी
- ओखली 18. सड़ा
- वनक्षेत्र
- जूं 21. खाली

पिछले भाखा जनऊला के उत्तर

1 तो	2 त	रा	हा		3 ख		4 बाँ		5 झा
	र				रा		6 को	7 प	र
	8 मु	च	9 मु	चा	य			र	
10 गु	इ		इ				11 बि	सा	12 व
13 ख	वा		14 स	वं	15 के	र	हा		इ
रु		16 पै	री		रा		ता		स
	17 चु	री	या	18 ही				19 झा	न
20 घा	ल			21 र	जु	ति	या		
22 म	मा			वा		हा		23 ला	ग
	24 टी	क	रा		25 क	र	ल	ई	

ऊपर से नीचे

- फिसल 3. लाओ, ला
- थप्पड़ 7. पीठ के बल
- आश्चर्यजनक
- एक बड़ा टिड्डा का नाम 12. खुरदुरा 13. सर के बाल पाये जाने वाला कीट
- बातुनी 15. रथ- यात्रा
- नवजात शिशु को जन्म दी हो 18. हम जाति, एक ही जाति वर्ग के



अपनी **किलोल** की
सदस्यता जारी रखने हेतु
सबरिक्प्रेशन लेना न भूलें

किलोल की जानकारी

- बच्चों के पठन कौशल एवं पढ़ने की रुचि विकसित करने हेतु विगत चार वर्षों से बाल-पत्रिका किलोल का ऑनलाइन प्रकाशन किया जा रहा है।
- किलोल को प्रकाशित करने का उद्देश्य शिक्षकों के रचनात्मक कौशल एवं लेखन को प्रदर्शित करना भी है।
- विगत एक वर्ष से किलोल की मुद्रित प्रति भी प्रकाशित की जा रही है जिसका उपयोग आप स्वयं के लिए, अपने बच्चों के लिए एवं कक्षा के विद्यार्थियों के लिए भी नियमित रूप से कर सकते हैं।

किलोल पाने हेतु

वार्षिक सदस्यता (शुल्क 720रु.)

आजीवन सदस्यता (शुल्क 10000रु.)

आप अपनी सदस्यता सुनिश्चित करने हेतु सदस्यता शुल्क Wings2Fly Society के बैंक ऑफ़ बड़ोदाशाखा विधानसभा रोड़ मोवा, रायपुर खाता क्र. 45730100004644 आई.एफ़.एस.सी कोड BARBOMOWAXX(0 is zero others are 'O' in IFSC CODE) में जमा करावें।

राशि जमा करवाने के पश्चात www.kilol.co.in में पंजीयन कर अपना विवरण भर दें। पिनकोड सहित अपना पता एवं अन्य विवरण ताराचंद जायसवाल जी को 9926118757 पर व्हाट्सएप पर भी भेज दें।